॥ ॐ ॥

॥ श्री हरिहरशरणम् ॥

श्री हरिहर भक्ति रसामृत गीत

मक्ति रस की उत्तम रचना

पूर्वार्द्ध

श्री राम कृष्ण रति दाता आरती माला

उत्तरार्द्ध



मानस व्याधि निवारण हारी, हरिहर-रस अमृत पिअ-प्यारी।
कलिमल नाशक अघ दुख-तारी, राम नाम पर-नित- बलिहारी॥

श्री हरिहरानन्द सरस्वती करपात्री महाभागाना प्रदत्त भागवताचार्य पदवी विभूषितेन प० श्री रामलाल शर्मणा सुतेन श्री बीकानेर नरेश राजा गंगासिंह जी राज्यान्तगत रतननगर (चरू) निवासिना वैद्य हरिप्रसादेन निर्मिता।

सेय

आचार्य कृष्णदत्त शर्मा रमेशचन्द्रेण

सम्पादिता

विक्रम सम्वत
2011

मूल्य
लागत मात्र न्यौछावर

प्रकाशक
आचार्य वैद्य कृष्णदत्त शर्मा, रमेशचन्द्र शर्मा
(एम ए)

प्रथम सस्करण 2000 वि स 2039

पुस्तक प्राप्ति स्थान—
वैद्य हरिप्रसाद शर्मा
नोहरा न 8, निकट पचायती धर्मशाला,
श्रीगगानगर (राजस्थान)

श्री बालकृष्ण इन्दोरिया
गढ के पीछे चूरू (राजस्थान)

श्री प मोहनलाल वासुदेव शर्मा चौमाल"
निकट काली मन्दिर, चूरू (राजस्थान)

श्री प घनश्याम जी मिश्र शास्त्री
रतननगर, (चूरु) राजस्थान

मुद्रक—
गजेन्द्र प्रिटस
प। रास्ता किशनपोल बाजार,

॥ श्री परमात्मने नम ॥



अखिल लोकपति के पावन चरणो में नत मस्तक सविनय

"समर्पण"

विश्वपति कमलापति जगपति, सप्त लोक पति परमेश्वर ।
दीन बधु अन्तर्यामी, जगदीश्वर ईश्वर लोकेश्वर ॥
वैकुण्ठाधिपति नारायण, विष्णु श्री पति विबुधेश्वर ।
गरुडध्वज लोको के पालक, अन्नादक दाता विश्वेश्वर ॥
तव पद कमल निछावर हो, मै नित नित जाता बलिहारी ।
फूल समर्पित स्वामी ये, शब्दालकृत हे भय हारी ॥
प्रेम सुगध हृदय मन रजित विकसित कलिया गिरधारी ।
बुद्धि सूत्र म पोकर के नत मस्तक पद हो गलहारी ॥
मुदचित लोकपिता ! स्वीकृत कर चरण कमल शिर रख देना ।
भवसागर की नौका के बन नाविक प्रभु फिर तुम खेना ॥
जो नारी नर गावें उनकी, सब विघ्न बाधा हर लेना ।
काम नाभ दु ख आधि व्याधि, दारिद की पराजय हो सेना ॥
तेरी वस्तु तुझे अपण कर, होता हर्ष अपार प्रभु ।
मै भी तेरे रोम खण्ड का, अश खण्ड हू भार प्रभु ॥
गागुन सम्पदा से ऊ चा सुख, शान्ति मिली अर सार प्रभु ।
"वद्य हरि" तव पद सरोजपर, नित जाता बलिहार प्रभु ॥

ईश्वर प्रभु परमात्मा परमपिता लोकेश्वर
जगदीश्वर अखिल कल्याणकारी क
पावन चरणा म नत मस्तक
समर्पित सुमन

—चरण रज नत मस्तक वैद्य हरिप्रसाद शर्मा

※ श्री हरिहरशरणम् ※

सविनय नम्र निवेदन,

यह हरिहर भक्ति रसामृत गीत लिखकर विश्वेश्वरी विश्वेश्वर के पाद पद्मों मे समर्पित करके परम सतोष और आनन्द का अनुभव करता हू । जनता जनार्दन भी परमेश्वर का विराट रूप हैं, जनता भी कभी खाली समय मे इसे पढेगी सुनेगी तो भगवान विराट उन पर प्रसन्न होगें । इस पुस्तक के लिखने से लेकर छपाने तक मुझे आरोग्यता धन सतोष तथा ईच्छित फलो की प्राप्ति हुई तथा पढने से आपको भी होगी एसा ईश चरणो मे विनती करते हुए मुझे पूर्ण विश्वास है । आप अशान्त समय मे पढकर शान्ति को प्राप्त करेंगे । कवि न होते हए भी भगवान का गुणानुवाद कविता मे लिखा गया ग्राह्य एव क्षन्तव्य होगा । गुणगाथा श्रीमद्भागवत गीता-महाभारत तुलसीकृत रामायण तथा कुछ अनुभव के आधार पर भी लिखी गई शास्त्र सम्मत है ।

सूर साहित्य, तुलसी साहित्य मे यह कविता सूर्य के सामने दीपक दिखाने के समान है परन्तु कभी कभी दीपक की भी जरूरत रहती है । ऐसा समझ के सतोषानन्द का अनुभव करता हू । जैसे सूर्य चन्द्रमा शुभ अशुभ अवस्थाओ मे एक रस रहते है वैसे हो यह गुणावली रहेगा । जैसे गाय बन मे हरी हरी घास चरते हुए आगे बढती है वैसे हो मानव भी नये नये रसो मे रुचि रखता हुआ इस पढेगा तो मै अपने को धन्य समझूगा । जब वैद्य, डाक्टर मित्र, सुत, पत्नी सभी प्रिय बन्धु ईच्छा रहते हुए भी सभी कष्ट को बटाने मे असमर्थ हैं ऐसी स्थिति मे परमेश्वरी परमेश्वर ही शरणागत की रक्षा करने मे समर्थ हैं ऐसा सोच के मोह छोडकर ईश शरण ही ग्रहण करनी चाहिए । वे ही सबसे बडा सहारा देते है । क्योकि भगवद्गीता मे कहा है हे मनुष्य तेरा काम करने मे अधिकार है फल मे नही है । ऐसा सोचके आप आरोग्यवस्था में इसे पढेगें, सुनेंगे आपको धोखा व पछतावा नही होगा, ऐसी मेरी त्रलोक्यपति से प्रार्थना है ।

विनीत

आषाढ वदी 11 वि म 2039 — वैद्य हरिप्रसाद शर्मा



—: पुस्तक भेट 'दान' महिमा :—

परमेश्वर सर्वव्यापक सब मे समाया हुआ है। अत जो सच्चा दान देना चाहता है वह इस पुस्तक का भेंट दान करे। क्योंकि इससे प्रभु प्रसन्न होते है और उनके प्रेम प्रसन्नता स इस लोक और परलोक के सब कार्य पूर्ण हो जाते है।

विष्णु रमा शिव रामकृष्ण की,
महिमा वेदन गाई है।
नाम प्रभाव भागवत गाया,
कलियुग सदा सहाई है।
राम नाम गा तरी त्रिलोकी,
धर्म शास्त्र मे आई है।
हरि रसामृत गाथा पुस्तक,
दान महान् सचाई है।
बड़े बड़े मनु ऋषि मुनि आदिक,
नेति-नेति कह हारे हैं।
कलियुग केशव कीर्तन से,
मुद होते राम पियारे है।
सब उपाय कर हारे को हरि,
देते पूरण सहारे है।
रामकृष्ण भजु विश्वेश्वर को,
"हरि" जगत उजियारे है।

(श्री रामकृष्णार्पणमस्तु)

श्री हरिहर भक्ति रसामृत गीत पुस्तक दानदाता की

ईश चरण में प्रार्थना पुष्पाञ्जली

हे विश्वपिता ! हे विश्वमाता ! मैं भी विश्व मे आपके करोडो पुत्रों मे मे एक पुत्र हू । पुत्र का कर्तव्य कि माता पिता की समस्त सेवा करे । आपका नाम प्रेमभक्ति से लेने वाले पुत्र पर आप बहुत अनुराग रखते हुए बहुत ही प्रसन्न होते है आपका स्निग्ध अनुराग जन्म जन्मान्तर अक्षय रहे और इस नाम का आपके पुत्र पुत्रियो मे प्रसार हो तथा वे अपना कल्याण करें। मेरी यही कामना है कि आपका नाम लेने वाले तीनो तापो से मुक्त होकर समस्त सुख एवं ऐश्वर्य को प्राप्त हो। तथा आपके नाम मे महान् दृढ प्रेम हो।

हे अखिलेश्वर ! हे अखिलेश्वरी मैं तो केवल निमित्त मात्र हू जो कुछ है आप ही का है आप ही का था आप ही का रहेगा।

परमपिता परमेश्वर परमेश्वरी ! आप मेरे शीश पर सर्वदा वरदहस्त रखते हुए, प्रसन्न हो ऐसी आपके चरणो मे दण्डवत विनती है।

परमेश्वर आप ही का गीता मे लिखा हुआ आशीर्वाद है

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहंत्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमा शुच ॥

हे पुत्र सब धर्मों को छोड मेरी शरण मे आ मैं तुझे सब पापो से मुक्त कर दूंगा तुम कोई सोच मत करो।

विश्वेश्वरि–विश्वेश्वर

चरण कमल नतमस्तक

शान्ति शान्ति ! शुभ शान्तिभवतु शुभ भूयात्

समस्त देवताओ की नाम मंत्र से

पूजा विधि व सामग्री

ॐ गणपतये नम

ॐ गौर्यादिषोडशे मातृकाभ्यो नम

ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नम

ॐ अपांपति वरुणायनम

श्री राधाकृष्णाय नम

श्री लक्ष्मीनारायणाय नम

श्री हनुमते नम

श्री उमामहेश्वराभ्या नम

श्री सीतारामाभ्या नम

सबसे पहले आचमन और प्राणायाम करे। सकल्प करे यथा सम्भव स्वस्ति पुण्याह वाचन तथा शान्ति पाठ पढे यह विवाह पद्धति चतुर्थीलाल कृत मे पढे वेदोक्त है। उपरोक्त देवताओ की नाम मंत्र से पृथक् पृथक् षोडशोपचार सामग्री से पूजा करे। षोडशोपचार पूजा सामग्री पहले पृष्ठ मे लिख दी गई है। पश्चात् इसके रक्षा विधान करे। यह चतुर्थीलाल कृत विवाह पद्धति मे देखिए। रक्षा विधान मे पूर्व मे गोविन्द अग्निकोण में गरुडध्वज दक्षिण म वाराह नऋृत मे नारसिंह ऊपर नीचे आगे पीछे पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण विष्णु भगवान हमारी व सबकी रक्षा करे। सपप पर चावल छोडता जावे। फिर अपन तथा यजमान के रक्षा बाध तिलक करे। पहले देवताओ के रक्षा चढावे। फिर पुरोहित यजमान बधा वे और दक्षिणा भी देवे। यह विधान समस्त देवताओ की पूजा म पहले आता है करना चाहिए इससे कल्याण होता है। फिर आरती उतार कर देवताओ की प्रार्थना करे।

गणेश प्रार्थना

ॐ गजानन भूत गणादि सेवित कपित्थ जंबु फल चारु भक्षणम्।
उमासुत शोक विनाशकारक नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥

षोडशमातृका प्रार्थना

ॐ जयन्ती मगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गाक्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते॥

सूर्यादिन नवग्रह प्रार्थना

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानु शशी भूमि सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतव सर्वेग्रहा शान्ति करा भवन्तु॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



गणेश मंगलाचरणम्

ऋद्धि सिद्धि प्रदातार कष्ट विघ्न हर परम्
गणेश सर्गत पूर्ण दत्तचित्तो नमाम्यहम् ॥
नमामि विघ्न हर्तार मूषका रूढ शोभनम् ।
श्री गणेश सुखाराध्य नूपुर ध्वनि शोभितम् ॥
धूम्रवेतुगणाध्यक्ष गिरजा शकर प्रिय ।
सर्व मगल कार्येषु करोतु मगल सदा ॥

शिव स्तुति

भवानी शकरो वन्दे सर्व मगल दायकौ ।
राम कृष्णैक भावेन ध्यानारूढं सर्वथा शिव ॥

सरस्वती स्तुति

शुक्लाम्बर धरा वीणा बुद्धि सुदर दायिनीम् ।
राम कृष्ण रतिर्मे स्यात एवं भक्ति ददातु मे ॥

राम स्तुति

श्यामल मन्द हास्य च सीतया सह शोभितम् ।
राम गगन वर्ण च पाद पद्म नमाम्यहम् ॥

हनुमान स्तुति

मारुति बल बुद्धिच ददातु राम पादयो ।
त्वत् कृपाहि भवेन्नो का तारिणी भवसागरे ॥

सूर तुलसी महिमा

तुलसी सूर शब्देभ्य गहीत्वा सुमनाञ्जलीम ।
अर्पिता राम पादाभ्या मन सतोष कारिणीम् ॥

गुणग्राहा नर नारी प्रार्थना

गुण ग्राही भवन्नारी नरश्च प्रार्थना मम ।
हरि कृष्ण गुण ज्ञात्वा सर्वासा त्रुटिक्षम्यताम् ॥

विष्णु महिमा

रामस्य गुण गानेन कृष्ण भक्ति प्रजायते ।
कृष्ण राम शिर चित्त विष्णु भक्ति सदा दृढा ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥



धर्मसम्राट श्री स्वामी
करपात्री जी महाराज
संस्थापक
वेद शास्त्रानुसन्धान केन्द्र केदार-
घाट वाराणसी का

शुभाशीर्वाद

श्रीश पातु

श्री हरि प्रसाद वैश्य सादर शुभ कामना

आपका पत्र प्राप्त हुआ, मैंने आपकी पुस्तक के कतिपय पद्यों का अवलोकन करके श्री महाराज जी को बताया एवं दो चार पद्य भी सुनाये। जैसे—

जिसने हरि पद प्रेम पिया।

कलिमल नाशक पुण्य रूप फल अधिक तिन्होंने किया।
हरि गुण गा जाकी अमरध्वज फरकी जे जगत जिया ॥ 1 ॥
और हु तारे आप उधारे धन्य सुयश और पिया।
जग की लाज हरि हित छाडि सुत मित धन-धौ तिया ॥ 2 ॥
सब रखवारे ऋषि मुन्ह के तिन पद सिर रखिया।
प्रभु पद पंकज ध्यान पड़े जग झूठे से अधिया ॥ ३ ॥
लोक कीर्ति परलोक धर्म की अम्बुज राशि लिया।
"वैश हरि,, की हृदय मढ़ी में बसते रामसिया ॥ ४ ॥

इत्यादि श्रवण कर श्री महाराज जी गद्‌गद् हो गये और कहा कि, अत्यन्त अद्भुत है। अत: इसमें हमारा पूर्ण शुभाशीर्वाद है।

दिनांक २८ ११ ८१

श्री महाराज श्री प.
आज्ञा निरंजन

श्री हरि हर भक्ति रसामृत गीत की

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
पुस्तक नाम गुण	1
पुस्तक मिलने के पते	2
विश्वेश्वर समर्पण	3
विनम्र निवेदन	4
पुस्तक भेंट (दान) महिमा	5
भक्त प्रार्थना	6
देवताओं की पूजन विधि	7

मंगला चरण	1–2
गणपति प्रार्थना	2–4
सरस्वती प्रार्थना	5–6
निरूप शिवस्तुति	7
सरस्वती विनय	8
पार्वती विनय	9
हरि भजन गीत	10–13
हरि लक्ष्मी प्रार्थना	14–31
हरि भजन गीत दोहा	32–40
राम दोहावली	40
प्रभु विनय	41–47
राम सवैय्या	48
प्रभ ज्ञान इंद्रियबोध	48
रामकृष्ण विनय	49–57
राम राज्य शोभा	58–72

विषय	पृष्ठ संख्या
कृष्ण विनय प्रेम	73–103
राधा कृष्ण प्रार्थना	104–106
ब्रह्माविष्णु महेश्वर गीत	107
धन्वंतरि स्तुति	111–112
काली लक्ष्मी सरस्वती गीत	113-119
शिव पार्वती विनय	120
दुर्गा ज्योतिसार	120
सीता प्रार्थना	121
राधा प्रार्थना	122
गंगा माता गीत	123
तुलसी माता गीत	124
विश्व की अदभुतता	1_5
ज्ञान दोहावली	126–127
बुद्धिमती नारी महत्व	128
ज्ञान दोहावली	129
धन की ममता	130
ज्ञान दोहावली	131–134
मन विषयन प्रतिज्ञा है	135
जगमुख फाडे काल	135–137
काल प्रतिमा	138
ज्ञान दोहावली	139–140
अपूर्व दान	141
ज्ञान भजन गीत	142–[illegible]
[illegible]	
[illegible]	

रामकृष्ण रति दाता आरती माला

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
आचमन-प्राणायाम	
शांतिपाठ-संकल्प	
विस्तृत षोडशोपचार पूजा	
पंचोपचार पूजा ध्यान	
कपूर-दीप आरती	
प्रदक्षिणा पुष्पाञ्जली	
क्षमा प्रार्थना-योग क्षेम	
आशीर्वाद यजमान	
पुरोहित आरतीपचाड	
चतुर्दश संख्या आरती	
बर्ती नाम आरती पत्र	
सामग्री	पृष्ठ 1 से 11
विश्वपति समर्पण	12
मंगलाचरण	13-14
गणेशारति	15
नवग्रह षोडशमातृका	16
वरुण सरस्वती	17
विश्वनाथ आरती	18-21
पार्वती शंकर आरती	22
गौरी स्तुति	23-24
विराट विष्णु आरती	25
सब देवताओ आरती	26
लक्ष्मी कांत आरती	27
सत्यनारायण आरती	28

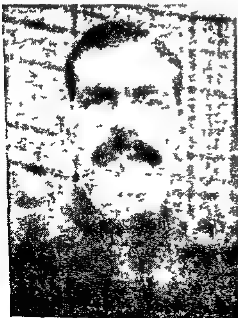
विषय	पृष्ठ संख्या
दशावतार आरती	29
ब्रह्म विष्णु महेश्वर आरती	30-31
लक्ष्मीजी आरती	32
महाकाली आरती	33
नील रूप काली आरती	34
सीताराम आरती	35-38
राधाकृष्ण आरती	39-41
श्रीमद्भागवत आरती	42
हनुमान आरती	43-44
श्रीगामाता की आरती	45
धन्वंतरि आरती	45
श्रीबद्रीनारायणजी	46
श्रीगंगामाता आरती	47
श्रीयमुनाजी आरती	48
श्रीतुलसीमहारानी आरती	49
सब अवतार आरती	50
श्रीबालकृष्ण आरती	51
श्रीगणेशादि सब-देवताओं की पुराणोक्त स्तुति	52
भूपतिश्रीगंगासिंहजी प्रसंशा	53
ग्रन्थकर्ता परिचय	54

॥ श्री ॥

श्री गोलोकवासी परम भागवत



पूज्य चरण श्री स्वामी करपात्री जी महाराज द्वारा चूरू (बीकानेर) की विशाल सभा में "भागवताचार्य,, पदवी से विभूषित प रामलाल जी शर्मा। जिनकी स्मृति में रचकर यह परमेश्वर यश प्रभुचरणों में समर्पित है जन्म वि स 1951 माघ शुक्ला ८ तथा गोलोकवास द्वि आश्विन शुक्ला ८, विक्रम सम्वत् 2020



पूज्य पिताजी राम-कृष्ण शिव-हनुमान के भक्त थे, बाल्यावस्था में आपकी सत्संगति का प्रभाव मेरे मन में दृढ़ता से स्थिर हो गया। अत परमेश्वर की कृपा से मैं यह पुस्तक लिखने को समर्थ हुआ।

रचयिता

वैद्य हरिप्रसाद शर्मा

ॐ

॥ श्री गणेशायनम ॥

॥ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्या नम ॥

श्री विश्वेश्वरी विश्वेश्वर चरण कमलेभ्यो नम

हरिहर भक्ति रसामृत गीत

मगला चरण

श्री गणनायक गणपति विघ्नेश्वर हे ईश।
मन वाछित करना प्रभो आज नमत हू शीश॥
श्री विघ्नेश्वर सुत उमा भजु मन बारम्वार।
आदि पूज्य यह देव है सबके प्रिय करतार॥
चन्द्रभाल गिरिजातनय को सुमिरू मैं आज।
विघ्न दूर करना प्रभो रखना मेरी लाज॥

द्रुतविलम्बित छन्द

गणपति गिरिजा सुत आजहि,
करत हू तव कोमल पादहि।
विनय स्नेह सप्रेम प्रणामहि,
तव कृपा नित मगल कामहि।
मधुर प्रेमभरी विश्वेश की,
गुण कथा जगदम्बा साथ मे।
नित नई भवतु हिय चित्त म,
"हरि" की प्राथना यही एक है।

श्री शारद माता विनय दास "हरि" की आज।
मदमति को दूर कर ईश प्रेम के काज॥
श्री शारद जगदम्बिके वाणी की शिर मौलि।
सुमति तीव्र मोहि दीजिए सुदर पद की बोलि॥
श्री शारद मातेश्वरी करहु कृपा अब आन।
शक्ति प्रभु गुण गान की दो सेवक माहि जान॥
हे अम्बा विश्वेश्वरी तुम जग की प्रतिपाल।
धी वाणी निमल मुझे देकर करो निहाल॥

गुण गाऊ श्रीकृष्ण के सहित राम मैं आज।
रम्य सुलालित पद बने पूर्ण होय सब काज।
हाथ जोड विनती मेरी प्रेम से हो स्वीकार।
कृपा तुम्हारी चित्त पै बनी रहे हर बार॥
अवढर दानी महेश की करू वन्दना आज।
उमा सहित रक्षा करें राम कृष्ण के काज॥

छन्द द्रुतविलम्बित

विमल बुद्धि प्रदायक भारति।
बहु मुखी विद्या बल दीजिए॥
अचल राग श्री राम के पाद में।
भवतु-बारम्बार प्रणाम है॥

तुलसीदास गुरु सूर तुम मान्य मेरे कवि राज।
तुम निर्मित शब्दावली रचि पद मुद मैं आज॥

'गुरुवर तुलसीदास को बारम्बार प्रणाम।
जिनकी अनुकम्पा रचे सियाराम गुण ग्राम॥

चाहत धन मैं मान हू हो जिसमे आनन्द।
गुण गाऊ सुप्रसन्न हो सदा सच्चिदानन्द॥

प्रिय विनम्र निवेदन एक है,
कवि शिरोमणि दशक वृन्द से।
पद रचे विन कविता ज्ञान के,
गुण प्रभु के जान निभाईये॥

श्री गणपति प्रार्थना

गणपति सु पीयूषपाणि भजतुरे नित मोददम्।
शिव सुत गिरिजा प्रिय नन्दन भवानि हि सुखदम्॥
सुर नायक जग वन्दित परशु कर मधु मादकम।
हरत बाधा क्लेशतम अघ विघ्न अप्रिय तोदकम॥
लिख महाभारत पुराणहि व्यास मुद आनन्ददम।
विश्व ज्ञान प्रकाशक मन मधुकर मकरन्ददम॥
मुदमोद मगनकारक विद्या निधि सद्बुद्धिदम्।
हिय अम्बुज सुविकाशक प्रिय ज्ञान निर्मल नीरदम॥
"वैद्यहरि" धी हंसिनी तव पादपद्म सरोवरम।
अदन मुक्ता कर्नितोल शान्त दशन सुन्दरम्॥

/ M

श्री गणेश स्तुति

सूय सम पूजित जगत के विघ्नहारी विनायकम ।
प्रथम मगल काय मे नित नेह भज वर दायकम् ॥
गजवदन-कोमल हाथ शोभित परशु मोदक लायकम ।
सूंड सर्पाकार दिव्य है नयन नित फल दायकम् ॥
उदर लम्बा भाल हिमकर माल गल महाकायकम ।
मुख एक दंत सु गणपति सकीर्तने सुर गायकम ॥
चढत मूषक राज ऊपर प्रभु कृपा गणनायकम ।
रिद्ध सिद्ध शुभ चवर डोलत सेवित बहु पायकम ॥
"वैद्यहरि" हिय दुख पिशाचिनी मरती नाम सुसायकम ।
विघ्न अघतम नाशकारी कलिपु नित मन भायकम् ॥

गणपति स्तवन

प्रेम भरे मन गणपति गावो-चारा पदारथ कर तल पावो ।
रिद्धि सिद्धि दाता गजमुख हैं-पूजन से होवें सब सुख हैं ॥
शकर प्रिय सब जगवन्दन है-दाता सुख गिरिजा नन्दन हैं ।
एक दंत लबोदर रूपा-चन्द्र भाल विघ्नेश्वर भूपा ॥
हाथ परशु मोदक की शोभा-नयन देख दर्शन का लोभा ।
मूषक वाहन सूंड बिराजे-मन मदिर आरती नीराजे ॥
कलि मे शीघ विनायक राजा-प्रेम प्रसन्न हो सारे काजा ।
गावे "वैद्यहरि' शिर भोवे-रहहु हृदय कुटिया प्रिय मोवे ॥

गणपति महत्व

आदि पूज्य गणपति गणराज । टेर

एक समय जब देव सभा मे पूज्य कौन हो प्रथम समाज ।
प्रश्न उठा, श्री विष्णु बोले देवे अण्ड परिक्रमा आज ॥
जो कोई सन्मुख हो मम पहले वही प्रथम पूजित हो आज ।
शीघ्रगामी वाहन सब सुर चढ चले प्रदक्षिण विधि के काज ॥
पाकर मन्दगति वाहन का गणपति सोचत रहे विराज ।
अतिदयालु ब्रह्माण्डाधिपकी करहु परिक्रमा कहि ऋषिराज ॥
प्रथम परिक्रमा स्वामी चराचर की कर गणपति [illegible] ।
हुए देव सब आय पराजित विघ्नराज को [illegible] ॥
'वैद्यहरि श्री गौरी तनय की कर जा [illegible] ॥

गणेश की महिमा

श्री गणपति लंबोदर को प्रभु ! निशिदिन रटना हितकारी।
आदि पूज्य हो मम प्रिय नन्दन कहति रहति यह शिव प्यारी॥
परम नेह से रच निज सुत को स्नान करन की सुविचारी।
बोली द्वारपाल तुम रहना सावधान सब घटिका री॥
अवसर आ निज क्षण म-दर-गृह प्रवेश का तयारी।
रोका गणपति ने शंभु को-काटा शीश श्री त्रिपुरारी॥
पैठे जह श्री गिरिजा नहाय दन्न भ्रामित हुई भारी।
गिरिजा रुठ बात स बोली क्या मारा सुत भयहारी॥
शीघ्र बुझावो किसी विधि से मम आधि की चिनगारी।
शिव ने जाकर जगत खोजा पुत्र पीठ दे गज नारी॥
बैठी थी तब उसके सुत का शीश लय श्री मन्नारी।
आकर जोडा गज आनन से गौरी तनय का सिर भारी॥
कर प्रसन्न श्री गौरी को शिव पुत्र स्नेह पे बलिहारी।
आदि पूज्य हो तव सुत सुभगे यह सब जग म यशकारी॥
संकट कटे भजे हो वे सिद्धि सफल मनोरथ सबकारी।
"हरि" यह हो गय हर प्रसन्न श्रीगिरिजा गणपति दु खहारी॥

गणपति प्रार्थना

जय जय गणपति पूजित सुरमति सदा अमलमति ज्ञानधरम्।
आनन्द सिन्धु मस्तक इन्दु मलयज बिन्दु परशु करम॥
गजमुख आनन पार्वती नंदन पूजित मुनिजन सदा करम।
जय जय गणपति॥

वंदित नित जग काय प्रथमपग-आनन्द सब मग नित्य करम्।
मंगल दाता बुद्धि विधाता सब नर त्राता पुत्र शिवम॥
मुद मोदक फल प्रेम भक्ति जल हरति कलीमल लंबोदरम्।
जय जय गणपति॥

ऋद्धि सिद्धि कर पूजित गणधर विघ्न क्लेश हर रुजा नरम।
मूषक वाहन नित्य मोदमन देन मोक्ष धन भजहु वरम्॥
जयति विनायक सब सुख दायक–सुरगण गायक प्रियसुरम्।
जय जय गणपति॥

प्रथम विजय पद तरति काम नद हरति मोहमद द्वेष जरम।
आयु प्रदाता विद्यामाता सबके पाता विघ्नहरम॥

जय गण स्वामी पदहु नमामि नित अनुगामी हरहु भयम् ।
जय जय गणपति ॥

गणपति पद रज अय काम तज सदा प्रेम भज नेत्र ढरम ।
"वैद्य हरि" धरहिय मति उर कर सदा सुखकर मोद भरम ॥
गणपति पावन सदा सुहावन सब मन भावन सुखद परम ।
जय जय गणपति ॥

सरस्वति प्राथना

शारद माता भारती भूपण-नाशत सदा अबुद्धि दूपण ।
सेवक वाणी गुण गण गावे-सुयश पताका तव फहराव ॥
अमर बली तव दशन वोई-जापर कृपा मुदहिं तव होई ।
मम मानस की अघतम हारी- भवभय हरि, चन्द्रिका उजारी ॥
मुक्ति ब्रह्म सुख की ब्रह्मानी-शंभु हरि अज महिमा बखानी ।
हाथ वीणा पुस्तक की शोभा- मन अलि चरण कमल म लाभा ॥
स्फटिकमाल शुक्लाम्बर धारिणी-पद्मासन स्थित दुख विदारणी ।
हृदयागण मम आन विराजहु- तव मुद कुमति दरिद्रता भाजहु ॥
देह उदधि मे विकसे मोती-चुगहु हस । शारद, मम ज्योति ।
हृदय थली है सुशोभित मेवा-चढे सरस्वती हो नित सेवा ॥
धूप दीप कपूर थाल भरि-करत आरती मुदहि "वैद्य हरि" ।
अष्ट अ ग सह नमत चरण मे-विमलमति दो पडा शरण म ॥

आरती सरस्वती की

जयति सरस्वती बुद्धि ईश्वरी ।
सुर नर मुनि जन की हृदयश्वरी ॥
सन्मति दाता बुद्धि विधाता ।
तू जगमाता मगल दाता ॥
प्रथमारभे तव गुण गाता ।
मममति वधय अयि अखिलेश्वरी ॥ टेर जयति ॥

ऋषि मुनि सुर नर तुम्हें मनावें
अपना सफल मनारथ पावें ॥
प्रिय गुण गावें हिय हरपावें ।
तव पद पूजित सदा सुरेश्वरी ॥ जयति

वीणा पुस्तक हाथ सोहती ।
धवलाम्बर पदमासन रोहती ॥

हंस वाहिनी मम मन मोहती ।
पदरति हो तव हे मातेश्वरी ॥ जयति

कुन्द इन्दु सम धवलित देहा ।
कर वर दण्ड देख मनु नेहा ॥
रक्षय मामहि–निवसतु गेहा ।
ब्रह्माच्युत शिव हृत्परमेश्वरी ॥ जयति

ग्राद्य जगत म व्यापक रूपा ।
तव चरणे मम भक्ति अनूपा ॥
कर उद्धार पडे भव कूपा ।
दे दर्शन अब मात सुरेश्वरी ॥ जयति

धूप दीप कपूर की बाती ।
मेरे मन मंदिर मे भाती ॥
तव पूजा हित बुद्धि सजाती ।
स्वर माधुरी मे हे विश्वेश्वरी ॥ जयति

तव मुद "वैद्य हरि" ने गाई ।
की ही दूर हृदय की काई ॥
नैन कलेवर भक्ति छाई ॥
वसतु हृदय मम सदा महेश्वरी । जयति

सरस्वती गीतिका

जयति सरस्वती हरु मम कुमति देहि ज्ञान गति भयहारी ।
जय मा शारद बुद्धि विशारद गावत नारद वय सारी ॥
अमर गुणावली पद रज मन अली विकसित हियकली मुदभारी
जयति सरस्वती ॥

वीणा पुस्तक शोभित हस्तक दीपित मस्तक तम-जारी ।
हर मम जडता मिथ्या ममता दानव समता सुर वारी ॥
वाहन हंसा विश्व प्रशंसा टरु अघ तमसा दुख भारी ।
जयति सरस्वति ।

अमलज्ञान निर्मल मानं हरु अज्ञान महामारी ।
दिव्य चरित आतम भरित शुभदात्वरित हियचारी ॥
जय जय माता बुद्धि विधाता सुर नर त्राता भव भारी ।
जयति सरस्वति ॥

स्थित पद्मासन धवल इन्दु तन व्यापक जनमन जय मा री ।
देव त्रिपूजित सुर नर वन्दित नित अभिनंदित अघटारी ॥

हरि हर भक्ति रसामृत गीत पहला विश्राम)

जननी रक्षय अरिदल भक्षय टरहु रुजक्षय कलि-सारी ।
जय जय सरस्वती ।

धिषणा स्वामिनी प्रभु अनुगामिनी चेतना दामिनी नभ भारी ।
"वैद्य हरि" नत सदा पाद रत हरहु कुमतिमत मम सारी ॥
जन मन मंदिर प्रभु गुण सुन्दर यही सुभगवर धी गारी ।
जयति सरस्वती ॥

त्रिरूप शिव की आरती

ॐ जय शंकर स्वामी ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हो अन्तर्यामी । टेर
आदि सृष्टि के तुम चतुरानन हो रचने हारे ॥
दानवगण वरदान दे सुर उलभन टारे । जय
सृष्टि पालन पोषण से तुम विश्व रूप स्वामी ॥
सुरगण जीव चराचर सब हैं अनुगामी । जय
प्रलय काल में जग संहर्ता कालरूप धारी ॥
पाप पुंज या क्षय कर सत्पथ संचारी । जय
अभ्युत्थान धर्म का करके लेते तुम अवतार ।
संत सुरक्षा-दुष्कृत हरते वसुधा भार । जय
तुमही चराचर और सुधाकर हो तमहारी दिनेश ।
अन्नोत्पत्ति जय वर्षा करने हारे सुरेश । जय
थोड़े तप से शीघ्र कृपालु देते तुम वरदान ॥
सुख सम्पत्ति इच्छित फल करते हो धनवान । जय
वेष आपका सदा उदासी रूप है हुए भरा ॥
अन्तकरण से नमता वह भव कूप तरा । जय
धूप दीप कपूर हृदय मन शुद्ध सदा गावे ॥
धर्म अर्थ सत्काम की मोक्ष सिद्धि पावे । जय
वैद्य हरि भवदीय चरण में प्रेम से पाया थोक ॥
घर पाया आनंद है चन्द्र चकोर विलोक । जय

शंकर स्तुति गीतिका

भजु शिव शंकर गिरजापति हर वाम जनित ज्वर मदा टरम्
शिव गंगाधर छवि डमरू कर तीन नयन कंदर्प जरम् ॥
जटा विशाल हिमकर भाल कृत हलाहल पान गरम् ।
भजु

नयन मनोहर गले फणीधर मुडमाल नर शूल धरम् ।
विष गल भूषण कलिमल दूषण अघतम चूपण शभु भवम् ॥
सौम्य दृष्टि हितकारक सृष्टि भक्ति वृष्टि प्रभु पन्हु वरम् ।
भजु शिव शकर ॥

मस्तक देखा मलयज रेखा अस्मित वेखा भक्ति भरम ।
राम ध्यान मुख दाता कलिसुख टारत भव दु ख महानरम ॥
अशन धतूरा पापहु कूरा योगे शूरा शिवहु परम ।
भजु शिव शकर ॥

कटि बाधवर सदा शिव शकर उमा रमणवर मोद करम ।
नदी वाहन मुनि मन भावन कलियुग पावन पोत तरम ॥
सुरगण साधक बाधा बाधक नानहु श्राजक विश्वनरम ।
भजु शिव शकर ॥

जयति महेश्वर जय शिव शकर कथहु सुखकर सत्य चरम् ।
वैद्य हरि हिय बसहु शिवा पिय दातु प्राण जिय पूज्य हरम ॥
"पशुपति" शकर माय उमावर जय जय हर कह मधुर स्वरम ।
भजु शिव शकर ॥

सरस्वती विनय

जयति मातु सरस्वती मम बुद्धि मोद सदा करो ।
शुभ ज्ञान देकर के हमे अज्ञान तम दु ख अघहरो ॥ जयति
मन बुद्धि हिय तम मावसा रजनी की तुम हा चांदनी ।
पश्य तव पद मन प्रफुल्लित रूप शशि छवि सचरो ॥ जयति
दुगुण अशुभगति अवगुणो की नाश हारी ज्ञान हो ।
विजय इन्द्रिय सामन कुसुमम जीव विषयन म जरो ॥ जयति
देश माय की मातु हो तुम हस वाहिनी मुकुट धर ।
राष्ट्र भारत की अवनति उन्नति पथ माह धरो ॥ जयति
जग जनित मिथ्या कपट अरु मोह माया काम को ।
हरतु नित्य वरानने गुण नान प्रभु को हो खरो ॥ जयति
धवल हार वस्त्र शोभित करती वीणा मधुरवन् ।
वरदायिनी स्थित श्वेतपद्मा नान भूषण स्मृति धरो ॥ जयति
वदिता शिव ब्रह्म अच्युत- जाड्य ताप सुदीनता ।
हरतु नित अमनानने, पद भक्ति निर्झर नित भरो ॥ जयति
विमुख तव अनुकम्पया फिरते हैं जो उन्मत्त वत् ।
नाश कर उनकी कुमति वरदान शुभमति का करो ॥ जयति

धी धति स्मति चचरीक के ग्राज मन ग्रनि हृप है ।
पान कर मकरन्द चरन, मत्यु से भी नही डरा ॥
विपुल गुण गाथा सुरसरि बहतु नित्य सुमगना ।
हरि वैद्य ग्रात्मा मदिरे तव प्रेम सुदर है परो ॥ जयति

पावती विनय

जगत ग्रम्वा श्री ग्रपरना नारी की सौभाग्य दा ।
पूजिता इस जन्म देती लोक सुख ग्ररु सम्पदा ॥
जनक तनया की सुपूजा रामबरटरी ग्रापदा ।
मन हृदय ग्रति प्रेम पद कुरु राशि दायिनी सुखदा ॥
रूप बहुविध धर रवारे मडनी सुर नर मदा ।
कलिपु शुद्ध क्लेवर भजु मोक्षदा सब कामदा ॥
सिर मुकुट सौभाग्य विन्दु मजुपद ग्रान ददा ।
छवि सुकोमल विश्वमाहनी नारीपु पति प्रेमदा ॥
सिंह वाहन रक्त पटल्न कणयो मणि सवदा ।
दिव्य मगल ग्राकृति गल भूपण शुभ ग्र गदा ॥
पावती रुद्राणी गौरी चडिका शिवा मोक्षदा ।
वैद्य हरि हिय मदिरे वम ज्ञानभक्ति रु शमदा ॥
पद कमल वन भ्रमरी मातु-ग्राई लग्य कालहु गदा ।
भव मन धो रक्षा करा प्रिय दशना मा नमदा ॥
तव गुण उजागर हृत्पटल मम वाणी भवतु प्रियवदा ।
शील गुण युत पति सुसवा मन वचन गृह सुमतिदा ॥
मन कौमुदी की चादनी निनयावनी हिय पत्तिदा ।
तम ग्रघ पखेरु उडावनी विद्युत समा दीप्तिरदा ॥
सुखमयी जग की हो यात्रा तव पद स्वच्छन्ददा ।
नारी ग्रनिनी की सुधा हा नित्य मुद मकरदा ॥

भजन हरि चरण ध्यान

मन धर हरि चरणन का ध्यान । टर
भ्रमर ध्यान मे मृतक कीट म कर जीव ग्राह्वान ॥
ग्रजामील तर गया गया स सुतनारायण मान ।
शबरी मुक्त भइ बारन ते प्रेम-की की पहिचान ॥

सकट मोचन जन्म जन्म के हरि पितु मातु समान ।
गोपी निर्मल प्रेम सुधापी किया जन्म कल्यान ॥
जसुमति गोद खिला हुई धन धन पाया अनुपम ज्ञान ।
"वैद्य हरि" बलि हारी चरण पे पाई ज्यो मचन मान ॥

अखियां देख—भजन

अखियां देख हरि के रूप । टेर
सजल हुई प्रेमामृत पीकर सुन्दर गिरिधर भूप ।
झपकी पलकें रूप माधुरी रस के मध्य अनूप ॥
तृप्ति न होती सखि नयणा की ज्यो तृष्णा का कूप ।
"हरि" भणत यो ही पीती रह ईश सुधा की सूप ॥

भजन

सुना कानो स हरि गुण गान ।
जाके सुन ते भव सागर स तरता जीव महान ॥ टेर
मृग शावक सुन वशीभूत हुए सुन्दर हरि बखान ।
दिव्य सपमी मुग्ध सदा हो हरि गुण सुन कर कान ॥
एसे दीन दयालु सुन हो जड चेतन पाखान ॥
"हरि" करुणा सागर को पाके तज तटस्तान थान ॥

हरि प्राथना

मन ! गृह का पालन कर के तुम कुछ घट ईश विचार करो ।
नही दोनो बिन सुख मिलता है यह चित्त म ध्यान सदा ही धरो ॥
गह पालन बिन सतन सेवा नहा कुछ घडिया बन पाती है ।
नही ईश के ध्यान बिना शाति इस समझ के माग सदा बिचरो ॥
इन दोनो का उपदेशक भी वही एक प्रभु अन्तर्यामी ।
चाह मान न मान अरी सजनी ! दुख जाय सदा सुख जाय जरो ॥
इस विश्व की गाडी दोनो बिन नही कदम भी चलने पाती है ।
यह माया भ्रम की यवनिका है तुम अन्ध हटा के सदा विहरो ॥
वडे योगी गृही जे असख्य हुए पर पार न पाया दोनो का ।
सत्कम 'हरि' करत रहना इन दोनो से जीव बने सगरो ॥

भजन

मति हार गई उस पावन प्रभु के गुण गाते गाते सजनी ।
नही पाया जो पार हुइ हैरान गये दिन बीत बहु रजनी ॥

अचरज है आज हृदय मेरे जेहि निगम नेति कह गाते है ।
बडे ध्यान प्रेम तप वल से री जो जिन को सदा रिझाते ह ।।
जल मे नही भीगतो भान होत ज्यो कमल पत्र की सदा अनी ।
धर ध्यान हृदय मनसा वाचा बैकुण्ठाधिपका नाम से री ।।
गुण गा आनद सदा उपजे कर कठिन हृदय को नम से री ।
तव हारी मति तव जीत गई है प्रकाशमया हिये दिव्यमनी ।।
सतोप परम आनद की धारा बहती नित जव रहती है ।
सुख दु ख गर्मी तष्णा बाधा तू आत्मसात् कर सहती है ।।
"हरि" भव से नौका पार तेरी कर देगें वे ही विश्वधनी ।

हरो हरि भजन

हरो हरि इन अ खियन की पीर । टेर
मीरा के आराध्य देव हो सुदर श्याम शरीर ।।
सूरदास के सदा इप्ट थे आप बडे गभीर ।
अजामील गणिका न खाई प्रेम नाम की खीर ।।
द्रोपदी की आपति टाली सभामध्य दे चीर ।
जब जब सकट पडे भक्ता पे हरी है सबकी भीर ।।
महाभारत के युद्ध काल हुए बिन शस्त्र के वीर ।
"हरि" के चम नयनो म वहता रह प्रेम का नीर ।।

हमतो प्रभु के भजन

हमतो नित्य प्रभु गुण गावें ।
नाच नाच कल गान करत सब प्रेम स उन्हे रिझावें । टेर
उत्कण्ठित गुण गरिमा उनकी बोल सदा हिय ध्यावें ।।
मातु पितुहि प्रिय परिजन मन म मोद भरे हरपावे ।
शुक सारिका पीजरनि आगण राम बोल हुलसावें ।।
ध्रुव प्रहलाद विभीषण शबरी प्रेम से बौर खिलावे ।
प्रेम सहित फल के छिनकेरी बिदुराणी के खावे ।।
"हरि" कह नित तू याद प्रिया ! कर सीधे भागे आवे ।

घडीवक्त भजन

घडी पल पल कर युग बीत गया अब ईश का प्रेम हृदय
नही मिलती जग म सुख शाति जरा मूढ मति से विचार

धनवान जगत म बहुत हुए नहीं गिनन की कोई गिनती ।
मव अनवान पछताय गये नहीं धा-धा की जीवन गुजरी ॥

गुद्ध जीवन की अनुपम पलटो नयन म उमर न्हेय लगा ।
ये अपर आप उबारहिंगे यह शास्त्रन सग लिखो मगरो ॥

नाम अमर करता जग म जब दौड लगाता है मानव ।
जिर तप से नाम अमर मानी नहीं, जीव कलेवर मार भरा ॥

यहु पाप से निधि सचय कर य चाहु मान प्रतिष्ठाव यश की जा ।
रहते य पाछे मना-जा ने मति मध्य-म फेर बनो है गरो ॥

मैल तो सार मिलाता है जो जगदीश्वर कहलात हैं ।
घड़ी पल भर काम सभी तज के, हरि, सुपथ ईशर निज विहरा ॥

रसना भजन पचेन्द्रिय ज्ञान

रसना प्रभु गुण मीठा है री अनुभव कर तू थोडा काल य हृदय बुद्धि में दीठा है री ।
नयन दख हुए प्रेम मगन ज्या कमल भ्रमर मधु चीठा है-री ॥
कर्ण सुनत कबहु न अघाय मृग भुजग फिरे पीठा है री ।
घ्राण, चढे प्रभु पद पुष्पन को सू घ सदा हरि निष्ठा है री ॥
स्वजाकरति कर्नाि से मरा शीतकाल ह क्लिष्ठा है री ।
हरि रसन ! त नत्य सहारा पिहू मधु भ्रमर वलिष्ठा हे री ॥

हरि गुणगा भजन

हरि गुणगा हिय उपजो ज्ञान ।
गुण ही सार जगत म मुमुक्षी ! सदा हात है भान । टर
गुण गाये सनकादिक योगी नित्य रहत है ज्यान ॥
गहरे थल म पठ विश्व के करये दवा ध्यान ॥ टेर
यही अमर धन मानव जनका करें क्यो न कल्यान ।
अनुभव म मर आभारी ! दख दु ख अज्ञान ॥
सच्चिदानंद का दाता जग म अमर नाम सम्मान ।
माया तृष्णा उमर गवाई सुना न हरि गुण कान ॥
अ त समय पछतावा मन म किया न प्रभु गुण गान ।
समझ हरि गुण गाय "वैद्य हरि सार जन्म का जान ॥

प्रभु भजन

प्रभु का गुणगा के सदा सजनी हिय आनद मेरे उपजत है।
देख तेज की रूप माधुरी मन मधुकर बन गू जत है ॥
उस कमल नयन कमलापति के दिशिवाम विराज रही कमला।
यह अविनाशी सब घट वासी भक्तो के हिय विराजत हैं ॥
निराकार साकार रूप धर प्रिय जगदीश कहाते है।
जहं देखु तह छविरूप बने यह चन्द्रभानु नित भ्राजन है ॥
चक्र सुदर्शन हाथ लिये दुष्टो का दण्ड दिलाते है।
आलि ! समदर्शी नही भेद कहू नप रक गेह नितराजत है ॥
शख चक्र गदा पद्मधारी सदा साम्य भाव से शाभित हैं।
यह ध्यान निरतर जाहि जन मनते बडभागी कहावत है ॥
कौनमति से कहू गुणावली रोम रोम प्रभु की शोभा।
अखिलानद की सुषमा "वैद्य हरि" बलि नितनूतन जावत है ॥

इश हैं एकादशेन्द्रिय ज्ञान भजन

ईश है हृदय तन्त्री के तार।
मनुज कलेवर की सितार म करते है झनकार ॥ टेर
नयन देख काना से सुन के खीच नाव मझधार।
जीभ गाव हाथन मिलाव सुर करदे मन म पार ॥
स्कध अवसर धर सितार का जगहित करहु विहार।
जह सुनिवे को सघ मिले तह प्रेम से गा हरि बार ॥
दशेन्द्रियन सह मन नेता को ल निजकर उद्धार।
बाज उठें पूरी तन्त्री म निराकार साकार ॥
तुरत फलवती इन गुणनन की सुदर राग मल्हार।
गान कथन से पोत पाप का 'वैद्य हरि" हो पार ॥

जगत मे सार भजन

जगत म सार ईश का नाम ।
धनी निधन सब जन्म मरत है, नाम रहे कुछ याम ॥
ईश गुणावली गा कर जग मे शेष न रहता काम ।
प्रभु गुण गाय अमर जीव जग होता, अनुभव ग्राम ॥
विषय द्रव्य को सार समझकर भूलत आठो याम ।
लोक बडाई म पलडा गुरु देख तुला हिय थाम ॥
जान मदमति छाड ईश तज खडे लोभ के धाम ।
दुख की आधी चलती हर घर सुनो सुबह औशाम ॥
भागत दखे भागी सुभागी कम भाग के गाम ।
दु खभव गठरी भार "वँचहरि" बटवाता बिन दाम ॥

लक्ष्मीपति जय विष्णु प्राथना

लक्ष्मी पति जय रमापति जय बैकुठेश की नितजय हो ।
सनकादिक नारद नित ध्यावें शिव मानस हसा जय हा ॥
अनुपम मुकुट शीश शोभित छवि चारुतिलक मस्तक राजे ।
गदा पद्म शुभ शङ्ख चक्रधारी विश्वम्भर की जय हो ॥
कमल नयन कमलानन के नित वाम भाग साहे कमला ।
गल बैजन्तीमाल कर्ण मे कुण्डल शोभा की जय हो ॥
नील कमल प्रतिभा है कलेवर ऋषिमुनि ध्यान लगाते है ।
हसमुख मदु कर धरत शीश पे भक्तजना के नित जय हो ॥
कबुग्रीव विशाल वक्ष पर दिव्य मणि झलकाय रही ।
सदा अभयदे शरणागत को सब घटवासी की जय हो ॥
लम्बित जानु बाहु चारु ह चिबुक अधर और गण्डस्थल ।
कोटि मदन छवि लाजन हारे शेषशायी विष्णु जय हो ॥
ब्रह्मा शकर सप्तलोक के वासी निरन्तर ध्याते है ।
लक्ष्मी चाप रही चरण न का भगुलता धारी की जय हो ॥
कोटि सूय सम तेज विराजे चन्द्रदव सी शीतलता ।
शारद सी माधुरी वाणी उपजावती हृय हिये जय हो ॥
धरें विश्वपति मजु हृदय यली तेहि अमर पद पाते ह ।
ध्रुव दशन दाता जे चतुभु ज अखिल लोक नायक जय हो ॥

वडभागी ज्ञानी नर नारी वर्णित छवि मानस मे धार ।
"वैद्य हरि" हृत्मानस मे जगदीश हरि की नित जय हो ॥

परमेश्वर भजन राग कसूरी ताल ३ निर्गुण

परमेश्वर भज नित उठ प्राणी जीवन थोडा है । टेर ॥
गह प्रबन्ध अरु विषय भोग मे मूल्यवान बीता जीवन ॥
अबतो कर कल्याण आत्म का क्यो मुख मोडा है ।
सुख म दिन वर्षो के बीते पल मे कल की सी यह बात ॥
काम लोभ इस जीव जगत के बाधक रोडा है ।
मन उपवन फुलवारी म तू ईश गुणन का बोदे बीज ॥
फूल खिलें भव तरने के जग सार निचोडा है ।
मान सरोवर हसा मन को मेजो मोतिन के जह ढेर ॥
"वैद्य हरि" चुग हो सजीव क्यो भ्रम मे दौडा है ।

कलेवर देख भजन

कलेवर देख करहु रे विचार ।
सब शरीर की देख स्वस्थता सुन्दरता आगार ॥
आख नाक मुख कान देह के प्रति अ ग सजे अपार । टर ॥
इसी देह की एक रूप लख मोहित सब ससार ॥
अतर मति से देख सजन यह मास पिंड का भार ।
पृथक पृथक सब अ ग निकालो रख दो मति अनुसार ॥
जोडत जोडत उमर बीत गई हृदय बुद्धि गय हार ।
यही सोचकर सार रहित यह एक प्रभु ह सार ॥
उपजे सग एकत्व दृष्टि से पृथक दृष्टि हू पार ।
एक दृष्टि म रहता तू कर पृथक दृष्टि आधार ॥
पल मे बेडा पार करेंगे "हरि" के प्रभु साकार ।

ईश भजन

ईश की माया बनी अपार ।
उमर तप म खोदी सारी कबहु न पाया पार ॥ टेर ॥
विधि हर ऋषि मुनि ध्यान लगाकर गये शेष मे हार ।
विश्व बना है प्रभु विराट् का रूप हिये तू धार ॥
जो अनन्य भन भक्त, रिझाय, उसे रूप अधिकार ।
अर्जुन रण म रूप देखकर कम्पित हैं हर वार ॥
बोला कर प्रार्थना धारो रूप चतुर्भुज सार ।
"वैद्य हरि" म बसो निरन्तर निराकार साकार ॥

जगत में सार भजन

जगत मे सार ईश का नाम ।
धनी निधन सब जन्म मरत है, नाम रहे कुछ याम ।।
ईश गुणावली गा कर जग मे शेष न रहता काम ।
प्रभु गुण गाये अमर जीव जग होता, अनुभव माम ।।
विषय द्रव्य का सार समझकर भूलत आठो याम ।
लाक बड़ाई म पलड़ा गुरु देख तुला हिय थाम ।।
जान मदमति छाड़ ईश तज खड़े लाभ के धाम ।
दुख की आंधी चलती हर घर सुनो सुबह औशाम ।।
भागत देखे भागी सुभागी कर्म भोग के गाम ।
दुखभव गठरी भार "वंशहरि" बटवाता बिन दाम ।।

लक्ष्मीपति जय विष्णु प्रार्थना

लक्ष्मी पति जय रमापति जय बैकुंठेश की नितजय हो ।
सनकादिक नारद नित ध्यावें शिव मानस हंसा जय हो ।।
अनुपम मुकुट शीश शोभित छवि चारतिलक मस्तक राजे ।
गदा पद्म शुभ शंख चक्रधारी विश्वम्भर की जय हो ।।
कमल नयन कमलानन के नित वाम भाग सोहे कमला ।
गल बैजंतीमाल कर्ण म कुण्डल शोभा की जय हो ।।
नील कमल प्रतिभा है कलेवर ऋषिमुनि ध्यान लगाते हैं ।
हंसमुख मदु कर धरत शीश प भक्तजनो के नित जय हो ।।
कम्बुग्रीव विशाल वक्ष पर दिव्य मणि झलकाय रही ।
सदा अभयदे शरणागत को सब घटवासी की जय हो ।।
लम्बित जानु बाहु चारु ह चिबुक अधर और गण्डस्थल ।
कोटि मदन छवि लाज्ज हारे शेषशायी विष्णु जय हो ।।
ब्रह्मा शंकर सप्तलोक के वासी निरंतर ध्याते हं ।
लक्ष्मी चाप रही चरण न का भृगुलता धारी की जय हो ।।
कोटि सूर्य सम तेज विराजे चन्द्रदेव सी शीतलता ।
शारद सी माधुरी वाणी उपजावती हप हिय जय हो ।।
धरें विश्वपति मंजु हृदय थली तेहि अमर पद पाते हैं ।
ध्रुव दर्शन दाता जे चतुर्भुज अखिल लोक नायक जय हो ।।

बडभागी ज्ञानी नर नारी वर्णित छवि मानस मे धार।
"वैद्य हरि" हृत्मानस मे जगदीश हरि की नित जय हो॥

परमेश्वर भजन राग कसूरी ताल ३ निगु ण

परमेश्वर भज नित उठ प्राणी जीवन थोडा है। टेर॥
गह प्रबन्ध अरु विषय भोग मे मूल्यवान बीता जीवन॥
अबतो कर कल्याण आत्म का क्यो मुख मोडा है।
सुख मे दिन वर्षों के बीते पल मे कल की सी यह बात॥
काम लोभ इस जीव जगत के बाधक रोडा है।
मन उपवन फुलवारी मे तू ईश गुणन का बोदे बीज॥
फूल खिलें भव तरने के जग सार निचोडा है।
मान सरोवर हसा मन को भेजो मोतिन के जह ढेर॥
"वैद्य हरि" चुग रहो सजीव क्यो भ्रम मे दौडा है।

कलेवर देख भजन

कलेवर देख करहु रे विचार।
सब शरीर की देख स्वस्थता सु दरता आगार॥
आख नाक मुख कान देह के प्रति अ ग सजे अपार। टेर॥
इसी देह को एक रूप लख मोहित सब ससार॥
अन्तर मति से देख सजन यह मास पिड का भार।
पृथक पृथक सब अ ग निकाला रख दो मति अनुसार॥
जोडत जोडत उमर बीत गई हृदय बुद्धि गये हार।
यही सोचकर सार रहित यह एक प्रभु ह सार॥
उपजे सग एकत्व दृष्टि से पृथक दृष्टि हू पार।
एक दृष्टि मे रहता तू कर पृथक दृष्टि आधार॥
पल म बेडा पार करेंगे "हरि' के प्रभु साकार।

ईश भजन

ईश की माया बनी अपार।
उमर तप म खोदी सारी कवहु न पाया पार॥ टेर॥
विधि हर ऋषि मुनि ध्यान लगाके गय शेष म हार।
विश्व बना है प्रभु विराट् का रूप हिये तु धार॥
जो अनन्य मन भक्त, रिझाय, उस रूप अधिकार।
अर्जु न रण म रूप देखकर कम्पित है हर बार॥
बोला कर प्रार्थना धारो रूप चतुभज सार।
"वैद्य हरि" म रमो निरन्तर निराकार साकार॥

कोयल वन भजन

कोयल बन मन प्रभुहि रिझाले जो जग के हैं सजन हार।
रूप सुरम्य सुवाणी मधुरा मधुर बने जग के करतार॥
शख चक्र गदा पद्म विराजे बठी लक्ष्मी चरणाधार।
शेषशायी प्रभु श्याम तनुज ह गल शोभित है मुक्ता हार॥
ऐसी शोभा जगत ईश की बनी है सुदर ध्यान विचार।
पिक पक्षी विश्वेश्वर गाले गुण गौरव स जो साकार॥
माधुरी वाणी सब जग वश करी सुन प्रभु होव प्रेम अपार।
"वद्य हरि' के मानस पिक म सुन मीठी पीहु प्राणाधार॥

मन मराल भजन

मन मराल चल मुक्ता खान जह प्रभु मान सरोवर है।
माया गुण का मानसरोवर अगम अथाह भरा है॥
पाप पुज के झूठे मोती देखत मन उभरा है।
परख परख नित गुण के मोती खाना सोच समझ के॥
हृदय थली म रस पहुचावे प्रेम सुधा का भरके।
मोती की पहिचान प्रेम स कर लेता हर बार॥
खावन म फीके कडवे हो पाचन मधुरा धार।
मुक्ता गुण सुरभि से निकसित मधुर पयस की धार॥
चरण कमल का दास बत्स बन पिवहु स्तन मझधार।
अनित्य मोती जोहरी परखे नित गुण मुक्ता दास॥
"वैद्य हरि तो भस्म बनाई गुण मुक्ता की खास।
खाय अमर यश इन मोतिन को कई नर हुए निहाल॥
सूर तुलसी गुरु नानक खाये कबीरा सच्चे टाल।

ॐ जय अखिलेश हरि–आरती प्रार्थना,

ॐ जय अखिलेश हरि।
जीवन दाता सुख के सम्पत्ति सबहि धरी॥ टेर॥
व्यापक रहत सब दिन हर पल प्रति जीवन के पास।
करत रक्षा निशदिन सहकर सबहि त्रास॥ जय
सुनो निरतर प्रेम भरी सुद प्रारथना हम की।
आश नहीं पल रहना क्षण म इस दम की॥ जय
जो कोई निन उठ प्रभु का ध्याव प्रेम मना भारी।
धन सम्पत्ति सुख देने निशि दिन बनवारी॥ जय
ध्रुव पर दान दयाल हुए प्रभु जाना तप भारी।

दीया अमर पद जग मे मुदभये गिरधारी ।। जय
तुम हो पूरण काम सदा सब सन्तन हितकारी।
मै पामर मतिहीन हू सेवक अधिकारी ।। जय

मातपिता अपराध सुवन के नित्य क्षमा करत।
मात पितु तुम जग के रक्षक हो चरते ।। जय

तुम हो सूय प्रकाश चादनी चाद की बन जाते।
विषयाधीन जो हाकर स्तुति न कर पाते ।। जय

बुरे भले सब जीव तुम्हारे तुम रक्षक इनके।
दते दण्ड कमफल बढे पाप जिनके ।। जय

कोयल रूप बनाके मानस नित प्रभु गुण गावो।
जन्म जन्म की त्रुटिया क्षमा करन आवो ।। जय

स्वामी चराचर की यह कीर्ति धवल रूप गावे।
"वैद्य हरि" नित मुद हो मन वांछित पावे ।। जय

तू चकोर (भजन)

तू चकोर मन प्रभु चदा है। तू मधुकर प्रभु मकरन्दा है।
तू चकदा प्रभु रवि छदा है-तू दुख कन्द प्रभु सुखकन्दा है ।।

तू पापी प्रभु पाप हारी हैं-तू तापी प्रभु ताप हारी हैं ।
तू दुख दाह प्रभु शीतलता है-तू दरिद्र प्रभु स्वर्णलता है ।।

तू राजहस प्रभु मानसरोवर-तू याचक प्रभु कल्प तरुवर।
तू तम निशि प्रभु दिन प्रकाश है-तू सीमित प्रभु सुविकाश है ।।

तू शोभा प्रभु शोभा खानि हैं। तू कृपण प्रभु अवढर दानि है।
तू रचना प्रभु रचना कर्ता,-तू उत्पन्न प्रभु पालनकर्ता ।।

तू स्वामी हम सेवक तेरे-तू अघहारी हमसे घनेरे।
तू त्राता हम निशिदिन टेरे- तू "हरि वैद्य" के कर हिय डेरे ।।

मन मधुकर भजन

मन मधुकर मकरन्द प्रभु के नाम का नित तू पी लेना।
फूल खिले मुख कमल नयन म छवि अनुपम उपजावन हार ।।
सदा सुमज्जित अमर गन्ध का मधुमय मधु हिय धर लेना।
पख मृदु अपने फलाकर नित मुख ढिग मडराता रह ।।
जीवन सफल बनेगा तेरा प्रेम की डग दो भर लेना।
शोक [illegible]

हर अगनि मकरन्द भरा है जह बैठो तह भर लेना।
छोड सग भ्रमरी वा-नी नित अमर सुधा प्रभु पुष्पन हार ॥
'वैद्य हरि' फिर सदा गध मधु सू घन सू घत तर लेना।

प्रभु (भजन) गजरा ताल धमाल

प्रभु से प्रेम है तेरा तो बडा पार होवगा।
उसी के नाम का सहारा ले सुख की नीद सोता रह ॥
उसे चिन्ता सदा तेरी सुतह कल्याण वारगा।
तेरे जीवन की विष वाटी हरी है पाप लतिका मे ॥
उसी म सीच विष हारी सुधा बू दे निचोवेगा।
दसो इन्द्री श्री मन से तू उसी के ध्यान म लगजा ॥
तेरे तन घाव भव का जो निरखकर वे वो धोवगा।
तरे सिर बोझ चिन्ता और लगा है धन कमाने का।
"हरि' का भार हल्का कर दहन धन का वो खावगा।

दीनानाथ प्रार्थना

दीनानाथ करुणा निधि स्वामी तुम सबके रखवारे हो।
आपत्काल सात्वना देकर पूज्य देव रत नारे हो ॥
पाप ताप हर दु ख दनुज दल भय हर नाम तुम्हारा है।
कर्मयोग का सदुपदेश दे अजु न को निस्तारा है ॥
तुम्ही दिवाकर तुम्ही सुधाकर तुमही पूज्य हो अग्निदेव।
तुम्ही ईश तुम पालनकर्ता जग मे पूजित हो महिम्व ॥
पा सकत तुम्हारा प्रकृति जग को सदा रचाती है।
ज्यो भ्रमरी निर्जीव कीट को ले नीडन मडराती है ॥
खल कामी अघ भरा जीव यह तुम्ही तारन हारे हो।
मनहु कमल जल पृथक बि दु मम कमभाग न्चनारे हो ॥
सुख के दाता तुम्ही विधाता, विष्णु शकर तुम्ही तो हो।
जग के कर्ता भरता हरता तीन लोकपति तुम्ही तो हो ॥
हम पामर डूब माया मे निकस नही प्रभु पाते है।
मग तृष्णा सोपान प्रतिदिन ऊचे चढत जाते है ॥
मन बगुला बन नयन मीच जग नदी किनारे झाक रहा।
झूठ कपट सा मीन पाप की धम भक्ति को हाक रहा ॥

मोह सि धु मे डूब रहा तुम पोत जगत के तारन हार।
अशरण शरण धम सस्थापक डूबत को नाविक मझधार ।।
मानस लहरी उथित तरगे भवरा प्रवाह बहाता हे।
क्षण क्षण उभरा नित नव यौवन घटी पल प्रतिदिन खाती है ।।
काम क्रोध मद गज तुम मृगपनि माया डाकिनी के तुम मत्र।
मन चकोर के अमर सुधाकर सुमनि प्रदाता तुमही सु तत्र ।।
हार शरण मे आपरी आया रख देना प्रभु मेरी लाज ।।
"वद्य हरि" के हृदय कमल मह बसहु निरतर रहहु बिराज।

प्रभु का रूप भजन-गजल ताल धमाल

प्रभु का रूप प्रभु माया प्रभु सब जग समाना है।
भक्त प्रहलाद का प्यारा रहे जड और चेतन मे ।।
उसी दम क्षम मे प्रकट उह हिरदे रमाना है। टेर
उसी की देवी माया ने किया जब रूप काली का ।।
मधु कैटभ को मारा था भयकर जग डराना है।
प्रभु की धार आना सिर यह माया जग सजानी है ।।
अधेरी मे पडा विषया की नर तू क्या भुलाना है।
अभी तो रात सब बीती हुआ चाहता सवेरा है ।।
"हरि" तो हाथ जाड़ेगा बदल जाव जमाना है।

नास्तिक हमने (भजन) नास्तिक वाद मे आस्तिक

नास्तिक हमन जग म दखे प्रभु को नही मनाते है।
झूठ-कपट मद काम क्रोध पग हरी मिथ्या बतलाते ह ।।
मतिभ्रम पाप पु ज का उगा उसका सदा सजाते है।
ईश ध्यान सापान चढन की सुन गाथा शरमाते ह ।।
दुख की ज्वाला दह सुलगती वैधराज बुलवाते ह।
कमज व्याधि नही नशाती तब मन को समझाते है ।।
प्रभु को रट मन, वैद्य रोग के तेरे वही कहाते है।
मनहु कल्पतरू नाम सींच प्रभु राग मुक्ति वे पाते ह ।।
पाप राग की भरी पटिका ताला बद डराते ह।
"वैद्यहरि" अब ईश शरण मे जा पटी खुलवाते ह ।।

सत्बुद्धि भजन गजल कव्वाली

सत बुद्धि समझाय मुझे प्रभु के ढिग पु चन की गतिया। टर
नति-नति सब वद शास्त्र कथ निराकार भी है साकार ।।

जिसको भजू मन धाम म समाया बीत गय दिन बहुरतिया।
वह निराकार साकार रूप म हर दम तुम म रहता है॥
समति से साकार तुम्हार बस हृदय मन बिच छतिया।
तीक्ष्णमति बिन नही मिलता तब निराकार कहलाता है॥
उस क्षण ध्यान चतुभु ज का कर भद बुद्धि तज और मनियां।
निराकार निर्लेप सदा यो बडे सूक्ष्म तप मिलता है॥
साकार रूप उस शक्तिमान का पापी अपापी सब सखियां।
कठिन मार्ग है निराकार साकार सुगमता वाला है॥
"वैद्यहरि" तो निराकार म अजुना चित्त दिवस रतियां।

सोपान भजन गजल कव्वाली

सोपान सहस चढ दखा सखी नही दीठो प्रभु की सूरतिया।
वे नील गगन सोते मा रहते सप्त लोक की शुभ नगरी॥
मैं खोजति खोजती हार गई नही मिली कही वह सूरतिया।
स्वग लोक जन लोक सत्य जहा मत्यु लोक सब राज रहे॥
घट भीतर साकार बसे बहि निराकार की है गतिया।
प्रेम सत्य जह कठिन प्रतिज्ञा जा का निभाने हारी हो॥
उसके मन्दिर मन रहत नित निरखो दिन घटा श्री शुभ रतिया।
श्याम सुकोमल चतुभु जन म देत भक्त दासी को ज्ञान॥
"वैद्यहरि दिन रैन दखता नही झूठ सच्ची बतिया।

ईश का ध्यान लगा ने भजन गजल कव्वाली

ईश का ध्यान लगाके हिय मन मन्दिर म सु विचार करो। टेर
बिना एक मन नहा ठहरत व गोविन्द मनुहारी है।
मान सरोवर मुक्ता ढिग ज्या चल मराल नित चित सगरो।
प्रेम पथ की स्वस्थ वीथी बिच हृदय सिंहासन शोभित है॥
मनहु नील नभ पूर्ण सुधाकर अमृत बिन्दु करत निखरो।
ध्यान वाटिका हरित सुपुष्पित नीर स्नेह शीतल पाने॥
नील कमल दल पयस बि दु पडी जनु मुक्ता म रग भरो।
ध्यान सरोवर कुमुद खिले है स्या-राकेश प्रभा नूतन॥
मन हु चन्द्र प्रभु आलिंगन निज मोद मनहि रग पीत हरो।

जब हिय मन तम लोक पार कर प्रभु प्रकाश म जावेंगे ।।
'वैद्यहरि' तब ग्रानोक्ति हो भव उदधि से क्यो न तरो ।

व्यापक प्रभु भजन

व्यापक प्रभु ग्रतरयामी । टेर
तू जो पाप करत अहनिशि नर देखत हैं सब स्वामी ।।
चद्र, भानु, दिक, काल, ऋतु मिस ईश नाक विचरामि ।
तू जो मन मे बडा सयाना बनकर विपयी कामी ।।
तोरी गति उसमे न छिपी कहु सोचहिय ग्रभिमानी ।
गहरी तम की गुफा फसा है कबहु उिचारी न जानी ।।
ग्रब तो शेप रही मे रटले राम नमामि नमामि ।
काल ज्वाल तव भाल लपक रही जारन को सुलगानी ।।
'वद्यहरि' लोवश नाम का छिडक सदा तू पानी ।

ग्राखें खोल भजन

ग्राखें खोल श्याम को देख । टेर
मजुलला्ट कुकु केशर की पडी है कज्जल रेख ।।
विधि भी लिखगें जाहि कलेवर जग शासन का लेख ।
श्याम जलद तनु शोभित नखरो के की की गति पेख ।।
नील नीरज मनु रति पति धारे सुन्दर सुघड सुवेख ।
विधि नील नभ तडित निचोडी सहित प्रभा अवरम ।।
सुघरि पीत पट, दत पक्ति जिमि शोभा रही न शेप ।
वड भागिन ग्राखे है तूरी राशि है तोरी मख ।।
'वैद्यहरि के सफल मनोरथ तेरी देखा देख ।

(दूसरा विश्राम समाप्त)

ग्रालि मोरे भजन

ग्रालि मोरे हिरद ज्योति जगी ।। टर
भाग गया तम प्रभु प्रकाश पा-सूरत मिली सगी ।।
कोटि दामिनी सहसभानुछवि देखत गई ठगी ।
मीरा या वही ज्योति ईश की जग मानस म दगो ।।

(हरि हर भक्ति रसामत गीत तीसरा वि

रात दिवस मधुकरी मति मारी प्रभु मकरन्द पगी।
मति गति रति लगी प्रभुहि चरण रज में भी वही पगी ॥
पूरण काम अभिराम ईश का ढूढन रही लगी।
मम नयन अनुराग द्रवित हो वाणी सरस बगी ॥
"वैद्य हरि" की ज्ञान पिपासा प्रभु पाने सुलगी ॥

हरि बिन भजन

हरि बिन कौन सहारा नर का ।टेर ॥
जगरक्षक तू ही सुखदाता हरता नित भव डर का ॥
बिना भजन निष्फल यह देही ज्यां शरीर है खर का।
जब शरीर निर्जीव होत है जारो कहे सब घर का ॥
कमभोग केना नहीं चलता वश दारा सुत जर-का।
देख देख जग रचना मनेशित अखियन आंसू ढर का ॥
दह भस्म पृथ्वी म समाती ज्यो पक्षी बिन पर का।
एक दिवस शुभ ब्याह होत सब गावें मगल वर का ॥
अन्तकाल कोई नही सगी पन्थ एक सग सर का।
अबतो चेत चेत सुन प्राणी प्रश्न है जीवण मरण का ॥
"वैद्य हरि" तो कहता रहता नित प्रभु गुण वा ठर का ॥

प्रभु हू शरण प्राथना भजन

प्रभु हू शरण तुम्हारीजी मैं आयो दुःख मे भाग ॥ टेर ॥
अब तो तरा आश्रय लेकर रहना पडसी जग म।
ग्राह पडे बलवान जगत नदी सुख बाया मग म ॥ मै
मेरा पाप घडा गल ताहि भर आया देखो।
अब तो तुमसा-मत्री पा कर सौंप दियो लखो ॥ मैं
मोह नदी म तैर थका हू अब डूबन की त्यारी।
तुमहि नाविक सबन हारे गोविन्द हो गिरधारी ॥ मै
मायानद म कमल खिल हैं धन जमीन नारी।
उनकी गन्ध म भ्रमर बना मैं भूला बनवारी ॥ मै
मान बडाई अरु इरषा की ममता मन मे जागी।
ममता नाश करी तव किरपा की सुलगादे आगी ॥ मैं

हम मर्कट तुम नट हो नचाते हमे भरोसा तेरा ।
"वैद्य हरि" की मति चकवी के तुम हो सूर्य सवेरा ॥ मैं

9680

मोहे हरि भजन

मोहे हरि भरोसो तेरो ॥टर ॥
नष्ट धीरज सेतु बाध को तारन तरन सबेरो ।
मोह वनज तुम दहन कृशानु और नही कोउ मेरो ॥
पाप दनुज तम हरण दिवाकर कर हिरदे म डेरो ।
आधि व्याधि सापिनी माने बन गरुड, हिये कर घेरो ॥
काल कराल दाढ पीसनी लख धीरज टूटो मेरा ।
तुमहि स्वामी हो रखवारे क्यो न टलाओ लेरो ॥
मन मधुकर बन पद पकज पे दिन दिन गु जत हेरो ।
"वैद्य हरि" तो तेरी आश पे चरण धूलिको चेरो ॥

मगल मूर्ति प्राथना चौपाई

मगलमूर्ति जय मधुसूदन–पाप पु ज गज केहरि सूदन ।
मोह विष-लता नाशन हारे—ग्राह, मुक्तकर गज रखवारे ॥
माया डाकिनी के तुम बरी–मोहि उबारहु करहु न देरी ।
मम मानस के मजु मराल—चुगहु, हिय धरि मुक्तामाल ॥
पद पकज म हो मम भक्ति—सदा विराजतु मम, तव शक्ति ।
मन मधुकर तव कमल नयन म—रा–मकरद ला है–चयन म ॥
करुणा सागर सुख के कर्त्ता—जग पालक रक्षक सहर्त्ता ।
कर जोरे "हरि वैद्य" चरण मे—आन पडा प्रभु तोरी शरण म ॥

हरि तुम भजन राग वर हस ताल धमाल

हरि तुम भक्तन के हितकारी ॥ टर ॥
अर्जु न के रण भूमि सारथी बन सब विपदा टारी ।
चिर प्रतीक्ष शबरी की इच्छा खाय बोर पूरी कर डारी ॥
जल विच युद्ध भया गज ग्राह का लडत लडत गज हारी ।
छाडि गरुड माग विच धाये भक्त गजहि दु ख टारी ॥
भक्तरदास गेह मे प्रकटी पावन सुरसरि धारी ।
सूरदास को अमर किया दे ज्ञान चक्षु असुरारि ॥
लोभ काम की वैतरणी म डूबरहा मझधारी ।
"बद्य हरि" उद्धारक प्रभु व चरण कमल बलिहारी ॥

त्रिना विश्वेश भजन गजल ताल धमाल

विना विश्वश गुण गाये सु आयु बीतगी सारी ।
मनहि मन रह गई ईच्छा न अघ की पु जिका टारी ॥
यही पल वय आयु क अभा तो ईश रग म रग ।
नही तो यम की कालिख से हुव मैली यह देह धारी ॥
हरि की चरण गगा से अभी धो पाप कीचड को ।
धुरो सुर पुर म वामा हो लिखेंगे लेख गिरधारी ॥
नदी वहती अगम ममता फले हैं क्रोध मद मत्सर ।
प्रवल बाढो म क्यो डूवे पकड नाविक जे वनवारी ॥
भरी है मोम की गगरी कपट मिथ्या के पानी से ।
सुखा प्रभु नाम सूरज से हरि,, जीवन मे जो खारी ॥

प्रभु मोरे मिश्रित राग वैराग भजन तर्ज प्रभु मोरे अवगुन चितन धरो

प्रभुजी मोरे मन में यों आवे ॥टेर॥
लिपट जाऊ तोरे चरण कमल म भव दुख नाहि सतावे ।
मठ कपट पाखड पाप की त्यज तृष्णा सारी ॥
हरि के रंग म रंग द हिरदा माया डिग मत धावे ।
जब अस्थिर मति होती जाती तव सोचत हूँ मन में ॥
त्रिया धरनि धन बहु उपजाकर जगयश क्यों न कमावे ।
दुध क्षण खुलते ज्ञान नयन तव सार ईश को जानू ॥
अमर कमाई जग यश करी का क्यों न गीत तू गावे ।
जग के भोग पदारथ सुदर लखके हुआ अधीर ॥
यही उन्नति यही सुयश आनद यही चित भाव ।
गृह मति स धन मोवन रति भोग सभी क्षण भगुर ॥
जानत ममता खीचरही क्यो द्विविधा म भरमावे ।
जगमत बना आधिभौतिक है रुप विराट प्रभु का ॥
कि कर्तव्य विमूढ हुआ सुन मति उपवन वन धावे ।
स्थिर मति तत्व निचोडा हरि को सूर तुलसीवत गाया ॥
हिय तराजू धर के तोनो पलडा भारी पावे ।
निवृत्त राग के गह तप वन है युक्ति हृदय म विचारी ॥
कछु जग जाले कछु प्रभु ध्याने मन सतोष बधावे ।
जो आनद प्रभु के गुण से गाने म अति आया ॥
काचन कामिनी "वद हरि कछु आनद राशि पावे ।

हे प्रभु भजन

हे प्रभु अब तो कृपा करो ॥ टेर ॥
भवज दु ख स भ्रमित रात दिन आ-तव, चरण परो ।
सुमति कली पकज की विगसे नित नव मोद भरो ॥
तव यश गाकर मति बने मम एसा वली करो ।
म जसा सेवा म हाजिर खोटो अवा खरो ॥
और नही काहू ईच्छा मन चेरो अपनो वरो ।
मम हियमति मन माहि कलेवर अपना रूप धरो ॥
तुझे सहारा अमृत बल पा रच रच गुण सगरो ।
"वैद्य हरि' धनभाग्य होगया डूबे चाहे तरो ॥

प्रभु भजन

प्रभु निज भक्तन की रखवारी ।
समदर्शी करते तुम नित हो सदा अटल गनवारी ॥टेर॥
हिरण्यकशिपु दानव प्रह्लाद का भूधर से दिया डारी ।
तू ही रूप धरि अदश शक्ति का दास की विपदा टारी ॥
जामिनी कामिनी वियोग हर्त्ता रति मन मोद अपारी ।
राजारक के तुम्हहि सुधाकर बनहि चन्द्रिका प्यारी ॥
भक्त सूर तुलसी उलझे जब पिया नह मझधारी ।
ज्ञान नयन पकज भानु बन उघरे किरण हजारी ॥
द्रुपद सुता के चीर दु शासन खींचत करत उघारी ।
तुमहि चीर बन अपार होगय अन्त दुष्ट गया हारी ॥
माया मूसलाधार बरष रही ममता आधी कारी ।
"वैद्य हरि" को धीर बधाओ कर गोवधन धारी ॥

शुभमति कवित

शुभमति शाति की लता हरित हो-प्रभु गुण की तार हिय म फलेगी ।
आनन्द अमर यश पायके पूर्ण काम वासना की आग वारे हिय ना जलेगी ॥
मोद उपजावन की सदा ही जननी यह-खडग बन पाप रूप अघपे चलेगी ।
सूर तुलसी के हिय अमृत की धार बन "वैद्य हरि' के अब हिये म पलेगी

चेत चेत कवित

चेत चेत हरि वद्य अब हरि हित मिन-इसी विबुधापगा सहारे तर जा।
जग की विभीषिका बनी है भयकरी ईश बिना अन्त कोई काम
आयगा ॥

मूठी बांधे आया मानु उदरगादरी म तू-"हरि" यम गत चान खाली हो जायगा।
मन मधुकर धर ईश के कमल पद-जगयण और भी अमर पद पावगा।

प्रभु मैं शरण भजन

प्रभु मैं शरण तुम्हारी आयो।
सब साधन कर कर अनुभव मैं सुख कबहु नहीं पायो ॥टेर॥
दुख दरि हर्ता मोह फास म, आया जग लपटाया।
त्रिविधताप की अनल ज्वाल म जीव रहा मुनगाया ॥
दख जगत की सदा अशान्ति तब पद शान्ति हू पायो।
बुद्धिमान मिथ्या भ्रम जल्पत, वैद्य नाड़ी को थायो ॥
समझ चेतनर फिर अचेतवत् आलस नाग डसाया।
नही विश्वास यहा शान्ति सुख, इसभ्रम म भरमाया ॥
शास्त्र गुरु के पढ़ता सुनता सुखदाता तू कहायो।
आन पड़ो "हरि" पद सरोज म अलिवत मन ललचायो ॥

मैं तो हरि पद भजन

मैं तो हरि पद कमल लगू गी। टेर
धो तृष्णा जग भरम, करम की अमिट रेग भटकू गी ॥
छाट कपट जजाल मोह के प्रभु पद रैन जगू गी।
पाप पक औरभूठ द्वेष से अब तो दूर भगू गी ॥
ममानस की कर अलि रचना प्रभु मकरद पगू गी।
जग के भ्रमित कुमारग तज क प्रभु पद राह वगू गी ॥
हरि की माया हरि ही रक्षक हरि क नाम दगू गी।
जगनाता प्रभु के पान को मगल वच रखू गी ॥
"वद्य हरि' हू चरण कवल का धरत ध्यान निरखू गी ॥

मैं सखि प्रभु के भजन

मैं सखि प्रभु क प्रेम रिझाई।
भानु काटि सम जिन की शोभा शान्ति सुधा वर्षाई ॥
शबरी गीध अहल्या तारी मारी भी दुख दाई।
हरि चन्द्र की श्वेतशबरी हो मन कमुद खिलाई ॥
नखशिख कान्ति हुलस हुलस के मन मंदिर लहराई।

प्रेम पत्रिका हिय लेखिनी नित ताहू ही पढाई ॥
जाके गुण गा पाप विभूषित पापी हू तर जाई ।
ऐसे ईश की गुण गरिमा से भक्ति हिय सरसाई ॥
शत अनग की सुन्दर शोभा लाजी प्रभुहि लखाई ।
"वद्य हरि" के सदा कलेवर ऐसी छवि बसजाई ॥

मन हिय कमल भजन

मन हिय कमल नयन की कलपना ।
करहु निरन्तर पाहु अमर पद छोड जगत की भूठी भरमना ॥ टेर
शुक नासा भ्रू कपोल सुन्दर सुन्दर चिबुक सुगाथा जल पना ।
कचवेणी गुम्फित शीशन पर भाल तिलक कुकुम गा रचना ॥
कर्ण छिद्र म लटकत कुडल कनक छवि की बनी है झलकना ।
शख ग्रीव आजानु बाहु हैं उरविस्तत मुख प्रेम छलकना ॥
पदमानन मुख नयन कमल से चरण कमल बलि जाऊ शीशमना ।
"वैद्य" हरि तव मन्द हास्य पे नित योछावर शिवहू अपरना ॥

रसना प्रेम से भजन

रसना प्रेम से जगदीश । टेर ॥
रटती रह तू इतना तो री ! एक बार दश बीस ॥
पदा पोषण जग सहर्त्ता हैं अण्डन हू अधीश ।
प्रेम से कहति कहति नेम से कहति रह सहरीश ॥
सदा विराजत नित्य पूज्य हैं सब देवन के शीश ।
चरण कमल दावती नित लक्ष्मी उपर छत्र फणीश ॥
"वद्य" हरि धरि वसुधा उपर रक्षक सबही अहीश ॥

नयन तू भजन

नयन तू सहित नेह भरि देख । टेर
प्रभु रक्षक अतर्यामी हैं इक टक ज्योति पेख ॥
देखा जिसन पाया अमत अमर हो गय भेख ।
ध्रुव ने देखा प्रेम नजर से अमर भीन नहीं मख ॥
सूर तुलसी न अपन अनुभव देख लिख दिया लेख ।
भाग्य विधाता अग जग तारण लेखन हारे रेख ॥
'वैद्य हरि" [illegible]

मन में मन के भजन

मन में मन के आनन्द छाया । टेर
विषय भोग की सुन्दर वाला जामें चित नव नूतन भाया ॥
भोगत 2 थकी देह जब तरुणी प्रोढ़ा नाम कराया ।
सार नहीं यह झूठा झंझट कुछ 2 समझ मरम हिय आया ॥
नित अभ्यस्त स्वाभाविक छूटत नाहीं मोह की फास रे माया ।
एक दिन ठेस लगी मन चोटी तरुणी शर वाणी का चलाया ॥
दुःख पड़ा घट हुआ ज्ञान जग देखा देखी मैं पछताया ।
ईश चरण चल पड़ा भटक कर आनन्द राशि में आनन्द पाया ॥
कर उद्धार जगत अपने का "वैद्यहरि" तो पद चित लाया ।

रेमन सत्य भजन अन्तर्यामी

रेमन ! सत्य सुख हु यह जान । टेर
अन्तर्यामी को क्या खोजत नाहिं तुझे पहिचान ॥
घट घट सब स्थानन व्यापक नित वह ऐसा धर ध्यान ।
कमल नयन मुख हसी थोड़ी बाजत मुरली तान ॥
हर पल हर क्षण भ्रमत निरन्तर हर प्राणी के प्रान ।
आयु के कुछ क्षण प्रति दिन तू उसके गुण हू बखान ॥
अजर अमर आनन्द जाहि में होता नितनव भान ।
ऐसे दीन दयालु करुणा सागर कृपा निधान ॥
"वैद्यहरि" की पूर्ण काम के चरण धूलि में ज्यान ।

सिर तू ईश पाद भजन

सिर तू ईश पाद रज धार । टेर
जासे तिरी अहल्या नारी कर तू देख विचार ॥
चरण कमल पावन रज जाकी करती सब का पार ।
यही सहारा सब सुरगण का जो है स्वर्गागार ॥
आनन्द हू की आनन्द दाता सुख दे हाथ पसार ।
अभिलाषा शिव ब्रह्मादिक को मोसे और गंवार ॥
वैद्यहरि" धारण कर कंचन पाया अतुल अपार ।

भावना जाग उठी भजन

भावना जाग उठी मेरी ।
प्रभु की ज्योति हृदय धरन को बनन की चेरी ॥ टेर
मन पपीहा बन क्या नहीं टेरत तू दिन रन ।

स्वाति बूंद प्रभु दरश की पाने से हो चैन ॥
रंग चढा जब ईश प्रेम का नही लगती देरी ।
इसी असी की तेज धार से मरते काम रु क्रोध ॥
लोभ पिपासा मृग तष्णा भी कभी न करती तोद ।
मीरा ध्रुव के हिरद जागी जग की लोई गेरी ॥
इस दर्पण में मुख देखन की ईच्छा मेरे मन में ।
सूर तुलसी अरु अम्बरीष ने देखा जीवन क्षण में ॥
"वैद्यहरि" की हृदय कुटया चमकत साझ सवेरी ।

करुणा सागर महिमा भजन

करुणा सागर महिमा जानी । टेर
भक्त प्रहलाद सत तुलसी अरु मीरा सूर ने गति पहिचानी ॥
अम्बरीष और हनुमान ने व्यास सरीखे उत्तम ज्ञानी ।
परमहंस शुकदेव मुनि जो जन्म काल से हो गये ध्यानी ॥
सब सुख सागर सुख की राशि और हि सब आनन्द की खानी ।
यह जाने दिन रैन टरे भव दुःख की टारन हारी निशानी ॥
त्रिविध ताप संकट जग बंधन छूटे पास ज्यो बलहि थानी ।
यही सोच सेवा मे लगने की हू 'वैद्यहरि' ने ठानी ॥
सबकामना पूरन हारे दानी शिरोमणि के भी दानी ।
आयु नाश क्षण भंगुर देखी ज्यो धारा का चलता पानी ॥
यही पुरानो और वेदो ने नेति नेति कह सदा बखानी ।
ज्ञान जगत के सभी जीव की सदा निकलती उत्तम बानी ॥
सवासमझ फिर लख विराट को जानी गरिमा अर्जुन मानी ।
सती शिरोमणि अनसूया ने अत्रि ऋषि की परम सयानी ॥
भूतल सुतल तलातल चहु दिशि एक यही है आनी जानी ।

मेरे चित मे लगन भजन

मेरे चित्त मे लगन लगी । टेर
ईश रूप साकार दर्श को नित नित चाहजगी ।
झूठे जग माया प्रपंच में मैं नित रही ठगी ।
मान बडाइ ईर्ष्या तृष्णा मन से नहीं भगी ॥
क्वचित काल सुविचार सरणि में प्रभु के प्रेमपगी ।
शान्ति कला नाहिं काहू कही चिन्ता अनल दगी ॥
'हरि' भरमो मे मन भरमा अब भगवत चिह्न वगी ।

लक्ष्मीकान्त राग साहनी विराट् प्रभु की

लक्ष्मीकान्त सुरेश पति की श्राजु शोभा घनी बना।
सजनी विकसा हृदय बनिया देख मानु सीमन्ती ॥
रमणा निधि दनुजारि की माया यह नाच नचारही।
विश्वेश की अखिलेश की शोभा सजहि मन भा रही ॥
दग नभ राकेश प्रतिभा याद प्रभु की आ रही है।
दख उडुगण की सुमाला सूक्ष्मतम बरणी जा रही है॥
देख रूप विराट का जो छा रहा सर्वत्र है।
भूमितल तर अतल सुतल म व्याप्त यह गवश है॥
तरु नदी और श्री हिमालय शस्य श्यामल उर्वी भी।
उदधि जग के अति भयकर जीव जितने गुर्वी भी॥
उनम सत्ता ईश की जो दुख सुख दिया रही।
मह सूय दव की मजु रश्मि जलज मुख विकसा रही॥
श्री दिवाकर की किरणो में तेज उसका छा रहा।
नभ म बादल गजकर कही बीजली दर्शा रहा॥
जल को पा कही हरित दूर्वा मोर दादुर जोर है।
पूर्ण चन्द्र की शारदिका अमृत कर्णामृत भोर है॥
जिनकी रज को धार शिर पर प्रकृति जग रचने लगी।
श्रोत प्रोत हो प्रभु गुणो म प्रसव धर्म नित मगी॥
सब व्याप्यादर रा उसन रच अण्ड का यह सजा।
कोटि अण्ड क स्वामी सन्मुख विपुल अपनी डी बजा॥
भरण पोषण से सुरक्षा इसकी नव नित कर रहा।
प्रकृति के कनक स्तनो म पयस मीठा भर रहा॥
यह ही विश्व विराट प्रभु का दृष्ट रूप अनूप ह।
सब व्यापक समझ 'हरि मन क्यो पडा भव कूप है॥

साझ समय विष्णु आरती

साझ समय नीराजन वेला लक्ष्मीकान्त की हुई आरती।
सुर नर ऋषि मुनि नाग लोक के लोक सुनावें मधुर भारती॥
धूप दीप कपूर गध से आल्हादित हो नयन ञारती।
शान्त शील श्री पदमनाभ प्रभु भुजग शयन पर फूल डारती॥
सकल विश्व आधार कान्ति नभ वारिवाह सी वर्ण सारती।
अखिलेश्वर करुणा सागर के सुदगण पर प्रेम भारती॥

भव भय हारी पाप तमारि के चरण टेक दिया शीश पा-रति ।
योगिध्यान म नित छवि वसति नाहि 'वैद्य हरि' हृदय टारती ॥

तृतीय विश्राम समाप्त

मेरे तो भगवत् कृपा भजन

मेर तो भगवत कृपा सहाई । टर
ग्रान पडे जो दुःख शीश पे हरति सब बुट लाई ॥
सुख सम्पति जे पते प्राणी करते प्रेम मिताई ।
भगवत प्रेम सभी से करते स्वाथ प्रेम है भाई ॥
तुलसी कृपा परमपद पाया जगहु अमरता छाई ।
सदानद दाता प्रभु सगरे करत दूर तम काई ॥
मोह माया नागिनी खाने को जीव क्लेवर धाइ ।
गभवास ज्वाला म तापित ईश शयय म खाई ॥
बाहर ग्रान पडा इम लाव प्रभु महिमा नही गाई ।
प्रभु की दीन दयालुता पे म वार बार बलि जाई ॥
जुग बीता माला फेरतहू, फेरहु ग्रक्षर ढाई ।
ग्रालस द्वेष कपट वेशन को काटन वन जा नाई ॥
दिन दिन दूना प्रेम चरण हो वही भक्ति मैं पाई ।
सोते उठते खाते पीने लेत हु जभी जभाई ॥
राई को पवत तुम करते पवत हू को राई ।
नान सुगरिमा के दाता अज्ञान पापिनी ढाई ॥
तोरी कृपा सबहि जग देखी नही जानहु जनाई ।
भव दुःख सकट काटन हारे सबहि पाप न शाई ॥
"वैद्य हरि तव कृपा ग्रासरे करे गह गुज राई ॥

प्रभु गुण दोहा

प्रभु गुण गाये नाम हा तव क्या ग्रौर नगाय ।
जग इसको समझे सदा ऊचाहाथ वढाय ॥
सुख शरीर की कल्पना जा मे ईश्वर प्रेम-
रोग कीजवही देह म, व्यथा-नाहि तहनेम ॥
स्वस्थ बराबर सुख नही पिता मनहु यह जान ।
ता मे स्वण सुगंध है ईश्वर का जह मान ॥
सुख मे ईश्वर मूल्य है दुःख म एक छदाम ।
स्वाथ मे सबही भजे विन स्वाथ के दाम ॥

ईश्वर की कृपा हुई संवत दश की माल ।
दो हजार के मायन मन गूथी माल ॥
पहनाई प्रभु के गर जाम प्रेममणी ।
अनंद मय हो भा गई तन म करिण करिण ॥

ईश्वर के दरबार म जो कोई करे पुकार । न्यायाधीश भगवान है करत बेड़ापार ।
जिसकी जसी भावना जस फल की चाह । ईश्वर के दरबार में वही मिले प्रवाह ॥
ईच्छा काहू की नही चाहता भक्ति विवेक ।
राम कृष्ण गुण नित रटू शांतिसहित हरेक ॥
माया जगपति देव की व्याप रही सवत्र ।
संकट मोचन नाम भी उनका है यत्र तत्र ॥

मैं तो चली—भजन सर्वव्यापक ईश

म तो चली नर्मदा पार प्रभु की गुण गरिमा गाने ॥ टेर ॥
मारग मिली प्रेम मयी मीरा गाती गुण अनुराग ।
ईश्वर सभी जगह है व्यापक लख मन मंदिर बाग ॥
भक्त सूर गुण गावे प्रभु का मन उल्लास भरा ।
हिरद से जाने न देहू प्रभु–यह है प्रेम खरा ॥
तुलसी संत कथानक रचदी रामायन की भारी ।
ता मे शंकर भोले बोले व्यापक सब मुरारि ॥
तुलसी संत की बहती देखा राम प्रेममयी गंगा ।
भक्ति वक्ष के कमल खिले थ देख होय मन चंगा ॥
प्रेम कलेजे देख सखी के प्रकटे श्री भगवान ।
खम फाड प्रहलाद बचाय मार दैत्य बलवान ॥
उनकी माया शक्ति सभी जग फल रही री भोली ।
मैंने देखी, मीरा बोली भरो त्याग की झोली ॥
सूर तुलसी का वाणी विच बिच रूप प्रभू साकार ।
कहनी देखी निराकार भी–भ्रम म पडी मभार ॥
निराकार साकार उसी के रूप संत ने गाय ।
दृढ मन क रखने इच्छित फल "वैद्य हरि" ने पाय ॥

ईश को हिरदे माला—भजन इन्द्रिय एकादश सम्बोधन

ईश को हिरदे माला पोई ॥
फेरा प्रेमहु मनीराम तुम अंतर दृष्टि होई ॥ टेर ॥
कहत नयन सुनो रे कानो धर्म न्याय मैं देखा ।
पामर जीव अधम ने प्राणी होता उनका लेखा ॥

रसना बोली स्पर्शेन्द्रिय से छूकर देखो माला ॥
कमल चरण की लेहु सुगन्धि द पखुडी म ताला ॥
वाणी प्रभु गुण गाती कहती मदद करो रे हाथो ॥
पैरो नम्र हाथ खुल जाओ झुक झुक टेको माथो ॥
गुप्तेन्द्रिया तुम त्यागो मल को जीतो काम विकार ॥
मन राजा के साथ स्नेह से ले लो मन्त्री भार ॥
अन्य जीवो को बना सिपाही कर सेना तैयार ॥
द्वेष कपट मद काम क्रोध को जीतो धीरज धार ॥
कर कल्याण दु खी जीवा का दे द सुन्दर सीख ॥
हरि नाम को खूब निभाके पीवो मजुल ईख ॥
ऐसी माला दशरथ हो के फेरो करो प्रचार ॥
जगदीश्वर अपनावेंगे कर बेडा सबका पार ॥
"वैद्यहरि के" मन ने अनुभव कर पाया आनद ॥
सब सुख दाता सब मनोरथ वही सच्चिदानन्द ॥

लोकेश विष्णु स्तुति

तर्ज—रामचन्द्र कृपालु भजु मन (राग सोहनी)
लोकेश विष्णु हारी भव भय भजहु नित मन प्रेम से ॥
शान्ति सुख के अमरदाता श्रीपति को नेम से ॥
दया सिन्धु सुदीनबन्धु नाथ तव पद लाईये ॥
ससार सागर के अघेर स तिराने धाईये ॥
कमल लोचन मुख कमल और पद कमल म मन अली ।
पान कर मकरन्द का त्यज मोह माया खल थली ॥
शीश मजुल केश है शोभा मुकुट की है बनी ॥
लोक पावन तापत्रय विघ नाशने है प्रभु धनी ॥
भाले त्रिपुण्डर कर्ण कुण्डल कांति सूय लजावती ॥
मन्द हास्य की माधुरी ज्यो रति मनोज सुहावती ॥
मुख सरसता कम्बुग्रीव की चिबुक ओठनि अरुणता ॥
आजानुभुज उर भृगुलता रोमावली की विषमता ।
लख नील नीरद नीवि छवि मन हृष अति उपजावती ॥
कटि पीत पट की चमक चपला की चमक भनकावती ॥
कर धनुष शारग देख क वजयन्ती माल को ॥
शेष शकर सुर मुनि लख धन है जीवन काल को ॥
पाप तम नाशन को दिनकर मजुता राकेश सी ॥
पुण्य अम्बुज को खिलाने सुप्रभा है दिनेश सी ॥

शोभा सुधाम पूर्णकाम प्रियवर सनकादिकम् ॥
धर रूप नौका सप्त ऋषिवर रक्षित प्रलयादिकम् ॥
आनंद कंद कृपालु विष्णु मम सुरधाम कीजिए ॥
चरण कमल है आसरा "हरि वैद्य" को गह लीजिए ।

आज मोरे हिरदे—भजन

आज मोरे हिरदे बहुत प्रमाद ।

छाया ईश गुणी को गाने नित आनंद समोद ॥ टर ॥
नारद शंकर शेष सभी ने वंद नेति कह गाया ।
उसी चराचर स्वामी वश है देव दनुज सब माया ॥
पदम नाभ की आदि सृष्टि मे जिनसे ब्रह्मा पावन ॥
कमलनालगत कोटि तपस्या करो प्रभु मनभावना ॥
अखिलेश्वर की हुई कृपा तब सात ऋषि रच दीन्हें ।
आदि सृष्टि के यही प्रवर्तक प्रकृति पुरुष से कीन्हे ॥
उसी सृष्टि में हमसे पामर नही सृष्टि अधिकारी ॥
तदपि क्षमा सागर ने कीनी प्रेम कृपा सिर डारी ।
अब तो प्रेमी मित्रो ऐसे दीनानाथ की स्तुति ॥
करते रहो "वैद्य हरि' मन से यही प्रभुकी विभूति ॥

सब चाहत मान बडाई जीवन हे-भजन

सब चाहत मान बडाई ॥

कोई प्रभु के मंजुल गुण गा हृदय कमल हलसाई ॥
कोई पुस्तक लिख जगज्ञानी से पाता सन्मान ॥
कोई कपट पाखंड द्वेष मे धावत सब ही स्थान ॥
कोई संचय धन हित भागे देश विदेश सदा ॥
कोई साधु कोई पंडित रमते विश्व कदा ॥
कोई भोगन विषय भोग संसार में जे मन भाय ॥
कोई सचाई सज्जनता से नारायण ढिग आय ॥
कोई भलाई से प्रसिद्ध हो जग में नाम कमाता ॥
कोई बुराई धारण करके अप्रिय जग हो जाता ॥
वैद्य हरि न मन में समझा कौन मार्ग है साचा ॥
ईश्वर की गुण गरिमा ए मन ! गा जो जगहि राचा ॥
और अमरतास सब ही नश्वर रहती यह युग काल ॥
ऐसा सोच हिय कीर्ति में गाई दीन दयाल ॥

यही बडाई मान हृदय मे जिनके नित ही आवे ॥
ते बड भागी सफल लाग हैं जीवन धन्य बनावे ॥
ऋषि मुनि और साधु सत सब चाहते हैं नर नारी ॥
कोई राग बैराग घाटकर हो गृहस्थ सचारी ॥
तुलसी सूर मीरा बाइ के हृदय कमल मे विकसी ॥
मान बढाई राम कृष्ण के प्रेम की गगा निकसी ॥

मेरे तो दीन दयाल–भजन

इष्ट देव है मदा सयाने प्रेम की मूरत खरी ॥
वा के चरणन सदा शीश रख नैण सू नीर ढरी ॥
गदा चक्रधर पदम शख से मो पर कृपा करी ॥
नील कमल शुभ अ ग, कमल सा मुख देखत हु तरी ॥
रोम रोम पर वारि जाऊ गुण गरिमा डगरी ॥
धोइ मरी पाप कालिमा पक लगी सगरी ॥
प्रभु बिन नाही कहु सहारा पल भर एक घरी ॥
ईश प्रदत्त सुमति की सपदा टारे नही टरी ॥
जीव की बुद्धि विषय भोग मे पच पच सदा मरी ॥
वैद्य हरि गद तारण की प्रभु गुण हैं अमर जरी ॥

प्रभु मोरे–भजन

प्रभु मोर नयन पटल मे आये ॥ टेर ॥
नव बादल शोभा सरसिजसी चन्द्र मुखहु छवि छाय ॥
केकी पच्छ पखुडिया मुकटनि मद हास्य मुख भाय ॥
मदु आनन वेणु रव करते छिद्र हु अ गुरि लगाये ॥
छलित मच कुछ नमन मटक कर शोभित कटि झुकाये ॥
कुण्डल ग्रीव शीश चरणन की चपल गति सरसाये ॥
कटिहु पीतपट करानि पहु चिया गल बन माल सजाय ॥
राधा जसुदा नद गाप के मन मे गानन्द जाये ॥
वैद्य हरि भी हृदय कमल को मुद हो फिरे खिलाय ॥

झुक सिर—भजन

झुक सिर हरि पद कमल सदा ॥
साधन जन्म तुम्हारा होगा कृपा मे उनकी कदा ॥
पाप दैत्य दानव पर चलती उनकी सुदृढ गदा ॥
नारायण के सुप्रभाव से छूटे फास द्वन्दा ॥

अजामील को यम दतन से न बचे कृपा तदा ॥
मातादर के गर्भ काल में जो बुद्ध करी वदा ॥
भक्त पियारे अवतर ते जब ग्लानि धर्म की मदा ॥
वैद्य हरि ने मोद ुपाया पावन पद एक दा ॥

तन मे रोग-भजन

तन में रोग कारिमा लागी ॥ टेर॥

दूर करन अरु खाने धाया नहीं टरनी है अभागी ॥
दृशता छाई राम रोम म काम कामना जागी ॥
वैद्यराज एक मिले सयाने, दवा बताई नागी ॥
नारायण का चूर्ण रात दिन सेवन कर तू भागी ॥
इससे होगी रोग कालिमा नाश मेर मन अनुरागी ॥
नारायण की जीवन बूटी मन उपवन में लागी ॥
सदा सुरक्षित रखना इसको सब रोगा की त्यागी ॥
वैद्य हरि चालीस वर्ष म सेइ हो अनुरागी ॥

मैं हरिनाम-भजन

म हरिनाम के मोदक खाय ।

मनघट म बुद्धि झरने से गोला गोला सु पचाय ॥ टेर ॥
ज्ञानेन्द्रिय के बेशन म सुखवत सिता लिपटाये ॥
अमर मधुरता रसना चख चख दन्त न जान अघाये ॥
देह कढाई म रख, दी ही, मद आंच सुलगाय ॥
मधुर मधुर तम माधुरी वर्णन गद गद स्वर से गाय ॥
जह देखू तह छवि निराली घट घट मन के पाय ॥
स्वय खाय कर वैद्य हरि ने बाधव, प्रिया, खिलाये ॥

ईश कृपा कवित

ईश कृपा से बन जोग सुजसको मनको लगाना बडी टेढी मेढी खीर है ।
मति की परीक्षा देनी पडती है रातदिन हसज्यो निकालत पयसमाहि नीर है॥
चोखे चाखे उपवन जब फले सबही बडे भाग आनन्द से खाव ज्याही कबीर है।
आनन्द निधान करुणा क पारावार की कृपाहु बढत बढे द्रोपदी का चीर है॥
गुण गान गाय जा के मिलता अमर पद-अनुरागभरी वाणी भवतर जायगा।
राजा महाराजा बडे कोटाधीश जनम नाही पाया चन पछताता रह जायगा॥
स्वर्ण सयोग यह मिलता कृपा स जाको-मन थाम धार धीर दिव्यमणी
पायगा।

भगत धनी की धरी समता मनहिं "हरि"-ऊंचा रहे पलडा जो
हरिपल खायगा ॥

ज्ञानदोह

जगके वहूल पचेड हैं नर को पकडत खाय-नारायण इक आसरा
वह ही सदा बचाय ।
गजमुन गिरिजा तनयजे सोहन मगल रूप-आखु वाहन भक्त क
टारत विघ्न अनप ॥

प्रभु बन भजन

प्रभु बन केवट-नैय्या हाकी ।
भवनार की चपन तरगें टकराती हा वाकी ॥ टर
ज्य नाविक की देखन चाहो निशि दिन सुन्दर झाकी ।
बन विराट खेवन को नौका, खेवत है ध्रव म्हाकी ॥
समदर्शी वो खेवनहारा जान न म्हाकी थाकी ।
लेवो खबर प्रभु मान हमारी, सुध बुध नहीं यहा की ॥
नैय्या चलती सबकी है पर सबकी न घर सब वाकी ।
अजब निराली माया उसकी गति न जानी जाकी ॥
जो नैय्या मे बैठ तर गय ध्रव प्रह्लाद भक्त की (भगताकी) ।
वैद्य "हरि" की उतर गई, ले, मान बडाई जहा की ॥

प्रभुजी भजन

प्रभुजी तुम हो दीनदयाल ॥टर॥
करुणा सागर कृपानिधि बन करते जीव खयाल ॥
पूरण काम सिधु आनन्द के दाता सुखहु रसाल ।
आनन्द राशि सच्चिदानन्द हो तारण हारे हाल ॥
दीनबधु रक्षक कहलाते, कालहु के भी काल ।
परम आद्र कर दया बचाते अघ राशि के गाल ॥
आत्मा राम को मन अभिराम को रट छूटे जजाल ।
पाप पिशाच से रक्षित करत बन कर पक्की ढाल ॥
वैद्य हरि के लिखो लेख जा शुभ नित होवे भाल ।

हृदयाङ्गण के भजन

हृदयागण के मृदु सिहासन हे हरि आन विराज हू ।
सारी कृपा दु ख दारिद भागे भागत निशिदिन काल हू ॥
गति तव चरणे सदा रहु थिर यह सुदर वर माग हू ।

प्रेमहु पियार प्रभु गुण गान करिये ॥
प्रार हु प्रपचों मे चित्त को हटाय प्राणी ।
सब मोह माया छोड ध्यान ब्रह्म धरिये ॥
लाखा की सदा से चली आई यह कुरीति रीति ।
करें निन्दा सब झूठी वहाँ ना ही चरिये ॥
सदा ही सुमगल पावन यह सध्या प्यारी ।
बैठ हरि गुण गाय भवोदधि तरिये ॥
ईशाकी गुणावली सुमन हिय धार प्रिया ।
वाही के चढाय पोय माला प्रेम डोर की ॥
साझ सवेरा दिन रात घटी पल बीती ।
बीतें ऋतु मास नाहि भ्रम कर भोर की ॥
कल के भरासे रक्खा काम गुण गान का ।
नाहीं यह सुनीति बात कहु मन मार की ॥
मेरी मति नत नम प्रेम उन चरणनन ।
"वद्य हरि' आश बाधे नाही कहु और की ॥

राम दोहा

राम कृष्ण के पद कमल हृदय कमल से मिलाय ।
दु ख रत्ना र पार हो दृढ मन सुधा पिलाय ॥
उद्य हरि ठढी बडी जगत पोत की छात ।
प्रभु नाविक के आसरे चढेवे भागी कहान ॥
काल चक्र की देख क चलती गदा कराल ।
अमर नाम गुण गा प्रभु होजा नर तू निहाल ॥
तुलसी सूर सुवास से हुई हरि मे गध ।
प्रभु चरण मे लग गई पा मुद मोद प्रबन्ध ॥
कृपा हुई जगदीश की में पाया आनद ।
गुणावली विभु प्रेम की गाथा सच्चिदानन्द ॥
सब आशा छूटती जभी तभी तुम्हारा आश ।
तुम्हरी छाडे हायगी प्रभुवर चहु दिशि त्रास ॥
राग द्वेष त्यज ए प्रिया ! ईर्ष्या मान गुमान ।
लोभ क्रोध पाखड छल दश मिलेगें ग्यान ॥
लोक बडाई देखके उत्सुक नरका मन ।
होना क्या प्रभु प्रेम म दुख नहीं व्यापे तन ॥

सहित जीव मय विश्व को देखत हुआ उदास ।
जीव जीव को खात है, बिन ईच्छा प्रभु दास ॥
कलि म प्रभु मानू नहीं नीति आपकी खास ।
प्रभु प्रसन्न ह, दीनता, दख दरिद्री दास ॥
प्रभुवर दास दरिद्रतो ना माने इस काल ।
मन्दमति कगाल की वुद्धि चले कुचाल ॥
भूखे भजन न होत है कहते लोग गुपाल ।
कुछ भक्तो को दीजिए दाता दीनदयाल ॥
विश्वम्भर तब नाम है अन्न वस्त्र सब देहिं ।
पाव तीन अन्न, तीन गज वस्त्र सदा सब लेहि ॥
मन सब दिन नहीं इश मे लगता मित्र सदा ।
होता कुछ-कुछ अन्य मे व्यस्त ह यदा कदा ॥
युवती रूप कुरूप हो तो भी मनहु विकार ।
देखत निश्चय पिघलता घत अग्नि आधार ॥
सेवन समरण नित बढे कामाग्नि की लौय ।
जो चाहो बचना सदा सात्विक पथ मन खाय ॥

प्राणी गाठ भजन

प्राणी गाठ हृदय की खोल ॥ टेर
लख चौरासी योनि भरमत पाया देह अमोल ॥
सौदे तोले झूठ जगत के ईश नाम अब तोल ।
तुलसी सूर, पीया मीरा ने प्रभु मिश्रत विषघोल ॥
विष प्रभाव सब आधिव्याधि मिटि होगया कचन चोल ।
गथि खालन का यह मत्र है राम राम मुख बोल ॥
सच्ची गाठ कोई एक खोलत झूठ बजाते ढाल ।
प्रभुवर के दरबार जगत मे कभी न चलती पोल ॥
"वैद्य हरि" प्रभु चरण सहारे करता है कल्लोल ।

मनमदिर की सवय्या

मन मदिर को अल बेली कुटी म मूरती प्रभु की राज रही ।
हियमती कलेवर राम रोम मे द्वीप्ति उसकी भ्राज रही ॥
दुष्ट दु शासन पीडा से, तब कृपा पाडु वधू लाज रही ।
जसुमति नद, भाग्यशाली नित आगण मुरली बाज रही ॥
याद करहु नित प्राणी प्रभु, सिर काल की विद्युत गाज रहे ।

घनघोर घटा दुख जजालों की, जीव नीडर, घर छाज रही।।
प्रेम पियार से नैनो मे छवि निशि दिन तोरी विराज रही।
तव मान सरोवर मोती चुगने "हरि" हंसिनी आज रही ॥

हरिजी तोरे भजन

हरिजी तोरे चरणन आन परा।
दुख दरान भवसागर तारण त्र तेरो आसरो। टेर
बहु विधि देखा सद्‌विचार से मददगार तू खरो ॥
पाप पिशाच हरन अघ-किरपा तेरी जाय जरा।
तम पूरित कमज हैं कलेवर अब तो प्रकाश करो ॥
कम बन्ध की कठिन डोरी मे बधो जीव सगरा।
अनुभव तारी शरण सार है अरु जग सब भगरो ॥
कठिन काल कतव्य दस मरो जीवन जाय डरो।
मति, देव की, उदर मध्य बिच कृष्ण का रूप धरो ॥
तव यश विमल पताका फरने मम मन सदा फरो।
भाव सदा तव चरण भक्ति का हृदय कमल हू भरो ॥
"वैद्य हरि' तन तीन काल की बाधा ईश हरो ॥

विश्वेश्वर भजन

विश्वश्वर रक्षा करो तुमही रासन हार।
मेरी नाव बचाइये नाव पडी मझधार ॥
अब तो दया कर दीजिए प्रभु धीर बधान वाले।
दुनिया के जजाल मध्य फस निकला चाव प्राणी ॥
पर कर्मो का भोग पबल है सत्य शास्त्र की वाणी।
तुम स नाविक जगत पोत स पार लगान वाले ॥
जब रोगी के निकट मौत धर रूप भयकर आती।
वद्य डाक्टर मन्त्र वाले ज्योतिषी कुटुम्ब सधाती ॥
कर उपाय जब हार थके तुम व्याधि नशान वाले।
मान बडाई गेह धाम हित नर कर वहुत उपाय ॥
कदम भाग्य वश श्रमाल्पता स सिद्धि कछु न पाय।
दुखी दीन कर्तव्य मूढ को राह बतान वाले ॥
शी तउष्ण अरु क्षुधा प्यासभय जब ही सताते जनको।
कष्ट नदी के बीच भवर मे नही थिर पाता मन को ॥

राम नाम का है आधार गिरिवर को उठाने वाले ।
सजन सनेही सुत साथी से जिन धन का अपमान ।।
त्रिया पुत्र मित आज्ञा बाधक ऐसा होता भान ।
शोकानल से दग्ध हृदय मे सुधा सिंचान वाले ।
भव सागर की चपल तरंगें चाहती सदा डुबान ।
वैद्य हरि के चरण कमल सिर धर के जगाने वाले ।।

मन लगा दोहा

मन लागा प्रभु पद कमल नयन युवती के रूप ।
तदपि विकार न उपजे अनुभव कहा अनूप ।।

सगत के सदुपाय से निश्चय जीन अनग ।
अनुभव यह प्रत्यक्ष है कच नित कुसुम तरग ।।

रहसि देह रमणी सुहृत् कबहु नयन मत देख ।
ऋषि मुनि पडित मन सदा विवश मीन नहीं मख ।

पिता है भजन

पिता है निधन के धन ईश । टेर
पालन पोषण नित रखवारे विश्वम्भर जगदीश ।।
जग मे नर बहुतेरे दावे कहने मैं हू अधीश ।
निधन दारिद कभी न टूटा अगणित हुए महीश ।।
नाम सन इनके कहन हैं मुरलीकर गिरीश ।
गदगद वाणी रटले प्राणी पूजन सदा हरीश ।।
वैद्य हरि धन अतुलित पाया चरण कमल रख शीश ।

जिसने भजन

जिसने हरि पद प्रेम पिया । टेर
कलिमल नाशक पुण्य रूप फल अधिक तिन्हान किया ।।
हरि गुण गा जा की अमरध्वज फरकी ते जगत जिया ।
और हु तारे आप उधारे धन्य सुयश लिया ।।
जग की लाज हरि हित छाडि सुत मित धन औनिया ।
मख रखवारे ऋषि मुरन के तिन यह सिर राखिया ।।
प्रभु पद पकज आन पडे जग झूठे म अधिया ।
लोक कीर्ति परलोक धम की अम्बुज राशि चिया ।।
वैद्य हरि की हृदय मढी म बसते राम सिया ।

हरि आरती

ॐ जय जय सदा हरि !
खंभ फाड हिरनाकुश मारे नरसिंह रूप धरि जय
राणाभेज्या मीरा मारण प्याला जहर भरि ॥
हरि चरणा मृत मीरा बाई पीया हर्ष करि जय
चोर करण तुलसी घर चोरी आये रात मझार ॥
राम प्रभु ने रक्षा कीन्ही खुद बन पहरे दार जय
संत तुलसी ने सब कुछ त्यागा कष्ट राम को जान ॥
शरण गही श्री असुरारि की कर गुण हिरदे गान जय
सूरदास न बाल कृष्ण गुण गाय लाख हजार ॥
प्रभु प्रेम का अमर द्रव्य यह लेलो बुद्धि पसार जय
अंतर्यामी सभी जगत के तुम रखवारे श्याम ॥
चरण शरण हूं तेरी मैं तो सबके पूरण काम जय
दुःख दरिद्र भक्ता के काट तुम हो करुणाधाम ॥
पामर जीव खडा तव द्वारे करता सदा प्रणाम जय
करुणा सागर नटवर नागर सब सुख आगर ईश ॥
शंकर प्रिय हो मुनिमन रंजन शारद अरु फणीश जय
भाग्य विधाता हो तुम सुख के देते सम्पत्ति दान ॥
मैं मतिमंद अधम हूं तो भी करते कृपा महान जय
आत्मा राम पूरण काम शोभा प्रिय घनश्याम ॥
यशुमति नंद जगत उर राची अरु हिरदे बिच मान जय
आरती जो हरिनारायण की प्रेम पूरण गाव ॥
वैद्य हरि सुख सम्पत्ति भक्ति ईच्छित फल पाव॥

दोहा नास्तिक प्रति

जन मन के बदले सदा बदले समय अनक–इनका स्वामी ईश है चालक सबका एक ॥
मानत जो नहीं ईश को ते भ्रम पडे गवार–प्रकृति कोप होकर करे ईच्छित फलहु असार ॥

है घर का मेरा सागी भजन मिथ्यामोह

है घर का मेरा सागी ।
मातु पिता बान्धव सागी है सुतदारा मितरागी ॥
धन वैभव भूमि सागी है सागी घर की आगी ।
भ्रम का पदा हिय पडा तब कोई न सागी सागी ॥

साथी हमारी वन की लकडी तन सग अग जलागी ।
धम कम अध सग चलेंगे अब तो साच अभागी ॥
जब व्याधि "हरि ' पीडित करती ज्ञान चेतना जागी ।
तब जगदीश्वर याद होत जब मृत्यु कालिमा लागी ॥
लख पछतावा आत्म मंदिरे यम की फासी आगी ।
परहित कारिणी ज्ञान गुराणि वार बार समझागी ॥

साथी दोहा

साथी साथी सब कह पितामातु सुत दार ।
साथी वन की लाकडी धम कम सतसार ॥
पाप कम अरु व्याधि का आन पडे तन भार ।
चाहत बाधव बाटन नही बटता लाचार ॥
राजा रक ऋषि मुनि तन अपने के भोग ।
खुदही देवे भोग ते सब साधन सब लाग ॥
यह विचार मन धम स ले नारायण नाम ।
नौका अपनी तारल भजु मन राधेश्याम ॥
सब्दि चार सत्सग से सन्मति मिले विवेक ।
शनै शन अभ्यास म जीतो मनहि चितव ॥
मन जीते सब की विजय जान बुद्धि नर [illegible] ।
यह नेता बलवान है सर्वेन्द्रिय सिर ताज ॥

अब तो भजन

अब तो जगपति सुना पुकार ।
काम लोभ के गहन मन म अब [illegible] ।
अगम अथाह पाप परि [illegible] ।
अब तो टारो कृपानिधि [illegible] ।
मति मन अवा [illegible] ।
सुख शाति की अब [illegible] ॥
जोर नहीं चलना [illegible]
वैद्य हरि क [illegible]

जयति जय आरती लक्ष्मी रमणा की

जयति जय जय लक्ष्मी रमणा—भक्त के पाप हरण टरणा ॥ टर
सोवत हैं शेष नाग शय्या—करत सेवा लक्ष्मी मैय्या।
छाय फणीन्द्र नित छय्या—जगत सब रहता है शरणा जयति
हाथ में शंख चक्र राजें—छवि मृदु पद्म गदा छाजै।
देश से दारिद नित भाजे—जीव के सब कारज सरणा जयति
शरण में मैं पामर आया—करो अब मेरे पर दाया।
विश्व की हो तुमही काया—सभी अघदोष क्षमा करणा जयति
तव गुण गान वेद गावें—सुनत नर मुनि मुनि हर्षावें।
विश्वपति मेरे मन भावें—नयन नित चरणन में धरना जयति
हो तुम तीन लोक स्वामी—बसत सब घट अन्तर्यामी।
अहं तव माया अनुगामी—तुम्हीं हो तीन ताप जरणा जयति
कीर्ति सब सुर मंडल गावें—ब्रह्म शिव प्रेम ध्यान लावें।
तदपि तव पार नहीं पावें—आप हैं सब तारण तरणा जयति
प्रभु हो तुम करुणा सागर—भरण कर देो धन गागर।
मति मीरा नटवर नागर—हिय में नित प्रकाश करणा जयति
कृपा से हरित भरित प्रभुवर—अभी तो वरदो विश्वम्भर।
जगत के स्वामी कमलावर—विश्व के नित पालण भरणा जयति
जग रूप विराट तेरा है—वह सागर भू डेरा है।
गिर-हिम-पर्वत घेरा है—तह बहन श्वेत झरणा जयति
ले धूप दीप कपूरा—प्रिय मादक मृग मद चूरा।
यह नीराजन सब पूरा—मन मोद नहीं डरणा जयति
मृदुगन्ध फूल की माला—डाली गल दीनदयाल।
"हरि" हृदयाङ्गण उजियाला—दिया पाद पद्म धरणा जयति

जय जय आरती नंदकिशोरकी

ॐ जय जय नंदकिशोर।
सुभग नाम रतना कर भव भयहारी मोर ॥टेर
कंसारि देवकी के प्यारे तुमहो विश्वपति।
तव गुण महिमा गाये बढ़त नित्य सुमति जय
प्राण पियारे श्री वसुदेव के किया नंद घर वास।
आनंद धारा उमडी जसुदा घर में हुलास जय
बालकृष्ण छवि व्याज विलोकी पूतना विपद लगाय।

मुखधन दिया प्रभु के प्राण पिये हपाय जय
वेला शयन पान्ने पोढे कर उलटी शक्टी।
दधि माग्वन भ टोग शोघ स्दा भक्टी जय
माखन दधि अरु प्रेम के भूखे श्याम करत कल्लोल।
भाड महि मव डारे ते यशुमति मन मोल जय
गोकुल मव उत्पात मिट और छाया अखिलानद।
नद यशोदा ग्वालिनी मन म अति आनद जय
मोर मुकुट कटि श्वेत घु घरु तन भुगली छाई।
भालतिलक गोरोचन सब जन बलि जाई जय
श्री घनश्याम पुत्र देवकी की कीर्ति धवल गाई।
धूप दीप कपू र स दधि माखन लाई जय
समन हृदय कमल से मैंने दी गोविन्द मुख माहि।
आनद उमग कृष्ण ने खाय मन मुलकाहि जय
वैद्य हरि मन प्रेम नदी की बही मधुर धारा।
चरण कमल मे धाय आर बाधव दारा जय

विश्वपति की प्राथना

विश्वपति नाकेश भव भयहारी हृदये धर सदा।
चरण जाके नटिनी माया नाचती सब सपदा ॥
नव नी र नीरद देह प्रतिभा विश्वमन नित मोहनी।
मुकुट कु डल मुख अरुणता भाल मृगमद सोहती ॥
शारङग धनुप आजानुभुज उर भगुलता की रेख है।
कमल लोचन कमल मुख कर चिवुक भकुटी सुवेम्व है ॥
वैजयन्ती गल सुशोभित पीतपट कटि चमकती।
चक्र शख गदा सुदशन शक्ति नव छवि दमकती ॥
मन भ्रमर यह कमल म पीले मधुर मकरन्द को।
मेध पपीही तरसती तव दया स्वाति बू द को ॥
स्मर दीन बधु सप्रेम भक्ति सुख निधि कमला वरम्।
विष्णु जगदीश्वर कृपालु सत्यानद कलेवरम् ॥
पाप तम दानव प्रभाकर कोमलाङग शिव प्रियम् ॥
नमति शुक सनकादि सुरगण ऋषि समूह जितेन्द्रियम्।
कथयति हरि वैद्य श्रद्धा शिर धरत पदरज कणम ॥
गति रति मति चरणयो मागत चराचर जनगण।

सौम्यभाव सवैया

सौम्यभाव मुख मण्डल साहे ग्रघरन शोभा निराली है ।
दशन को जुटने नर नारी कहैं सयानी ग्राली है ॥
एक सखी उठ मीठी वाली तिलक राम को काल्हि है ।
सखी सखा मनया है हर्षित ग्रार बजावे गालि है ॥
सजनी खुशी श्रीराम ज म की ग्राजु मनम है घनी ।
नलार पावन जनित सुखकर शोभा पावन ग्रति बनी ॥
जेहि प्रथम श्री ऋषिराज सह वह ताडका पल मे हनी ।
"हरि श्याम रुप ग्रनूप राम की देख छबि खिली हरकनी ॥

मन चकोर । प्राथना ग्रन्तर्यामी इन्द्रिय सम्बोधन पूर्वक
मन चकोर मरा ग्रतर्यामी दीन बधु प्रभु विश्व सुधाकर ।
हृदय कमल वन विकसाने को ग्रगणित रश्मि तेज प्रभाकर ॥
प्रज्ञा यामिनी मे उजियारा जगनियन्ता परमेश्वर का ।
घर तू ध्यान सदा घन घन हो व्यापक भवत ग्रखिलश्वर का ॥
ग्रहकार दानव तू हटजा ग्राते है ग्रसुरारि देख ।
क्षण म तव तोरी माया का नाश होय यह कपट कुवेष ॥
ग्रात्मा सुरसरि पावन धारा बहती ग्रब तो कर कल्याण ।
लगा ग्रायुपुरा जीव देह मे चेत हृदय धीमन मे जाण ॥
नान सरोवर पय भरने का नव नीरद मेघो के राज ।
खर्वी ग्रौर ग्रमरगण बाधा मटी ऋषि मुनि विश्व सुकाज ॥
रसना पपीही स्वाति बू द हित टेर लगा तू प्रभु नाम की।
तष्णा प्यास बुझेगी तोरी पाकर छबि उस करुणाधाम की ॥
नयन नेह का भर तडाग श्री जगदीश्वर पद सीचन को ।
प्रभु पद प्रेम टारने हारे त्यज कामादिक नीचन को ॥
सुनो कान ध्वनि पशुपति का ग्रौर शब्द से नित भुख मोड ।
ईश प्रेम शब्दावली धारा निकसे मुख मागत "हरि" गौड ॥
त्वचा ज्ञान सम विश्वपति की महिमा मे तू करते स्नान ।
निर्मल छवि लोकेश्वर देख ऐसा मन में नित पहचान ॥
जग विराट पुष्पित कानन गुण सुमन गध की लेरी ! घ्राण ।
दीन दयालु लीलाधारी करने ज म ज म तव त्राण ॥
कर्मेन्द्रियो ! तुम सेवा भाव से विश्वम्भर पद सफल सदा ।
हो ग्रनुगामी मन नेता क नित्य माद नव ज म मुदा ॥

शुक सनकादिक शेष मुनि शिव नारद करते सदा सुध्यान ।
मानव जन्म सफल करले तू प्रभु की गरिमा अरु गुण गान ॥
करुणा सागर शोभा आगर विश्व उजागर तुम रखवार ।
मगल सुख सम्पत मुद मादक कृपा से भरना नित भडार ॥

रसना राम भजन

रसना राम सुधा धारा पी अमर बनाती है ।टेर
बडभागी जो जीव विश्व मे स्वाभिरुचि दर्शाते है ॥
मोह माया के फदे को फस जब मिथ्या बतलाते है।
फिर प्रकृति देवी इस बाने को जब स्वय सजाती है ॥
तुलसी सूर कबीर आदि ने पान किया अपन युग मे ।
स्थिर कीर्ति हो तरे जगत मे कहते शास्त्र सदा जुग मे ॥
क्यो अवसर जान का तू नर दे आत्मा पछताती है ।
दृढता से पहलाद भक्त ध्रुव हृदय कोठरी मे टाला ॥
कष्ट महा पाकर भी दोनो अमर पता का की माला ।
पहनी रम्य कलेवर "हरि" यह छटा दिखाती है ॥

जय हो दीन दयाल आरती

ॐ जय हो दीन दयाल ।
चरण कमल चितधरते बडभागी ते निहाल ॥ टेर
मन तव चरण सुरसरि धारा नित्य स्नान आनद ।
जगदीश्वर लोकेश्वर पाया आखिलानद जय
अघतम घोर निशापु उजागर हो हिम कर राकेश ।
दानव वन दावानल व्यापक नित्य रमेश जय
हृदय हस तव चरण सरोवर चुगने को मुक्ता ।
रहता अटन तीर पर सावधान युक्तया जय
आत्मेन्द्रिय मन कमल खिलाने प्रभुवर पूज्य दिनेश ।
ध्यान मग्न चित नारद शुक सनकादि महेश जय
ग्रसित मगर-दु ख द्वारा-सुमगज स्तुति भारी ।
छाडु विहगपति धाय ईश्वर वनवारी जय
कीट मृत्युगत पकड भ्रमर ज्यो डारत तन मे प्राण ।
ईश कृपालु मृत्यु से जीव करत कल्याण जय
चचरीक मकरन्द व्यसन मुद तैसे पद तव ध्यान ।
करुणा सागर सव सुख-आगर कृपा निधान" जय

भव सागर गत नौका नाविक हो तुम विश्व पति ।
तारे मुनि जन प्राणी प्रेम भरी रीति जय
भूपति जगपति सुरपति पावन नाम तुम्हारा है ।
कमलापति कलियुग म मोद हमारा है जय
धप दीप नवद्य भक्ति स प्रभु गुण मुद गावो ।
वद्य हरि श्रद्धा मे फिर प्रसाद पावो जय
सुख सम्पत्ति धन देहारे ईश नौर स्वामी ।
घट घट के पहिचान दु ख अतयामी जय

पलपलगत तृष्णा नाशिनी हरिस्तुति

पलपल शत वय समाप्त हुए तष्णा प्राणी को मार रही
अज्ञान जनित हिय कमल कलेवर दग्ध नित्य कर जार रही ॥
मृग शा व तन्मय मृगतष्णा नल चमक धूलि हो जात ह ।
सच्ची व्याकुलता घम घाम प्यासे वे कठ म टार रही ॥
पर तू मानव चेतन प्रानी इस म क्या भर माया है ।
यह व्याधि सापिनी कोमल देह म दश स्वविष नित डार रही ॥
इसकी औषध सतोषधीर और प्रभु की पावन सवा है ।
राग निवत्त नर को गह म तप बन गुण गरिमा तार रही ॥
एकान्तवास जन सेवा से मानव मानी बन जाता है ।
सुदर विश्वभर आकृति ही जगमंल नदी से टार रही ॥
जब आयु पूरी होती है पछतावा मन म बढता है ।
तब रोगावस्था नयन कुमारिका दग्धक्षार अ सु टार रही ॥
सूर र तुलसी मीरा को अनुभव था इसके मरन स ।
हरि वद्य कृपा प्रभु की महती जग वचना ठगिना उबार रही ॥
घर कुलपति हो बाधव हित धावत पाप की राशि बटोरन को ।
नही अतकाल अघ भाई बाटे यही विडम्बना मार रही ॥
यह सोच मेराजी अकुलाया पी अमृत नाम अखिल पति का।
परमा शान्ति तष्णा नाशिनी पा गुणगाथा धी उबार रही ॥
कर पाप घम सुख दु ख अपण शुभ अशुभ कम सब अपने को ।
हरि ' जाने म हरि हा का हू यह मत्र सदा स्मृति भार रही ॥

लक्ष्मीकान्त प्राथना

लक्ष्मीकात अन त भगवन विश्व पावन अतिप्रियम ।
वन्दयान नर नित शुद्ध मनसा प्रणत पाल जितेन्द्रियम ॥

विष्ण नारायण दिवाकर इस जगत को पालते ।
कृष्ण माधव विश्व मोहन चक्र पाणि चतुभु जम ॥
अच्युत गरुडध्वज भज सफल ज म विनम मे ।
दत्यारि दामोदर मुकु द जनाद न पीताम्बरम् ॥
विश्वरूप अधोक्षज करुणा के पारा वार को ।
पदम नाभ मधु रिपु पुरुषोत्तम विश्वम्भरम् ॥
जल शायिन नर का तक कर हृदय ब द कपाट मे ।
मुर मदन कसारि माधव कशव दामोदरम ॥
यज्ञ पुरुष पुराण पुन्य धार धति स्मृति श्रोजमा ।
बन मालिन श्रीपति उपेन्द्र देवकी प्रिय नदनम ॥
पुण्डरीक नयन स्वभू प्र तु ध्यान धर अभ्यास से ।
शारङगीन बैकुण्ठ पति हृषीकेश पदमालया वरम ॥
गाविन्द विष्वक्सेन शोभा धाम पूरण काम को ।
मति रति गति पद कमल मागे भिषग हरि युग करम ॥
नाम नारायण हरि के जो कहत नित प्रेम मे ।
सम्पदा सुख मोद आत्मा ददति हरि आनद परम् ॥

विश्व आपत हरि प्राथना

विश्व आपन दु,ख विनाशक याद कर हरि प्रेम से ।
हृदया ध मन अघ हर प्रभाकर भजतु नर नित नम से ॥
कमलापति पदमापति प्रभु स्वानुभव आदेश से ।
विश्वपथ डगरी दिखाते आत्मनेश्र सुवेष से ॥
श्रीपति लक्ष्मीपति निज ज्योति शुभ्र प्रकाश से ।
कर रहे ब्रह्माण्ड दीपित मय विराट् आभास से ॥
पद शरण गह तू प्रभु की व्याप्त ज्योति अनक से ।
तर सते सुरगण जि ह नित अमल मजु विवक मे ॥
गुण मयी अनुकम्पा जिसकी मोद जग म भर रही ।
पाथोधि भवमय जनित बाधा रहित मानव कर रही ॥
भाग्यशाली जन मनीषा अवगुणा मे डर रही ।
नाम पथ भर उदर अपने पाप राशि टररही ॥
तल सुतल जल भूमि जिसकी ज्योति पीकरजी रही ।
भक्त प्रवरो की स्मृति घी प्रेम अमत पी रही ॥

इन्दिरा हरि प्रिया पति की विश्व माया छा रही।
उनकी सुईच्छा जग चरा चर मे सुगाथा गा रही॥
रजकणो म सजीवता अस्तित्व उनके खिल उठी।
वैद्य हरि नाभि हृदय म जागकर के मिल उठो॥
स-मन-दश इन्द्रियन सह लाकेश पाकर हिल उठी।
हरि कृष्ण ज्योति चादिनी जन तन अ धेरे खिल उठी॥

जयति श्रीनारायण सत्यनारायण स्तुति

जयति श्रीनारायणाम्या सत्यनारायण प्रभु।
रमाकान्त श्री शेष शायी इन्दिरापति ह स्वभू॥
भूत्र सत्या चार शम दम विप्रगुण सतानद को।
व्रतविधि पचार्पात करी, धन्य अखिला नद को॥
भिल्ल ब्राह्मण घर विधि व्रत दख के मन हृपभर।
पूजाकरी सकुटुम्ब स श्री सत्य देवानद भर॥
उल्कामुख पथवीपति पदमा पति के ध्यान से॥
सफल जन्म मनारथ पा तर गया सत ज्ञान स।
सन्तान पाई वैश्य साधु प्रभु कृपा लीलावती॥
इूबत पति परसाद-पाया-सुता साधु कलावती।
तु गध्वज भूपति मनारथ वाधवा का पाय के॥
हरि प्रिया पति भक्ति से उत्सव किया हर्षाय क।
अपर जन्म सुदामा ब्राह्मण भिल्ल भी गुहराज हा॥
नपति दशरथ मारध्वज स्वायभ मनु महाराज हो।
धन विभव वाछित मुफ्त सुत देत ह सौभाग्य को॥
लक्ष्मी नारायण सु सेवा मिलत हैं अहोभाग्य को।
मन मजरी क कुसुम अपरण करहु दीनदयाल को॥
वैद्य हरि रम पद कमल शिर विश्व के महीपाल को।
ससार की सब सिद्धिया भगवान देत दास को॥
कर सुसवा मौर पूजा प्रेम भजतु अनाश को॥

सत्यनारायणजी की प्रार्थना

सत्यनारायण प्रभु का ध्यान नर नारी धरो।
सुखमयी ससार यात्रा युग कलि की तुम करो ॥

पार करन जलधि जग के दुख अघतम नीर से।
विश्व नाविक के सहारे इस जनम म तुम तरो ॥

स्थिर चेतसा कर पद कमल म भक्ति अपण आतमजा।
कल्याण कारी श्रीपति को मोद जग मे है खरो ॥

सन्तति सुख सुभग सम्पत्ति धन सुहाग प्रभुत्व के।
दाता अमर यश मोद मुद तावेश, जग नारी नरो ॥

विश्वजन दारिद्रय आधि विविध बाधा व्याकुल।
पश्य नारद मन दयाद्र हो प्रभु चरण मे जा-परो ॥

स्वर्ण सिंहासन स्थित श्री लक्ष्मीकान्त मनोहरम्।
पृष्ठ वाछित वतविधि नर लोक ऋषिवर मन ढरो ॥

कथ सुमवा सत्य प्रभु की मग्न हो आनद मे।
मृत्यु लोक निवासी सुनकर प्रेम प्रभु के नित गरो ॥

कृत धूपदीप मु आरती बाधव सहित इस लोक मे।
लक्ष्मीनारायण सुधा कर का हिय स ना टरो ॥

रम्य मूरत जाकी माया देत सब आनद है।
वंद्य हरि धर पद कमल सिर जगत बाधा नही टरो ॥

शख चक्र गदा सुदशन धारते भुज चार हैं।
इस कलिमल हारिणी छवि ध्यान नर उर नित भरो ॥

ईश प्राथना

ईश तुम्हारे आश्रित सब जग।
शताब्दियो स पा स्वतन्त्रता भारत मानवराज्य हुआ ॥

रक्षा करनी हाथ तुम्हारे यही विश्व को मय हुआ।
नय्या इसकी डोलत डगमग ईश तुम्हारे आश्रित सब जग ॥

नृप अशोक सा पथ चलाकर सुखी बनाओ दुनिया को।
उल्टेमानव की मति सुल्टी कर क जगादो दुनिया को ॥

स्वारथी जन से व्याकुल अब लग ईश तुम्हारे आश्रित
जिसम हित होवे भारत का वही सूझ सब को करा।
दर अविद्या घृणा सभी से अभ्युदय इसका करा।

जयति लक्ष्मी नारायण प्रार्थना

जयति लक्ष्मी रमण विष्णु नाम आनंद है भरा ।
भवता रटल दीन बंधु आयु सब विपयनगरा ॥
क्षीर निधि गृहस्वसुर में सोते सदा असुरारि हैं ॥
पराहु समरथ की छवि हिय-स्वगसम सुखकारी हैं ॥
शेष की मजुल परिधि चहु छा रही भगवान के ।
शीश पर छाया फणों की छारही छवि आनके ॥
शख चक्र गदा सुदर्शन तीक्ष्ण शोभा पा रहा ।
पापिया के भुड अग्नि काल का वर्षा रहा ॥
चार कर माथे मुकुट कानन म कुडल चमकते ।
सौम्य आनन तेज प्रतिभा सूर्य सम सिर दमक ते ॥
भालत्रय रेखा बनी कस्तूरी मिश्रित मलय की ।
भारी माकण्डेय मुनि स्तुति कछु दिखाई प्रलय की ॥
आप बाल मुकुन्द बन सोय थे बट पुट मृदु दले ।
अट्टहास समुद्र जल नभ पृथ्वी म सब कलमले ॥
कर कमल पद कमल का अगुष्ठ ले मुख कमल म ।
भयज वायु नग हिमालय बहत प्रलयज अनल म ॥
लक्ष्मी के सग रमण जिसका प्रलय भी महा शक्ति म ।
होता है, नौमि बाल कृष्ण लक्ष्मीकान्त सुभक्ति से ॥
दाबती पद कमल कमला कैद्य हरि मन भ्रमर हो ।
पान चरणाम्बुज किया मकरन्द-आत्मा अमर हो ॥
राकेश जग रमाकान्त का हिय ध्यान नर धर लीजिए ।
विश्व तम रजनी उजागर का मधुर रस पीजिए ॥

श्रीराम हरे कीर्तन भजन प्रार्थना

श्रीराम हरे श्रीकृष्ण हरे हरि हर लोकेश कृपालु हरे ।
केशव माधव गोविन्द हरे दामोदर नारायण भजुरे ॥
अज्ञानलता तन क्षेत्र बढी अरु चिन्ता सापिनी मन हिय मे ।
करती निद्रा नाश रटु श्रीधर हरि प्रेम गिरा सगरे ॥
ससार व्यथा विष पूरित हो बल से तन नगरी घुस जाती ।
तब अच्युत गोपी वल्लभ स्मर-दुख रोग दशा सब दूर करे ।
कुठित बुद्धि सुविचारा से सतसगति अरु आचारो से ।
होती-जब दूर भजहु मन से श्रीजानकी नायक पद पकरे ॥

भव काई से वचन को रटु श्रीरामचन्द्र देवकी नदन ।
श्री वासुदव हरि वैद्य भजो त्यज काम लोभ जोमय-जग-रे ॥

आनदाराम खिला गह म लख बाल शिशु लीला भूला ।
अब तो श्री दीनदयाल हरे करयाद गोपाल दशा विगरे ॥

गह पालन म सुत समरथ जब तेरा प्रिय नर हो जाता है ।
तब धीरे-धीरे तष्णा व ो छेदन कर नाम कटार खरे ॥

जिस पाप से धन प्राप्ति होती उसकी उलभन नहीं मिटती है ।
तू ज्ञान से सोच पति मृत से दारा-पल-पास म बैठ डरे ॥

सब स्वारथ का रोना जग म जीते को राजी पूछने है ।
जब जजर देह प्रपूरित कफ तन निकमे से सब जीव लरे ॥

अब चेत तू धन मद मे भूला सच्चा माग मोह माया फस ।
कुरु गीता ज्ञान मुरारि हरे भव जलधि ईश्वर नाम तरे ॥

भजु जगदीश प्राथना

भजु जगदीश अखिलाधीश नित नम शीश मोद करम ।
करुणा सागर सब सुख आगर मान उजागर दुख हरम् ॥

हिय आराम करुणा धाम मुनिमन ग्राम नित्य चरम ।
भजु जगदीश ॥
बशी मुख धर भ्राताहलधर स्वामी चराचर ब्रह्मपरम् ।
राधा स्वामी अन्तर्यामी पदहु नमामि धन्य नरम ॥

मजु ल वेष सुन्दर वेष नमति सुशेष सदा-हरम् ।
भजु जगदीश ॥
पकज नयन वासुकीशयन सब सुख अयन मुकुट धरम् ।
मृग मद भाल यशुमतिलाल सदा कृपाल क्लेश जरम ॥
सु दर भकुटी करननि लकुटि गलहु दुपट्टि विश्वभरम् ।
भजु जगदीश ॥
कु ज विहारी लीलाधारी कलिमल हारी हरति डरम् ।
ग्रीवाभरण कुण्डल करण मृदु कर चरण स्नेह भरम ॥
कटि पीत पट प्रेम वित्त रट गगा मजु तट लोम टरम् ।
भजु जगदीश ॥
गिरि धर धारी मुनि मन हारी आपत टारी पाण्डु वरम् ।
चक्र सुदशन कलिमल घषन अघतम कषन मोह तरम् ॥

गीता ज्ञान निमलमाा आत्मा दान धम धरम् ॥
भजु जगदीश ॥

जयति रमेश विष्णु प्रार्थना

जयति रमेश नटवर वप नमति अशेष जीव सदा ।
जय जय स्वामी अन्तर्यामी तव पद गामी जीव मुदा ॥
जय अखिलेश्वर जयति सुरेश्वर जय जगदीश्वर मोद प्रदा ।
जयति रमश नटवर वप नमति अशेष जीव सदा ॥
जयति दयाला जयति कृपाला जपुनित माला शोभा धाम ।
जय असुरारि शव सुखकारी ब्रज विहारी पूरण काम ॥
जय कमला पति सदा सत्यमति दाता सुगति प्रियवर राम ।
जय सुर रक्षक दानवभक्षक पूज्य सुयक्षक प्रिय नित माम ॥
जय वनमाली हरति रजाली दुख अघ शाली लोकेश्वर ।
जय सुख सागर शोभा आगर ज्ञान उजागर परमेश्वर ॥
जय जय शानु पाप कृशानु नमशिर जानु अमरेश्वर ।
जय जग पावन सुरमुनि भावन काम लजावन विबुधेश्वर ॥
जय घनश्याम नित्य ललाम जग बल धाम विश्व पति ।
जय सुर नायक सब सुख दायक मम ममपायक हर कुमति ॥
जयति कमल मुख हरति भवज दुख अमरा नद सुख दहि रति।
जय प्रिय शंकर सदा सुखकर रमा रमण वर नित्य प्रति ॥
जय सुख सिन्धु लज्जित इन्दु अमत बिन्दु सदा करम् ।
जय अघ मोचन शोक विमोचन मदमदरोचन भाल धरम् ॥
जयति मुरारि गिरीवर धारी पाप तमारि निशा चरम ।
जय वशीधर वैद्य हरि शिर सदा परशुधर दहि वरम् ॥

राम जन्म शोभा वर्णन

राम जन्म की खुशी आज सखि घर घर छाई है ।
बडभागी दशरथ रानी कौशल्या माई है ॥
दिव्य लोक से कुसुम माल परी ले वर्षाई है ।
दशरथ मन आनद उमग की शुभ घडी आई है ॥
हर्षित नर पति दत प्रजाजन आज बधाई है ।
कौशल्या ढिग सखी सहेली मगल गाई है ॥
रोरी केशर पीत हल्दी की गध सुहाई है ।
याचक वृन्द को परम प्रेम मणि लाल बटाई है ॥

भूपति शीश निवा गुरु पद पर अति हर्षाई है।
नीरा म्बुज मुत्र नयन देख प्रिय रति नजाई है॥
शत अनग राकेश पूर्ण सी सुंदर ताई है।
योछावर हो राम छवि "हरि" मन मे बसाई है॥

मुखदराम के भजन

मुखदराम के सुन्दरता की शोभा आजु वनी।
चरण अधर पकज लोचन की देखत प्रभा वनी॥
गुर नाशा मजुल गण्डस्थल मंद हास्य मजनी।
शीश मुकुट कुंडल कानन म भलकत दिव्य मनी॥
हाथ धनुष मृदु अग श्याम है कटि पट पीत तनी।
उर साहू वजन्ती माल दमकत है दत कनी॥
"हरि बलि हारी ऐसे राम पे हो के वना धनी।

भियङ्कर रामध्यान भजन

भियङ्कर रामचन्द्र को ध्यान।
शिव शकर नित धरत सदा ज्मा करते हैं यश गान॥
तुलसी दास ने बडे प्रेम से कियासुधा का पान।
मीरा करके हुई कृष्ण मय ममझ पूर्ण कल्यान॥
वँच हरि कर रात दिवम तू अमर अमिट यह गान।

मै तो समुभि राम तिलक

मैं ता समुझि रही मन माहि।
रामतिलक का मोद सबहि मग्ु आभपणहि सजाहि॥
लेले तिलक थाल गोरोचन कुवरि सब हरषाहि।
मदमति कुबरी कैकेयी को बुरी सिखावन दोंही॥
ज्यो पकज गत भ्रमर मनारथ गर्जहि तोर हरलोही।
नही भरोसो देवगति को ऐस सु–सम सखारी॥
देनराज अजुधा का, ददी कानन आज्ञा लखोरी।
विधि विपरीत हात जा के हरि मेटन कोई न हारा॥
प्रिय सखा पितरौ त्याग चले वन लखन रामसिय दारा॥

जगत के राम भजन

जगत के राम एक आधार ।।टेर
शदि दु ख कठिनता मे यह वालत नर हर वार ।।
उर्वी न भी देख विनय की बढा पाप का भार ।
रमते योगी सदा राम मय लख निशिदिन ससार ।।
"हरि ' मनोरथ सबके पूरें एक राम अवतार ।

श्री राम चन्द्र राम राज्य स्वाराज्य मूल

श्री रामचन्द्र कृपा निधे करूणा के सागर है प्रभा ।
भज प्रेम से नर तू सदा सीतापति है जो विभो ।।
ससार मे मुख राज्य के व आदि नर वर भूप है ।
उनके चरण चिह्नो प चलते वे धम के स्तूप है ।।
यदि चाहत सुख को जगत म जीवनी उनकी मना ।
विश्व म होगी समद्धि तब प्रकृती का वैसी बना ।।
फिर आय भारत की यह जननी फूलती फलती रह ।
वसु धा होशस्या श्यामला यह दु ख को हरती रहे ।।
प्रजातन्त्र का जहा रूप था आर ध्यान था सुविचारका ।
होता सुकाल जहा सदा स्वध्यान था सदाचार का ।।
सबकी थी इससे विमल बुद्धि देती शुद्ध प्रकाश थी ।
मर्याद म चलते थे अपनी दण्ड की भी त्रास थी ।।
हाते थे मानव दीघ जीवी पालते सयम को वे ।
शुद्ध घत और अन्न दुग्ध का ढालते साचों म व ।।
रक्षा जहा पर गोधनो की रात दिन होती सदा ।
मानवत पालन व उनका कर के हाते थे मुदा ।।
यही हतु था मुख राज्य का गुण गान जिसका आज है ।
पर युग के वश म हो क नर मर्याद मुक्त समाज है ।।
इसस जो आधि व्याधिमी वढती सदा ही अनक है ।
"हरि" राम क चल चरण चिह्न पे सुख का कारण एक है ।।

मम मंदिर आये भजन

मम मदिर आये राम ।
सावरि सूरत धनु पाणि ह अमित लोक सुख धाम ।।
मजुल नासा कपोल भ्रू पर लाजें कोटिशत काम ।
कौशल्या दशरथ के सवम सीतापति श्री राम ।।

सिता दूध नव नीत मोहन प्रिय व्यजन रचे ललाम।
बिठा दीनबन्धु हृदयासन पे पर मे रचि अभिराम॥

सतन धन राजीव विलोचन रुचि रुचि खाये राम।
नीराजन और धूप गन्ध स पूजें आठो याम॥

सखिराम की अद्भुत शोभा देख धन्य सब वाम।
"हरि" निछवर राम छबि पर प्रात मध्य और शाम॥

आये रावण मार रामागमन विजया दशमी पर

आये रावण मार श्रीराम सखि घणो हर्ष हुयो॥ टेर
पुर नर नारी मातु सब पूछें गढ लका की बात॥
कैसे तो तुम निशिचर मारे और छुडाई सिया तात सखि
बोल राम सबहिं समझा के सुनो लगा कर ध्यान।
पहले लक जना हनुमत ने सीता की सुधि देई आन सखि

कर पूजा शकर की हमने सागर सेतु बधाया।
उतरी सेना भालु कपि की डेरा लक डलाया सखि

कु भकरण और मेघनाथ थे सूर बडे बल वान।
हमने मारे तोरी कृपा से हिये माहि शर तान सखि

शिव को वर रावण न राजी बहुत लिये वर दान।
ध्यान धुआ अमृत नाभि का सोखा मार के बान सखि

रावण सूर बडाभारी था असुरा का सिर ताज।
देव सुखी कर भार भूमि हर मारा दशमी दिन आज सखि

आयो शरण विभीषण म्हारी दे लका का राज।
पाई विजय दशानन पर हम इन कपियन के काज सखि

पाय विजय सीता ले हमने कर पितु वचन प्रमान।
आय चरण तुम्हारे देखन भरत कठिन प्रण जान सखि

चरित राम का गाकर नारी नर हो सुखी सुजान।
ओज तेज "हरि" बढे सूरता गहे धर्म का हो मान सखि

सखि तिलक राम राज्याभिषेक वर्णन

सखि तिलक राम को आज खुशी घर नगर मची॥टेर
कुवरि मन आनद घणा है अजुधा नगरी आज।
लेले थाल फूल गोरोचन कुकुम मृग मद साज खुशी
मगल गीत सुनावें नाचें हिय हर्ष है भारी।

मधुर वाति से मनहि रिझावें ददे कर करतारी   सुगी
युवती बाला प्रोडा सबन कर अनुपमशृंगार ।
लटका राम नाम का मोती गले प्रेम का हार   सुगी
सुन्दर गीत बधाई गावें सब मिलि सखि सहेली ।
राम रंग मे सबहि राची धन ज्यो कृपण मकनी   सुगी
सुन्दर कमल खिले सरवर पर ब्राह्मण वद पढें ।
महलन शोभा गज मुक्ता मणि नित नित नवे बढ़े
राम अंग श्री सीता सोहे भ्राता चमर डुलावें ।
रामसिंहासन बठे हस मुख शोभा कही नहीं जाव   सुगी
नृत्य मोर गुंजन मधुकर का फूल उठा ऋतुराज ।
सुखी प्रजा आनद मगन थी सब जग साचा सुराज   सुगी
उत्सव राम तिलक का सानी जो कोई नित उठ गाव ।
मोद प्रेम आनद एकना "हरि' उसके हो जाव   सुगी

विराजो राम भजन

विराजो हृदया सन म राम । टेर
शीश जटनि बना मोर पंख का कीट काटि छवि काम ॥
वैष्णव तिलक इन्दु मुख चमक पीत छवि ज्यो दाम ।
कमल नयन सरसिरह लोचन मन्द हास्य सब याम ॥
गल मनिमाल कानकुंडल है चिबुक चित्र की ठाम ।
पीताम्बर पट शर धनु पानी कटि तरकस हैं ललाम ॥
पाप नशावन मजुल पावन राम-योगी हिय नाम ।
श्याम कलेवर मोहिनी नित वन नित्य पाप रत भाम ॥
बैद्य हरि के राम पियारे जप घट प्रातहु शाम ।

राम नाम हो भव की नौका

राम नाम है भव की नौका । टेर
ध्रुव प्रहलाद अम्बरीष शबरी चढ़े जान कर सुन्दर मौका ।
नानक तुलसी सूर कबीरा जग गुरु शकर भये अशोका ॥
रति देव मुनि सबहि विभीषण सदा ध्यान से रहत विशोका
धनु धर राम सिया शोभा को मन मंदिर म बिठा दे चौका ॥
कम योग के नित निरखन से कट पाप सुख उपजे मौका ।
राम राज्य आनद मगन थे ऋषि मुनि प्राणी अरु सब लोका ॥
यम के दूत अजामील पकडन धाय राम के नाम ने रोका ॥

वैद्य हरि चढ गया समझ के जीवन क्षण भगुर दिन दो का ।

अज नयन भर राम राज्य शोभा

आज नयन भर देख लेहु सखी शोभा सीताराम की ।
गुरु सिष्ठ उपदर्शाहि ढुग कर सुनहु गोल मनी कान की ॥
राजसिंहासन राम विराजे वाम मोहनि श्री जानकी ।
भ्राता चमर डुलावें लीना पग चम्पी हनुमान की ॥
चहु दिशि विकसी सुमन पकज के शोभा घणी पच प्रान की ।
कर धनु कटि तरासधारे सब कान्ति है मगल खान की ॥
चारु तिलक सुन्दर भ्रू-नासा कुडल अन मन दाम की ।
उरभुज सुभग सुदृढ अ ग अ ग हैं उपमा लाजे काम की ॥
विद्रुम मुक्ता दिव्य मणि विच मुकुट हेम अभिराम की ।
ब्राह्मण वेद पढ़ें नित प्रातहि सामगान मधुरान की ।।
याचक मागि अयाचक हो कें ईच्छा पूरण काम की ।
नित नित नूतन गौरी वाला गावें किशोरी श्याम की ॥
प्रजातत्र का चहु सुराज है मोद प्रणाली श्री राम की।
बदीगण मागध नित गावें हिय मगल हरषान की ॥
पीत वसन मृदु वपु दुमटिया रेशमी पहिनी पाम की ।
कमल नयन सर सीन्हलावन मात न्योछावर जाम की ।।
हेम वर्ण सखी जनक दुलारी शोभा खानि ललाम की ।
शासन करनि सात्वना देते मगल मोद बधान की ॥
हृदय मदिर की कुसुम थली म ठौर बनाया जान की ।
वैद्य हरि म आन विराजो पूत भवतु काया चाम की ॥

नर आपत काल राम नौका ताल कसूरी

नर आपत काल सहारा देती राम नाम नौका ।
निया मित्र सुत माल धरनि सब दु ख नही बटवाते ॥
यही सोच कर याद किया कर आया है मौका
पूर्व जन्म की पुण्य सीढी पर टके रख निज पाव ॥
चरण पष्ट का तभी छोडती आगे घर के जलौका ।
मोह ममता उपजाने वाले वधु व धु नित आते ॥
जब डूबत नदी दु ख ओघ की करत जीव शोका ।
चक्र काल का नित यो चलता सब ही पिसते जाते ॥

पिसने की भव तरी वारी जीवन दिन दो का ॥
ईश भजन ही चिकित्सा इसकी कर मन नित सतोष ।
,'वैद्य हरि'' चालीस वष म जानत रह् प्रशोका ॥

राजा सिहासन भजन गीत

राज सिहासनासीन राम की शोभा बनी अपार । टेर
मुकुटपगी हेमाभ नीलमणि मुक्ता विद्रुम सार ।
शख पटी लटी सजी केश की कु डल की भनकार ॥
मस्तक घँघ्णव रेख तिलक को रचो मुसजन हार ।
उनत ग्रीव सजी कर धनु शोभा हृदय है मुक्ता हार ॥
कर प्रगड मणि बाजू बद की शोभा रची रख नार ।
कमल नयन कमलाननहि पर लाजें कोटि रति मार ॥
मनहु सौम्यता धरे रमापति छोडत अमृत धार ।
वैद्य हरि भुज पसार लेटा पद पकज प्रभु द्वार ॥

बैठे मजु राम राज्य मे प्रजातत्र झाकी

बठे मजु सिहासन सीताराम राजधानी
करें चर्चा मुद प्रजा के सुशासन की ॥
आज्ञाकारी भ्रात नित चमर डुलावें मृदु ।
महिमा भणत ऋषि मुनि और वामन की ॥
रघुवर बोले सुनु जनक दुलारी प्यारी ।
प्रजा के मुखहु सुनी बात तोरी रावन की
ऐसी नीति भणे लोग सीता रही पर घर
तोमी राखी राम पाली नीतिरी दु शासन की ॥
एसी सुन गाथा मोरे ि ये म गलानि हुई ।
दूर करने की मैंनें बुद्धि मे विचारी हैं ॥
जाहु तुम रहू ऋषि बाल्मीकी आश्रम ।
लखण के सग वन मैने मन धारी है ॥
जानकी ने आना धारी शिर रघुवर की ।
मजुल प्रमोद हिय भारत सुनारी है ॥
ढरि धार अगु वन रामहु सीता के नैन ।
' हरि ' के ढर कि गई नयन दुधारी है ॥

शिव कह गिरिजा राम चरित सार वर्णन

शिव कह गिरिजा सुनो प्रेम से राम प्रभु की सहनानी ।
दशरथ कौशल्या ने कीन्हा पूर्व जन्म तप महा प्रबल ॥
मागहु सो सा पुत्र गेह म तथास्तु कह शारग पानी । टर
देख चतुर्भुज कहति कौशल्या तात करहु छवि शिशु लीला ।
शिशु रूप कर रोदन प्रभु ने क्षण मे धारा रजधानी ॥
मोहन लीला कर नित प्रभु ने मोहे मातु पितु सब जन को ।
पकज नयन रम्य मुख चन्दा बलि गया शोभा खानि ॥
गाधि तनय मख रक्षा हित ले राम लखन को अपने सग ।
मारीच सुबाहु हती ताडिका देख ऋषि मन हर्षानी ॥
धनुयज्ञ म गये जनक के गव किया भूपन का दूर ।
धनुष भग कर व्याही सीता मोद जनक हिय महारानी ॥
लावसित वेश भय दशरथ ने रामराज्य की सुविचारी ।
केकैयी राज भरत हित मागा राम वनहिं भेजन ठानी ॥
छाया शोक सकल अजुध। मे किया भूपने सुर पुर वास ।
मनहु मनोरथ मधुप कमल गत गजहि कर कीन्ही वन हानि ॥
ऋषि मुनि मन आनद होत नित रामलखन सिय सुरसरि वास ।
चित्र कूट म कण नाक भग शूपनखा मन अकुलानी ॥
करि पुकार खर दूषण ढिग जब रण हित आये वे बलवान ।
मार राम ने सुगति दीन्ही सुर मन मोदहिं अनुमानी ॥
रावण सुन कटी स्वसा नासिका सीता हरन मनहि म धार ।
कपट हेम मृग प्रेषित करके लखन राम गये वन जानी ॥
साधु रूप मे हर सीता को मग पर गीध हितू के काट ।
अशोक तरु तर थाप जानकी सोपी त्रिजटा मन वानी ॥
लखन राम शाखा कुल मग मे गीध जटायु की गति जान ।
वन मिथिलेश कुमारी ढूढत मन मह शोच नयन पानी ॥
करी वन म सुग्रीव मित्रता मरुट श्री हनुमान के साथ ।
वाली मार सुग्रीवराज्य दे कर सुधि सीता जिय आनी ॥
[illegible] वर्णन कर ऋक्षपति ने हनुमान को भेज सब ।
दे मुन्दरि सीय सुधि मणि ले लका जारी सुभट मानी ॥
चमू चढ [illegible] भालू बन्दर की सेतु बाध [illegible]
शरण विभीषण असुर पति को राज [illegible] ॥

कुंभकरण घननाद दशानन मारगिराय रण मैदान ।
ले मुद जनक दुलारी चाले विबुध हुए सब सुख भानी ।।
चढ सानद विमान पुष्प के सहित सुभट मंत्री रघुनाथ ।
मगल मनि राम पधारे भरत मातु सुख उपजानो ।।
प्रभु का मुकुट मजु पहिना कर द अभिषेक गुरु महाराज ।
मुदहि भ्रात नर नारी मातु सब वाद्य बजत हैं सुख सानी ।
षट्‌ ऋतु राज सुपुष्पित गिरिजा ब्राह्मण वेद सुनाय रहे ।
फलित हरित वसुधा नित नूतन उपजाती अमृत दानी ।।
राम चरित गाया तुलसी की कथित ग्रंथ हरि न गाई ।
नित नित नूतन नही पुरानी देनी सब सुख सब प्रानी ।।

प्रभु रमापति राम कालीन सती जन्म गाथा वनजारा ताल

प्रभु है रमापति भय हारी सुन गिरिजा बात हमारी ।
वे जन रक्षक भय त्राता मम मानस मजु सियातारी ।।
नही देखत तप्ति हमारी सुन गिरिजा बात हमारी । टेर
फिरें सिया ढूंढने कानन सुर मुनी हनु बन बन री ।
कर प्रत्यय शैल कुमारी सुन गिरिजा बात हमारी ।।
यदि आज्ञा स्वामी की पाऊं तो कर पारख हरषाऊं जी ।
मोहे जाने दो त्रिपुरारि सुन गिरिजा बात हमारी ।।
शंकर ने मन म जानी गौरी प्रभु माया भुलानीजी ।
नही है मारग शुभकारी सुन गिरिजा बात हमारी ।।
गौरी ने रुप सिय धारा कर जारे राम महिमाराजी ।
बोले शंकर वह प्यारी सुन गिरिजा बात हमारी ।।
सब शिव समाधि बल जाना गौरी से प्रभु अपमानाजी ।
नही ही तव सग हमारी सुन गिरिजावात हमारी ।।
शिक्ष दक्ष यज्ञ अपमान लख तन योगाग्नि जरानाजी ।
तव जन्म हिमालय पहारी सुन गिरिजा बात हमारी ।।
मैं पूर्व जन्म का गाया तव जन्म राम की मायारी ।
मैं धरी समाधी भारी सुन गिरिजा बात हमारी ।।
सती जन्म "हरि" ने गाया हो राम मे प्रेम सवायाजी ।
दाता मगल सुख कारी सुन गिरिजा बात हमारी ।।

लख राम धनी भजन

लख रामधनी राकेश को मन कुमुद सदा खिल जाव । टेर

राम हमारे उपवन पकज के हैं सय प्रभाकर ।
मन मराल के मान सरोवर रति पति छवि लजावे ॥
हिय चकोर के सरस सुधाकर भकुटि भ्रमर के मधुमकरद ।
प्रिय वाणी की सुकोमन कोयल सुनत देख मन भावे ॥
मोह यामिनी प्रकाश कर्ता मोद सुरसरि की मधु धार ।
कलि कल्मप नाशिनी रविननया स्नेह सुधा सरसाये ॥
क्रोध सापिनी मान गरुड हो नान नदी की सुन्दर लहर ।
वैद्य हरि जग का सजीवनी प्या प्या अमर बनावे ॥

सोहे युगल छवि सियाराम भजन

सोहे युगल छवि सियाराम की । टेर
केहरि रत्न जडित आसन छवि बैठ लाज शत काम की ।
युगल छवि बनी मन पपीहे को स्वाति वूद अभिराम की ॥
चित्त वृत्ति चनकी वियोग हरि ज्या शोभित छवि भान की ।
पुण्डरीक हिय मुकुलित कारी शोभा खानि ललाम की ॥
हर्षित हिये लख विकसित कनी सव रूप कुम्प सुवास की ।
मृदु मुस्कान भरी चितवनभ्रू-दृष्टि ठगी सख भाम की ॥
मुखरित निखरित सियाराम ढिग फिरें वधू सब गाम की ।
वद्य हरि मन मराल लालसा मुक्ता छवि युग खान की ॥

कभी मन गावे कवित्त

कभी मन गावे मेरा राम गुण गरिमा ।
कबहु मोहित श्रीकृष्ण गुणावली ॥
कभी कर मुक्त जीव अपना हरि तू वैद्य ।
विष्णु गल माल बन मोती मुक्तावली ॥
आवे कभी चित्त सूर तुलसी की देखा देख ।
सू घ ईश गुण की गन्ध सुमना वली ॥
पाकर दिनेश तेरा हिय मन पकज ।
सुमन खिलावे ईशन कर उनावली ॥
दृढमति थिरमन ईश के गुणो को गा ।
त्रिन अहकार जीव सत्ता भी नशायगी ॥
काम मद क्रोध लोभ प्रभु क चरण का ।
कर हिये तोरे प्रेम ज्योति जग जायगी ॥

घडी पल नग शिग शोभा हू प्रभु की धार ।
शांति सुलता तवमन लहरायगी ॥
ईश गति ईश मति ईश का सहारा पावे ।
मुकुलित पगडी हृदय मिल जायगी ॥

जय राम प्रभु राम प्राथना

जय राम प्रभु जन सुख दाता प्रियतम हो जनक दुलारी के ।
सुरमुख मुनिमुख जाहित मारे यातुधान सदा ये तुम ॥
भार हरा वसुधा का तुमने भक्षक दु ख महामारी के ।।
त्राहि त्राहि सब विश्वमची जब असुरा ने उत्पात किया ।
देव पथिवी सबकी सुनने वाले प्रायना प्यारी के ॥
ममभन अनिगन चरण कमल तव मडराता है नित हरिन ।
पद सरोज लख दारिद भागे शिवमानस सचारी के ॥
म पपीहा तुम स्वाति बूद हो मैं चकोर तुम हो चदा ।
रक्षक बन चीर होकर "हरि" द्रोपदी पाण्डव नारी के ॥

हियमम राम भजन

हिय मम राम नाम धुन लागी ।
मृग तष्णा जग जजाला स कुछ कुछ हु आ विरागी ॥ टर
गहरे पानी पठ देख मन जलती काल की आगी ।
स्वारथी जग की देख महिमा भक्ति बुद्धि अब जागी ॥
काम धन्ध म सभी कलेवा होत नित सब दागी ।
कछु हरि चर्चा कछु गह पालन करत सदा सुरागी ॥
नित नारायण मगन निरतर ऐस बिरले भागी ।
वैद्य हरि अभ्यास योग से नारायण का सागी ॥

सखि आज विजय कर राम लका विजय वणन

सखि आज विजय कर लका नगरी आय राजा राम ।
घर घर मगल छाया सब के बात बनायें नारी ।
उत्पाती रावण इस जग स आज गया पर धाम सखि
दशमुख कु भकर्ण दोउ भाई पाकर वर बल वान ।
हुए जगत म ऋषि सुर त्रासक त्राहि सुनी सब याम सखि
शुभ वेला शुभ तिथि नखत की विजया दशमी आई ।
दशकधर की हुई पराजय विजय राम के नाम सखि
युद्ध चरा बहु काल मिलन की भरत स बला आई ।

चले राम गए सहित सीय के अपने अजुधा गाम सखि
जब से विजया दशमी मानित सब ही जन के मन म ।
धम अथ और बहुत सफलता पूरण होय सब काम सखि

जब मे सब ही धरण मनाते दशहरा बडा त्योहार ।
बिना पूछ सब सिद्धि धाना अनुभव ऐसा माम सखि

राम विजय से हुई सभी की विजय सुनोरी प्यारी ।
मगल गान सदा मह सब के होवें प्राप्त अरु शम" सखि

राम प्रेम की जय लक्ष्मी यह वैद्य हरि ने गाई ।
मन वाछित सब मगल दाता राम ह पूरण काम सखि

भव दु ख । कवित

भव दु ख जनित री ! रोग दुबलता को ।
राम नाम चूण शतावरी का चाहिए ॥
पान करने से हो पुष्टता अमिट भारी ।
सुलभ सर्वहि ठौर चाहे जहा जाईय ॥
जनपद ध्वसकाल पूव सचय कर ।
बिन अनुपान जी चाहे वसे खाईय ॥
रोग दुबलता को मेटन म अद्वितीय ।
वैद्य हरि खाय और मित्रो को खिखाईय ॥

पाप पद्मो मे तेरे मन मधु कर राम ।
प्रति पल मोद भरा नित मडराता है ॥
मोहिनी मूरत तोरी अजब सुहा नी प ।
लिय फूल माल हिय न्याछावर जाता है ॥
सारे दु ख सुख खानी रुप म बदलने मे ।
थोडासा सकत पा मोद वन आता है ॥
इसी बडी आश पे खडा खडा वैद्य हरि ।
जोडे दोना हाथ तोरी प्रारथना गाता ह ॥

कुछ क्षण दोहा राम

कुछ क्षण कुछ पल कुछ समय कछुककाल सुविचार ।
राम नाम चिन्तन प्रिये ! जग म अमृत धार ॥
विन गुरु सुख क्या है प्रिये ! समझन पाया आज ।
चित टिकाया राम पद वे सब गुरु के नाज ॥

राम नाम में चढ प्रिये ! देखो जगत विराट ।
महिमा व्यापक ईश की जल थल नभ सम्राट् ॥

यहीं रूप साकार है जलधि हिमालय राज ।
थल के व्यापक चर अचर और असम्भव साज ॥

माया जगजनि देवकी व्याप रही सवत्र ।
सङ्कट मोचन नाम भी है उनका सवत्र ॥

भाग्य विधाता जगत के राम हैं पालन हार ।
त हैं वधु क्षण प्रेम से भजु मन बारम्बार ॥

म या नटिनी नाच के माहती मानी जीव ।
जो देखे मोहे नही व ही रहे सजीव ।।

सब धन बाटत ईश हैं जाहि रुचे सो लेहु ।
कोइ लेता तरन को कोई डूबत सेतु ॥

जग झूठे जजाल म फस ने से भी दु स ।
छोडत भी दु ख ऊपजे चहु दिशि दु ख ही दु ख ॥

प्रभु की पावन नगरी अयोध्या वणन

प्रभु की पावन नगरी भाई चलो सखी दशन करन को ।
राम सीय सिंहासन बठे भ्राता चमर डुलाव ॥

हनुमान दावे चरणन को मन मे अति सुख पावे ।
ले गगरी दशन मिस चाली जमुना रमणी पय भरने को" चलो

राम राज्य उपदेश भरा है गुरु वसिष्ठ की गाथा ।
जिसको जसा योग्य चाहिए करते सदा सनाथा ।
प्रजा चन मुद करनन हारे त्रिविवताप ज्वाला जरने को" चलो

स्कन्ध धनुष छवि वरद दस्त से दे सबको सन्तोष ।
भाग्य विधाता सभी जगत के टारत सबके रोष ॥
रूप माधुरी नयन भरहु लख रामचन्द्र सियावर वरने को चलो

सुन्दर मुकुट नैण सुन्दर हैं मन्दरता चहु छाई ।
राक्षस के सहार जगत से ऋषि मुनि दुख भगाई ।
भक्ता का उद्धार घम थिर कर ही लिया अवतार घरने को चलो

अलिगन गावत केकी नाचत हस की है पहिचान ।
प्रजा सुखी समृद्ध उर्वी भी हरित घम म जान ।
यद्य हरि ने प्रसाद पाया पी मकरन्द अमर भरने को चलो

जय रामचन्द्र रामकृष्ण प्रार्थना

जय रामचन्द्र अवधेश प्रभु जग मर्यादा पालन हारे।
उपदेश गूसावत् दे जग म ऋषि सुर हित राक्षस सहारे॥
भवदावाग्नि से दग्ध मनुज तव कृपामयी हिमता चाहे।
कलिकल्मष नाशक नाम तेरा सब वेद शास्त्र नित उच्चारें॥
भव दुख जनित आधि व्याधि स तारन को नावा तेरी।
ससार नदी म बहती है नाविक हो जग सजन हारे॥
नाम सुरेश रमश सदा नित शिवशकर भी रटत ह।
इस विश्वोदधि की उदर दरी म डूबत जन तुमने तारे॥
शरणागत जन पामर मे मैं आया हूं द्वार तुम्हार पर।
कर कृपा दृष्टि मम किंकर पर भू भार जनित हरन हारे॥
इस जगती तल के प्रागण मे सब जीव कम के दु ख पाते।
अब माया भवनिशा दूर करो हे मधुर वशी वादन वारे॥
दु ख पाप निशाचर को सायक तेरेही तीक्ष्ण दहन हैं।
मन हृदय कमल कर उजियारा प्रिय कान्ति श्याम तन मृदु वारे॥
मन पकज विकस पड़ा प्रभु तेरा ध्यान दिवाकर पाकर के।
तव पद रजकण पे न्याछावर कुल गाकुल मथुरा क द्वारे॥
समय समय अनुरूप रूप सब विश्वम्भर यह तेरे हैं।
हरि वंद्य राम श्रीकृष्णचन्द्र न जनहित नर तन बहुधारे॥

जयति सीताराम प्रार्थना सीताराम की

जयति सीताराम प्रभु जय सीय सुन्दरता धरी।
अवनी पर तन आत्मपावन आयु मानव सवगरी॥
शुभ चरित्र उदारता की धार पुण्यात्तम बही।
कठिन आज्ञा मातु पितु की प्रेम पूवक सिर गही॥
सीय की पति प्रेम भक्ति मातु गिरिजा आन पर।
शिव स्तुति की चाप गुरुता हरन स्वामी आनकर॥
राम राज्य सुहावना सुख सुर सरि की धार भी।
बहती मजुला नारी नर मन चर अचर आधार भी॥
तप प्रभाव तेरे सिया रट हामई दृग भक्ति म।
राम क पद कमल पर चित थिर रहो निज शक्ति म॥
राम न वन वास सीता रजकवचने दयकर।
धम कर मर्यादा राखी स्वए सीता सेवकर॥

कठिन पथ पति रायन वन-म चरणपद्मी सुत छोडकर ॥
आश्रम वाल्मीकी विनाये पद कमल कर जोडकर ॥ 7 ॥
राज तज वनवास का पथ ले दिखाया राम न ॥
भ्रात मातु प्रेम समता मानी करुणाधाम ने ॥ 8 ॥
कठिन पतिव्रत जनक तनया विश्व मे दिखला दिया ॥
पत्नी व्रत उपदेश गह श्री राम न सिखला दिया ॥ 9 ॥
राम सीता जगत क आदश मगल रूप है ॥
यह हरि धर ध्यान-दोनो अखिल ब्रह्मस्वरूप है ॥ 10 ॥

जय रामसिया (रामसिया प्राथना)

जय राम सिया मन मन्दिर के हृदयासन आन विराज रहो ॥
डूबत जग दुख सरिता म आकर के मेरा हाथ गहो ॥ 1 ॥
तुम मर्यादा पुरषोत्तम हो जग नर नारी पथ दिखलाया ॥
मात पित सम्मान गति का आ-जग फिर उपदेश कहो ॥ 2 ॥
बाल तरुण वय लीला की युक्ति रस सार भरी बाते ॥
तव तन म मेरे हृय शोम आश्चय उपजता नित्य रहो ॥ 3 ॥
राम रोम रग पद तेर रस मम मानस मधु चूम रहा ॥
हरि बँध जात पथ दशक प्रभु के धार चरण रज शीश चढ़े ॥ 4 ॥
चतुराश्रम की मर्यादा युत हो जोवन दीघ कृपा करके ॥
वरदान हमे दो सुमति का हिय भक्ति रस की धार बहे ॥ 4 ॥

सातवा विश्राम

भज प्रिय राम [राम प्राथना]

भज प्रिय राम लज्जित काम करुणाधाम दुःख हरम् ॥
भव भय हारी पापतमारी जय असुरारी मोदकरम ॥
आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्द ब्रह्मपरम ॥
भज प्रिय राम ॥ 1 ॥

मजुलवेश पूज्य सुरश मद दनुजेश सदा हरम ॥
कुडल मुकुट सरयू निकट गगा सुतट कलि करम ॥
नयन विशाला गल मणिमाला शोभित माला सीय वरम् ॥
भज प्रियराम ॥ 2 ॥

दीपीन भृकुटि पीत दुपट्टी हरिसमतनुकटि मधुर स्वरम ॥
त्रिभुज कपाल सुदर चोक छवि अनमाल धनुष धरम् ॥
अधर अरुणता श्यामतरुणता टरति कुमगता नान गृहर ॥
भज प्रियराम ॥ 3 ॥

शतदल नयन शोभा अयन धृतशर चयन कृतसमरम् ॥
कटिपीताम्बर भक्ति उजागर सब सुखसागर विपद टरम् ॥
अतुलित तेज भ्राजितभ्राज कान्ति सुपुञ्ज विश्वभरम ॥
भज प्रियराम ॥ 4 ॥

लीलाधारी प्रिय त्रिपुरारी अनाकारी पितुहि चरम् ॥
जगदाधार हरभूभार अपरम्पार महिम वरम् ॥
वद्य हरि पद-राम राम वद विकसित नितरद जनमनरम ॥
भज प्रियराम ॥ 5 ॥

वड भागिन (सवय्या वाल भाकी)

बड भागिन तुम नदरानी थी कृष्ण की मातु कहावत हो ॥
श्याम सरिखे लाडिले को खिला प्रेम की गगा नहावत हो ॥
मर्यादा कुल की पालन कर धम की नदिया बहावत हो ॥
पूव जन्म के "हरि" जप तप फल सुत का जन्म बतावत हो ॥ 1 ॥
नटवर ! तुमतो कहावत हो प्रिय ! हमसे कहते ला नट को ॥
तुमसा दूजा नट नही जग मे जानत है सब के घट को ॥
सुन्दर छवि तो मोहिनी हारी देख देख पीले पट को ॥
सजनी नटवर नट मागन "हरि" करलो दशन को चट को ॥
कृष्ण कन्हैया आँख मिचौनी खेलत सखि नद आगन सोहे ॥
कभी घोडिया कभी ऊटडा कभी वषभ बन मन को मोहे ॥
आपस मे जावें वारी से दधि माखन "हरि' मागन कोहे ॥
धूल के धाब से भर निज तन खूब हसे दस सागन कोहे ॥ 3 ॥

श्याम तोरी (कृष्ण छवि भजन)

श्याम तोरी तिरछी तिरछी भौह ॥
देखत प्रेम भये जड चेतन मुनियन के मन मोह ॥
मजुवदन सरसी रूह लोचन शत अनग छवि सोह ॥ 1 ॥
दशन पक्ति ज्यो दामिनी चमके घनबिच सूय छिपी हैं ॥
अनकावली के भु ड समूहन कान्ति कपोल बिछो हैं ॥
पद पकज पे लाली रची ज्यो इन्द्र वधू हरषो हैं ॥
प्रेम के फूलन की माला लिये गावत "हरि' यह दोहैं ॥ 3

कृष्ण करत (रुक्मिणी सग कृष्ण हास्य वणन)

कृष्ण करत भकभोरी प्यारी रुक्मणीजी के सग ।
श्याम कहे सुन वावरी बात कहू मै तोय ॥

मगधाधिप को छोड़ के क्या वर लीन्हा मोय ॥
हम तो चगन हारे गैय्या गोपिया के मन मग ॥ 1 ॥
बडे बडे मनु गात के गुणीजन भूप समाज ॥
छाडि मोहि पाले परी कपटिन के सिर ताज ॥
हम सब अपनी ले के गउरिया फिरत फिरत बन तग ॥ 2 ॥
रूप गौर को त्याग के आई लेर कुरूप ॥
सखियन मन ना भावती ज्यो बिन जल का कूप ॥
घनश्याम की अचरजयुत बतिया सुन रुक्मणि हो गई दग ॥ 3 ॥
रुक्मणि की बदली दशा वसुध रहा ना मान ।
थर थर कांपत अ ग सब तन का रहा न ध्यान ॥
माधव सोचकरत रुक्मणि के शिथिल हो गय अ ग ॥ 4 ॥
श्याम सुनामन हाथ मुख पोछ पसीना माथ ॥
रुक्मणि मने की हसि तु तो हुई गई ज्यो पाथ ॥
"हरि" प्रेम परीक्षा लेने को तेरी रच डाला यह रग ॥ 5 ॥

मोहे श्याम (श्याम रूप वर्णन)

मोहे श्याम सलोने आनन की निन मोलूडी आवे ॥ टेर
मुग्ध हुआ जग मज मूर्ति स
अधर सुधा वरषावे ॥ 1 मोहे ॥
मुनिमन पालक खलदल घालक ॥
भक्तन दु ख नशावे ॥ 2 ॥
वेणुगीत गावत धेनुन बिच प्रेम सुधा सरसावे ॥ 3 ॥ मोहे
रिम झिम रिम झिम नाच करत मग ॥
युवतिन के मन भावे ॥ 4 ॥ मोहे
लट लटकत घु घराली कपालन ॥
कटि मगराज लजावे ॥ 5 ॥ मोहे
"हरि" बाजती सुनि बशी श्याम की हृदय कली खिल जावे ॥ 6 ॥

कान्ह तोरी (कन्हैया शोभा वर्णन

कान्ह तोरी बदन की कांति निराली ॥
रुम झुम रुण झुण घु घरु बाज पद सरोजन पे लाली ॥ 1 ॥ टेर
गण्डस्थल केशन वेणी जिमि सोहत नागिन काली ॥
नाक नथिनिया हाथ पहु चिया कानन मजुल बाली ॥ 2 ॥
ग्वालिन लाड करत कर चमत और बजावे तारी ॥
मोर पख माथे पर बाधत चूटिया गू थत आली ॥ 3 ॥

बाल मुकुन्दानद नन्द हैं ये छोटे वन माली ॥
वैद्य हरि बलिहारी छवि पे लट लटक्त घु घराली ॥ 4 ॥

सावन मास [सवैय्या कृष्ण राधा भूलन)

सावन मास हिंडोले भूलन चाले कृष्ण मुरारी ॥
सखि यामिनी विच ज्यो दामिनि–शोभित राध प्यारी ॥
राधे कृष्ण को सम हिंडावे दे दे कर कर तारी ॥
गीतन गान करत मद हासी दे दे मीठी गारी ॥ 1 ॥

श्रीजसुमति को बाल कृष्ण की झाकी सवैय्या

श्री जसुमति के द्वार गया प्रिय श्याम की छवि अवलोकन को ॥
लख नदकुमार नयन में धार वही भरी प्रेम प्रमाचन को ॥
रूप हिये म ठगा सा रहा और ज्ञान रहा नहीं सोचन को ॥
मन मंदिर म नित चाह बनी "हरि" दशन दा इन लोचन को ॥ 2 ॥

नैनने (श्याम शोभा सवैय्या)

ननने खीचा सखि श्याम क समझ नही कुछ आवत है ॥
नवकज कलेवर लाल विलोचन कोटिन काम लजावत है ॥
मोहिनी सूरत हसमुख आनन खैचत छोडत जावत है ॥
"हरि" अनुपम आनन्द कासो कहू श्री कृष्ण सदा मन भावत है ॥ 3 ॥
धन भाग बडी नन्द की रानी नित कृष्ण कपोलन चूमत है ॥
जन्म जन्म जर जरित कलेवर तपसे मुनिजन भूमत है ॥
ऐसी मजु मूर्ति "हरि" देखत शिव सनकादिक घूमत है ॥
जे मायावश जीव चराचर अलि कलि पकज भूनत है ॥ 4 ॥
घनश्याम का ध्यान लगा के प्रिय ! तेही और को ध्यान कियो न कियो।
मन्दाकिनी का पावन जल पी कूप का नीर पियो न पियो ॥
देश प्रेम और राम प्रेम से मुक्त हो और जियो न जियो ॥
वद्य हरि सत्पात्र को दान दे और को दान दियो न दियो ॥

मातु जसुमति को ग्वालिन का उलाहना सवैय्या

मातु जसुमति देहु उलाहना श्याम सुदर का तोसे आज ॥
गेह गगरिया दहि दूधन की फोड दई मेरो किया अकाज ॥
धाई जब मैं पकडन को तब आयो मैय्या के ढिग भाज ॥
'हरि" कहत है कृष्ण कन्हैया मुख मरोड नन्द बाबा को राज ॥

मोर मुकुट दोहा कृष्ण भक्ति वणन

मोर मुकट मुख बासुरी सग धेनु और ग्वाल ॥
यह मूरत मोहिनी बस जा मन सदा– निहाल ॥ 1 ॥

मुख दधि माखन हाथ मे नाचत नन्द किशोर
जब चित चाया ग्रहण को भाग गया चित चोर ॥ 2 ॥

मोर पंख के सिर मुकुट हाथ मे वेणु रसाल ।
भक्तन के हिय मे बसे मन्द हसत नन्द लाल ॥ 3 ॥

कमल नयन मुख सावरे की मदी मुस्कान ॥
देखत सजनी आज मैं प्रेम विवश हू जान ॥ 4 ॥

श्याम सलोने कृष्ण का गीतामृत पी चित्त ॥
यही विश्व आलोक का सबसे सच्चा वित्त ॥ 5 ॥

(बंशी बाजी) कवित्त

बंशी बाजी मधुबन सावरे किशोर की ॥
जा म निकसत राग छत्तीसा ही रंग है ॥
स्वर माधुरी म लाजे कोकिल क कंठ को ॥
गावें जिमि रति और प्रेम से अनंग हैं ॥ 1 ॥

मुरली की धुन सुनने को आई गय्या सब ॥
ब्रज वनितहिं दौडी सखियन संग है ॥
आनन्द उमग मन जो वन की छटा सोहें ॥
देख सुन "हरि" हिये बहे प्रेम गंग है ॥

बोली श्याम को प्रेम व्याज से ताडना । कवित्त

बोली जसुमति कान्हा छेड खाना आजकल ॥
रात दिन करते हो ग्वालिन क संग मे ॥
दधि नव नीतन की फोड के कुल्हडिया ॥
कुछ खाय कुछ बिखा भागत हो जग म ॥ 3 ॥

अच्छी नाही बाण यह तुम्हारी कहती हू श्याम ॥
कान काट हाथ बाध लटका दू गंग मे
मोहन मुलक दीन्हा भया जी को प्रेम क्रोध ॥
'हरि' रास गई सब छतियन तंग म ॥ 4 ॥

1 = अर्थात क्रोध स्तनो मे जाकर दूध मे परिणत हो गया॥

श्याम सुन्दर घूम नन्द की बगिनिया
चित्त को चुराके खेल खेलत अनोखे हैं ॥
मोही उन्हा खेल जातें सब ही ग्वालन को ॥
बहुत घुमावत द पिदावन चाम्हे है ॥ 1 ॥
कभी खेल मीच आख चपत की मार भागे ॥

गेंद मढी सोहनि ज्यो जाली के [illegible] ॥
कहने को भूठी राखे रेख मन मोह[illegible] ।
हुए ग्वाल वाल 'हरि' का हन्ह के [illegible] ।
चलो मना कृष्न झाकी दर्शन ।

चलो मन झाकी देखन को ॥

केकी पख मुकुट सिर सोहे [illegible]
मजुलभाल सुधरण तिलक की [illegible]
गल फूलन की माल सजी [illegible]
भक्ति सुधा बरषत नित [illegible]
श्याम छवि लख हर्षित [illegible]
'वैद्य हरि' बनी ए[illegible]
श्याम दुलारे कृ[illegible]
श्याम दुलारे पिया[illegible] ।

आजुवनी । न दलाल शोभा वर्णन ।

आजुवनी कैसी प्रतिभा हैं सजनी श्री न दलाल की ॥
मुख पर तज अरुण अधरामृत शोभा बिन्दु हरताल की ।
लट लटकत घु घराल कज की और छटा बन माल की ॥
कली पाग किरीट शीश पर श्री चमकत है भाल की ।
कटि कि किनी पग नूपुर बाजे बलि जाऊं ठुम चाल की ॥
मन्द मंद मुस्कान निराली तिरछी चितवन हाल की ।
"हरि" न्योछावर सु दरता पर भाज कृष्ण गोपाल की ॥

श्याम शिगार शोभा वर्णन ।
श्याम किशोर चित चोर सखी प्यारा है ॥
मोहिनी मूरत तिरछी चितवन है ।
कमल नयन मुख चन्द्र सा उजारा है ॥
शीश मुकुट मणि मरकत मजु सोहे ।
व दावन वासी प जादू साही डारा है ॥
वशी बजावें प्यारी धेनु चरावें सारी ।
तब ही गोपाल नाम धारा बशीवार है ॥
चारु तिलक शोभा मुख करत मनु ।
पीठ जटनि कच सौंप का सा कारा है ॥
पीत रगन कपट कटि चमक ।
ज्यो ही गगन बिच दामिनी म तारा है ॥
कृष्ण चन्द्र घनश्याम राम आनन्द धाम ।
वसहु "हरि" क हिय नाम यह सारा है ॥
सुत मुख चूमत । नन्द का श्याम मुख चुम्बन ।

सुत मुख चूमत नन्द महर है दख सखि मन राजे ॥
मदु मदु रक्त कपोलन को लख अरुण सूय छवि लाजे ।
कान्ह कपोलन पर बालन की गुदगदी हात ही भाजे ॥
धावन धावत नूपुर किंकिणी छुन छुन घु घरू बाजे ।
हसत कहत चुम्बन नही अबके देहु —कहहि मुख भ्राजे ॥
दक्षिण अधर मधुर पितु मरा वाम अधर कडवा जे ।
एसी माधुरी बोली पे हरि' हृदय बदरिया गाजे ॥

यशुमति । नन्द का यशोदा प्रति कृष्ण चुम्बन व

मुख जब चूमू प्यारे किशन कुमार का।
कोमल कपोलन मे आनन्द सुधा वहे ॥
जिह्वा पीज्यो रस कह अमरीत धार का।
काहा जब कहे वावा मीठा यह कपोल है ॥
दूजा कटु मुख हाव चुम्वन से खार का।
तोतली सी माधुरी सी बोली सुन श्याम की री।
"हरि" हिये खुशी जैसे प्रेम हो साकार का॥

काहू कहे। मिश्री माखन व्योजन मातु चुम्बन दान।
काहू कह मातु मोहे मिसरी माखन दे दे मधुर कपोल मेरे तव चुमलेनारी
मिसरी माखन बिन खारे सूखे मेरे गाल नन्द वावा वोले जव देवे थे चवेनारी।
वात सुन यशुमति सुधा भरी श्याम की हिये मे हरषि मन आनन्द दवेना-री।
सुन सखी वड भागी नन्द की पियारी रानी "हरि" मुख चूम लीना मजुल मुखेना-री

वीथिन विच कृष्ण प्रति ग पी प्रेम

वीथिन विच मथुरा नगरी की घूमत घूमत हार गई।
श्याम सुदर को भटकति ढूढन मैं जमुना के पार गई॥
होने लगा रजनी मुख सजनी काम धनुष की मार भई।
थकित हुई निद्रावश स्वपूने मैं प्रियतम हार भई॥

(सजनी घर मोहन ध्यान)

सजनी घर ध्यान सदा उर मे उस मोहन नन्द दुलारे का।
सब शास्त्र मध्य गुण उसका है यह सत महत वखान रहे॥
कर नर नारी विश्वास रात दिन भय भव भजन हारे का।
इस देह धरण का धम यही हो प्रेम सदा पद पकज मे॥
अखिया मत थक तू देख सदा उस रूप मजु रतनारे का।
गुण उसका गा रति उसकी पा चित उसके ऊपर चलना है॥
'हरि' चलता विश्व सदा आया उस पथ मे कृष्ण पियारे का।

सखि व्याज से कृष्ण प्रति गोपी प्रेम

सखि=व्याज से श्याम वुलावत है नेरी लट उलझी सुलझारे।
अलकावली मदन की दूती भृकुडि वाण है चढा हुआ॥
कज्जल रेख बनी नयनन म अधर से अधर मिला जारे।
कवु ग्रीव अजु चन्द्रानन लटे ज्यो नागिन काली है॥
बशरी पू गी वजा मनमोहन इनका जहर मिटा जारे।
अनुपम प्रेम अगाध सरोवर तट मे कृष्ण विराजत हैं॥

डूबत वाह गले विच डालो नौका पार लगा जारे।
मग्न हुइ तव छबि निरख के प्रीतम मन को खींचत हो ॥
"हरि" सविनय अर्ज तिहारे से मोहे प्रेम की झाकी दिखा जारे।

(रुण झुण) कृष्ण बाल झाकी

रुण झुण रुन झुन माधुरी ध्वनि से घु घरु बाजत यशुमति सुत के।
गावत नाचत ग्वालन के संग शब्द ठुमक हो रहे प्रयुत के ॥
अधर सुधा से पुष्प झड़त 'हरि' ज्यों वर्षा और सावन रुत के॥
सजनी प्रतिभा देख ठगी मैं सुध ना रहा जीवन इत उत के।

सखि श्याम (कृष्ण प्रेम)

सखि श्याम घटा की छटा को निरख मन व्यापत आज अनुंग मेरे
यह माघ की कारी रात वहेले–शीत समीर के घनज घनेरे ॥
मन अटका विश्वात्मा में–नहीं सुध बुध देह की साझ सबेरे।
"हरि' दासी पे करो दया अब प्रेम मंदिर में शयन के डेरे ॥
सजनी सुख के धाम उन्ह से । चित मे तू धरती रहना।
नेम उन्ही में प्रेम उन्ही में देन उन्ही की सुखी बहना ॥
जीत उन्ही की हार उन्ही की उन्ही की प्रेम से नित सहना।
"हरि" जग के वे उजियारे हैं तू उन्ही का निर्मल यश कहना ॥

मोहन प्रेम

मोहन मोरी नैया तो बिन मझ विच क्या धचकाले।
पार खिवया हो जग के–हुए–सूरदास से भोले ॥
बलि जाव ' हरि', चरण तुम्हारे मंजु हृदय पट खोले।
विषयन में लवलीन उमरिया जाग जगत को जोले ॥

होरी खेलत नंद किशोर सखि समेत राधा संग होली खेलन

होरी खेलत नंद किशोर सजनी राधे राणी संग। टेर
वीथी सजी है पुष्प वसंतन रंग विरंगे साज सजे ॥
नील कंठ केकी बोलत है पिहू चहूँ ऋतु वर राग जगे।
सखियन पंक्ति निरीक्षण करते चित्त में उठी उमंग ॥
एक पात्र विच रंग वासंती दूजे लाल गुलाल भरे
हाथ में ले पैनी पिचकारी श्याम खड़े हैं रंग भरे ॥
छांटत कंचुकी मध्य रेख पर वदन होत है तंग।
सखिया का मन मचला मेनन होरी थी घनश्याम ॥

रग गुलाल मदु हाथो मे ले राधा सखि अभिराम।
"हरि" माधव के लेप रही है योवन सा मद भग ॥

सदा वह श्याम की मूरत-भजन

सदा वह श्याम की मूरत हृदय पर रग जमाती है।
निरख के मोहिनी छवि को हिये मे हप भरता है ॥
सदा हो लालसा दशन की रट जिह्वा लगाती है।
इसी कली मे बना दुलभ सदा उस ईश का दशन ॥
कवि तुलसी ने गाया जो यही माया प्रभाती है।
भ्रमो को छाड सारे नर लगा तू राम की नित रट ॥
उसी मे पार हो वडा यही श्रुतिया बताती है।
अहर्निश सब ही कामा म उसो का ध्यान धरता जा ॥
"हरि" जग के पियारे वे सभी के वही नाती है।

बशी वट के नीचे श्याम दशन

बशीवट के नीचे देखा मैंने सजनी श्याम।
रक्त चरण मे नुपूर सोहे लाजत शत शत काम ॥
छवि विलोकी मजु मोहन की हर्षित सब अ गमाम।
हाथ मुरलिया चमकत कु डल कानन मे अभिराम ॥
भकुटि तिरछी चितवन तिरछी मोहित है सब बाम।
मद हास्य से बोले मोहे खुशी रहो तुम बाम ॥

मधुरा धर के मुख स वाणि माधुरी निकसी ललाम।
हप हिय म ठगी सी रही छवि निरख के आठो याम ॥
'वैद्य हरि' उनके गुण गा तू वे ही करुणा धाम।
बशीधर कृष्ण की जय हो

अष्टमो विश्राम

जमुना जाती है (कष्ण प्रति गगरी भरण प्रेम)

जमुना जाती है गगरी भरन को डगरी रोक मत जाने दे।
नन्द के लाला मधुर वारि से हिय की प्यास बुझाने दे ॥
पाच सात के लगभग ग्वालिन ले गगरी निकसी घर से।
श्याम सुन्दर माग बिच मेंटे कहन लगे ग्वालिनी वर से ॥
माखन दहि मोह देना सदा-थोरि बशी की टेर सुनाने दे।

दहि माखन की स्वीकृति करते सुनन लगी मुरली की तान ॥
मोह गई रही सुधि देह की भूली ठगी रस गया पयान।
रसी माधुरी वशी की धुन ध्यान हृया-जल लाने दे ॥
कृष्ण कपालन की सुदरता और निरख मदी मुस्कान।
घु घराले आनन की लटिया नयन मजु हैं कमल समान ॥
प्रिय नीचा तब आकर्षण म रूप म रूप मिलाता दे।
आपस म सब सखी सहेली करन लगी मोहन की बात ॥
मोहन नट नागर ने कीन्हा तिरछी चितवन हृदय आघात।
'हरि' प्रेम म अपने नदलला से प्रेम पाश उलझाते दे ॥

श्याम की माधुरी भजन

श्याम की माधुरी हृदय समाई। टेर
खावत पीवत सोवत जागत मन म रुचि सरमाई ॥
चालत हालत बोलत तोलत नह सुधा वर्षाई।
ऊठत बैठत नारी मानव ! कभी नही भाव भुलाई ॥
मूल पडित साधु असाधु की दोषावली मत गाई।
'वैद्य हरि' यह मार्ग प्रदशक उपदेशामृत भाई ॥

मा नट से भजन

मा नट से नाच करा रे। टर
नट कहता है व दर बदरिया को तुही गान सुना दे ॥
नन्दलला को नाच उछल कर बानर तू ही रिझादे।
मय्या बानर वानरी बोलत नाही तू ही बतादे ॥
दोनो नाचत गीत हवा स कपडा लाल रगादे।
पहना के कपडे दोना को ब्याह का साग रचादे ॥
सुनि सुनि बातें भोरी श्याम की ग्वालिन मन मनमादे।
मय्या बोली तू खुद नटवर ! पैजनी अपनी बजादे ॥
" हरि" सब सखिया मातु श्याम करे बलिहारी के बादे।

कभी श्याम । हसे सवैय्या

कभी श्याम हम मुख मातु का देख क मातु हसे मुख श्याम कारे।
हसत हसत कह जननी दुलारे क्या लेगा ! तू चदा र ॥
ऐसी छवि को देख सखि जो खुशी न हो वह मदा रे।
वद्य हरि ऐसा बडभागी नन्द यशुमति का बन्दा रे ॥

नन्दरानी के गेह गई (सवय्या)

नदरानी के गेह गई जेहि आगण खेलत कृष्ण कन्हया ॥

पीत भगुलिया श्याम कलेवर धूरि भरे बलदाउ के भैया ॥
लट लटकें घु घराली कपोलन पे मोहित "हरि" देख के मैय्या ॥
बंशी बजाव सबही रिझावें रीझी सब वृन्दावन गैय्या ॥ 2 ॥

श्री कृष्ण की तिरछी चितवन को लख हर्ष हुआ मेरे मन मे ॥
मोर मुकुट पीताम्बर काछे सोहत मूरली मधुवन म ।
राग अलापत वशीकरण की मोह गई प्रतिक्षण क्षण म ॥
प्रेम की गाथा सखि क्या कहू "हरि" श्याम मय सब घन मे ॥ 3 ॥

ग्वालिन मोहित (मूरली वादन पर)

ग्वालीन मोहित हुई श्याम पे सुनकर मीठी मुरलीतान ॥
कहन लगी इस बंशी के बश को न मुग्ध है जग मे जान ॥ 1 ॥
पाकालय के सूखे ईंधन म हो गी रसता आह्वान ॥
इस मूरली की माधुरी से जड म चेतन का होता भान ॥
मुरली मधुरव सुन युवती मडल ने छोडा सब कुछ भान ॥
वे सुध बुध हो मोह गई सब सुन मुन माधुरी की मधुरान ॥ 3 ॥

यही मधुरता मधुर रूप म बनी रहे साकार समा ॥
"हरि" कलेवर आनन्द उपजा सुनकर मूरली मधुरव कान ॥ 4 ॥

श्याम तुम्हारी मोहिनी (ध्यान प्रेम)

श्याम तुम्हारी मोहिनी मूरति बसी सदा हृत्पटल रहे ॥
जग के सब कष्टा स टकरा के भी तव गुण गान कहे ॥

मधुराकृति की माधुरी पी पी नयन म प्रेम का नीर बहे ॥
"हरि" मन मदिर सुन्दर आगण मे बैठा क चरण गहे ॥ 1 ॥
मुग्ध हुई म छवि विनोकी उस श्याम सलान आनन को ॥
बंशी बजावे धेनु चरावे लाली रची मुख पानन की ॥
ब्रजललना सब मुग्ध हुई शोभा लखके उस कानन की ॥
राधा कात "हरि" नन्द छवैया की मधुरिम प्रिय गानन की ॥ 2 ॥

सखि ललिता म भरके गगरिया आन लगी जब सावन मे ॥
राह मिले "हरि" चित्त चुरैया सुध बुध रही न आवन मे ।
धीरज भागा हकी बकी रही गगरी फूट गई नावन मे ॥
ज्या कुमुदिनी हिमकर सग सरवर–मुग्ध हुई मन भावन

जमुना तट (श्याम क्रीडा)

जमुना तट बलदाउ के सग मे खेलत मोहन प्यारा है ॥
वदन सरोरुह मे मनि निकसित वाणी ज्यो अमृतधारा

गेंद को फेंक के बोलत काहा अबके दाव तुम्हारा है ॥
जीत गया वह अश्व बनावे–उसपे–चढे–जो हारा है ॥

श्याम घर अधरन (श्याम स्वप्न दर्शन

श्याम धर अधरन पे अधरान । टेर
सपने म सजनी मोहन से मिली एक दिन आन ॥ 1 ॥
भाग चले फिर हाथ न आये ठगी रही मोहि जान ॥
उस आनन्द की शोभा का सखि कभी न होता भान ॥ 2 ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे कुण्डल झलकत कान ॥
बलि जाऊ म कमल नयन पर सुन वंशी की तान ॥ 3 ॥
आज सुना मन की खुशियो का मुझ को होता भान ॥
वैद्य हरि के हिये बसे सखि श्याम सुन्दर छवि आन ॥ 4

आजा आगन मे (यशुमति बुलावना

आजा आंगन म घनश्याम ॥ टेर
ग्वालिन बालन के संग खेलत बीते आठो याम ॥ 1 ॥
भूख प्यास को तू न गिनत है यह नहीं सुन्दर काम ।
तव बाबा से कहू आज म काहे हुआ है हराम । 2 ॥
मार पिटाऊ हाथ बधाऊ और लगाऊ डाम ॥
दधि माखन तू जी भर खाले और फलो मे आम ॥ 3 ॥
गरमी व्याकुल जीवन करती पड़े भयंकर घाम ।
वैद्य हरि न्योछावर जसुमति माधव पे अविराम ॥ 4 ॥

घर सजनो [श्याम प्रभा कथन

घर सजनी मोहन आय । टेर
सुन्दर भौं गोरोचन लेपन भाल चार चमकाये ॥ 1 ॥
शीश जटा मुख मंजुल मुरली कोटि मदन छवि छाय ॥
कमल नयन अम्बुज आनन पर स्नेह सुधा सरसाय ॥ 2 ॥
वृन्दावन की कुंजगलिन विच राग छत्तीसो गाये ॥
श्याम कलेवर गज वैजन्ती गजराज हिहित धाय ॥ 3 ।
तेज पुंज मस्तक पर शोभित भास्कर कान्ति लजाये ॥
घट देखत प्रभु वैद्य हरि तोरी प्रिय चितवन मन भाये ॥

मंजुल मुखारविन्द कवित्त

कमल नयन श्याम घन सा शरीर सो है ।।
हाथ मंजु मुरलिया ग्रीवा मे रूमाल है ।। 1 ।।
याको चितवन जाकी देखवे हृदय "हरि" ।।
रूप का स्रोत बहे करता कमाल है ।
कटि पीतपट धरि माथे प कज्जल रेख ।।
कानो अलकावली औ मोटे प्यारे गाल हैं ।। 2 ।।

जय कुंज बिहारी (कृष्ण कीर्तन)

जय कुंज बिहारी कृष्ण मुरारी भव भव हारी पाहि हरे ।।
जय शोभा धाम मंजु ललाम लाजत काम पाहि हरे ।।
जय मोर मुकुट छबि पीताम्बर फबि ज्यो हिम कर रवि पाहि हरे ।।
जय राधा प्यारे नन्द दुलारे यशोधा धारे पाहि हरे ।। 1 ।।
जय मुरली वादन सब अभिवादन जन प्रतिपादन पाहि हरे ।।
जय गोपीरंजन नयन सुखंजन सब दुःख भंजन पाहि हरे ।।
जय आत्माराम पूरणकाम घनवत् श्याम पाहि हरे ।।
जय दीन दयालु भक्त कृपालु मुनिमन पालु पाहि हरे ।। 2 ।।
जय देवकी नन्दन दुष्ट निकन्दन खलमद गंजन पाहि हरे ।।
जय कंस निपूदन प्रिय मधुसूदन ! राक्षस तूदन पाहि हरे ।।
जय आनन्द कन्दन सच्चिदा नन्दन हृद जग फदन पाहि हरे ।।
जय योगिपुराज सकल समाज सब जग ताज पाहि हरे ।। 3 ।।
जय पूतना चोषक किल्बिष मोषक सब दुःख शोषक पाहि हरे ।।
जय ब्रजनन्दन गोयुत वन्दन सब पद छदन पाहि हरे ।।
जय ब्रजललनाहिय वसहु सदा पिय चिरजीवजिय पाहि हरे ।।
जय भक्ताराम "हरि" विश्राम शोभा धाम पाहि हरे ।। 4 ।।

कमल नयन (राधा से कृष्ण परिचय)

कमल नयन उर मोतिन माल है शीश जटा अलकावली सौ हैं ।।
जसुमति प्राण समान पियारे नन्द बाबा के आगन सो है ।।
कुंडल कानन मकराकृति सब ग्वालन बालन के मन मो है ।।
जानत हम के पूछति सखिया राधिका श्याम तुम्हारे को हैं ।। 1 ।।
सखियन सुन्दर वाणी सुनि "हरि" प्रेमसनी राधा रानी ।।
रूप हिये सकुचाई कछु हो ओट की घुंघट लपटानी ।।
हमी हसी बातें श्याम लला की कह सहेली ।
अनुराग भरी नदिया उमडी घटा श्याम ने

वसहु मोरे (श्याम प्रेम)

वसहु मोरे हृदय पटल म श्याम ॥
कोमल वर कमलानन सु दर लाजें कोटिशत काम ॥ 1 ॥
गु ज पु ज का मुकुट धरे सग खेलत है बलराम ॥
मुरलो मधुरव करत फिरत हैं वृन्दावन के धाम ॥ 2 ॥
मोहिनी मूरनि सोहिनी सूरत शामा मजु ललाम ॥
मथुरा की बीथिन विच सोहे पूरण चन्द्र ज्यो श्याम ॥
धम मजु सम-पाप प्रहारी–ऐसा सात्विक नाम
वैद्य हरि दिन रात रटाकर प्रेमहु आठो याम ॥ 4 ॥

घनश्याम मातु स (कृष्ण बाल क्रीडा)

घनश्याम मातु से कहत अम्मा चन्दा लादे मेरे को ॥
सदा मोहि तू या ही भुलावे बान पडी यह तेरे को ॥
चन्दा स खेलें हम भैय्या फिर लौटा दू सवरे को ॥
जसुमति ने यो कह भुलवाया चल आता यह नर को ॥ 1 ॥

ग्वालिन ने (ग्वालिन प्रेम)

ग्वालिन न मोहन को पकडा चोरत दधि नवनीतन को ॥
बहुत दिनन स आय पकड मे दधि से स पी भीतन को ॥
दधि मक्खन मरा सब लादो कैद करू ताहू जीतन को ॥
श्याम डरे कछु मुस्काये प्रिय ग्वालिन के मन चीतन को ॥
मन्द मुस्कराहट मोहन की सुन ग्वालिनी हुई प्रेम मगन ॥
जन्म जन्म हो भेंट तुम्ही से प्रेम तुम्ही से और लगन ॥
मैं यामिनी तुम प्रकाश कर्ता हिमकर तारा गण ज्यो गगन ॥
नन्द लाल पर बलिहारी है वद्य हरि और कुटुम्बगन ॥ 2 ॥

सुन्दर नयन मे (कवित्त)

सुन्दर नयन म रेख पडी कज्जल की ॥
माथे प मुकुट मार पख शोभा देत है ॥
कानन के कुडल म हीरा सोहे चपला ज्यों ॥
ओठो की गुलाबी लाली मन मोह लेत है ॥ 1 ॥
श्याम मुख गल वनमाल सोहे फूलन की ॥
देखत सबहि हिय उपजत हेत है ॥
परो म पैजनिया हाथो म कडलिया ॥
हरि सोहे कटि हेम तगडी समेत है ॥ 2 ॥

म नन्द के महल (कृष्ण प्रेम सवैय्या)

मैं नन्द के महल गई–यशुमति ले अङ्क मे श्याम नचावतु ॥

पद पकज नूपुर बाज रहे छवि देखत ही मन भावतु है ॥
कमल नयन मन्द हास्य अधर छवि कोटिन काम लजावतु है ॥
"हरि" रीझ गई उस शोभा पे जेहि वेद पुरानन गावतु है ॥ 1 ॥

वेणुगीत (कृष्ण शक्ति)

वेणु गीत गावे सखी वृन्दावन गोपाल ॥
तिरछी चितवन से सभी मोहे जग जजाल ॥
आज कान्ति से कष्ण की चमकत सब ससार ॥
वही तेज विद्युत सखि जिसमें बोलत तार ॥ 1 ॥

कुज विहारी श्याम शोभा

कुज विहारी शोभा को तू देख नयन भर आज सखी ।
वशी बजावत रास रचावत धेनु चरावत आज सखी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर तिरछी चितवन देखहु आज सखि ॥
कमल नयन पग नूपुर कुडल कानन सोहे आज सखि ॥ 1 ॥

नन्द लाल बोले (नन्द लाल कौतुहल)

नन्द लाल बोले मातु चन्दा सा खिलोना मुझे ।
लाय दे दे सखा सग खेल को रचाऊगा ॥
चमकत गोल गोल चन्दा सी छवि री मोहे ॥
पास मे बुलावे जब हथिया फलाऊगा ॥ 4 ॥
मैं धावत पकडन जब रोक देती है ॥
तू ही तो बताय दादा कैसे का रिझाऊगा ॥
धीरे से चपत जब गाल पे लगावे मेरे ॥
बाबा की अनबनी कैसे री सुनाऊगा ॥ 2 ॥

जसुमति बोली (बाल केली वणन)

जसुमति बोली प्रिय नन्द के कुमार सो ॥
तेरे बिन मेरा यह मन ना लगुत है ॥
श्याम बोले मातु जब प्रेम से पूण यह ।
दूध भर थन मेरे मुख म फवतु है ॥ 1 ॥
बलिजाऊ लला तेरी माधुरी वाणी पे मैं ॥
मन मेरो तेरे मुख चन्द्र पे जगतु है ॥
श्याम हस तोतरी सी बोली बाल उठे जब ॥
कृष्ण कपोलन क्यो कारे से रगतु है ॥
दृष्टि दोष लग जाय अये ! प्रिय लाल मेरे ॥ ६

सुंदर स्वरूप तेरा देख मंजु आनन को।
काजर लगाये क्यों ना लगेरी नजरिया॥
माची माची कह आज्ञा तेरी नहीं मानन को।
माता बलि गई वोंनी वाहू की सवारे सुन॥
हिये म आनन्द छाया देख फूले आनन को।
दवकी नन्दन कह मैना की सी मीठी बाणी॥
पूरित सुधा स आयो मधु मास फागुन को।

लगा के प्रेम भजन

लगाके प्रेम मोहन से क्यों विषयों में तू फसता है।
इसी भव दुःख तरने को सदा सद्बुद्धि देता है॥
स्मृति सन्मति की रहने पर क्यों पकज म तू धसता है॥
सहारा जिसका पाकर के तुझे माया नचाती है॥
सुनादे टेर ईश्वर को क्यों घर-घर पैर धसता है।
मधुर वाणी यह अपनी जो सुना के रात दिन प्यारे॥
तय मंजिल उसकी कर लेना उसी का नाम सस्ता है।
मझधार मे भटकी जो नौका लगाना पार वेरे हाथ॥
अभय या विश्व नाविक को "हरि" तो नित्य हसता है॥

कृष्ण राधिका (कृष्ण केलि)

कृष्ण राधिका प्रेम मगन हो करते थे कल्लोल।
हुई आनन्द मगन म सख के सुनत सुकोमल बोल॥
कमल कुसुम की मधुर महक मे भ्रमर रहा ज्यो गूंज॥
त्यो मन श्याम की मधुर गन्ध मे बन पुष्पन का पूंज॥

निरख नयन तू कृष्ण शोभा

निरख नयन तू कृष्ण छवि को शोभा जग की जो सारी॥
यही सफलता इसी जन्म की कहते रहते त्रिपुरारी॥
चमकीली मिथ्या माया को देख नयन तू मत ललचा॥
आखिर सार यही निकलेगा शोभा धाम से सब हारी॥
सृष्टि के सब जीव चराचर लख मोहित हो जाते हैं॥
तज ईर्ष्या पाखड छलों को अन्तर दृष्टि भज प्यारी॥
नयन व्याज से लीलाधर की अद्भुतता वरणन की हो॥
यही सार इन नयनन का "हरि" सदा होत है बलिहारी॥

धन्य जन्म उस बड भागी का नर रत्नो मे समझ प्रिये।
नयनाञ्जली के उपवन मे जिन की खिलती है फुलवारी ॥

मन आय बसे भजन

मन आय बसे घनश्याम। टेर
सुदर सुख की खान सदा जो हैं वे शोभा धाम॥

भृकुटी तिरछी है कर म बासुरी गावत मधुर ललाम।
श्याम वर्ण अलकावली काली छटा बनी शत काम॥

केकी पख मुकुट शोभित सिर कणमणि अभिराम।
पीताम्बर कटि-झलके मोती गल मे आठो याम॥
चरण टेढ मृदु हमी निराली खडे कदम्बक की छाम।
"हरि" धन धन खुश हाल जगत म मिले हैं पूरणकाम॥

कृष्ण कीर्तन

यह सुदर शब्द उचार मना श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे।
मधु सूदन श्री कस निकदन नाम कहे सब पाप टरे॥
अखिलानद का लाभ किया श्रीजसुमति बाबानन्द धनी।
धनवान खिला के अङ्क हुए श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे॥
उत्पात मचा था चहु दिशी मे जब प्रेरित कस के दूतो से।
क्षण मे उस कस के प्राण हरे श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे॥
जब ग्लानि धम की होती है तब त्राण सन्त की करते है।
धमथाप उत्पन हुए श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे॥
बाल्यकाल की मोहन लीला स्मर कर कु ज विहारी की।
"हरि' प्रेमगिरा से नित्य कहो श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे॥

श्री कृष्ण चन्द्र प्राथना राग सोहनी

श्री कृष्ण चन्द्र कृपानिधे अब तो दया कर दीजिए।
करुना निधे आनन्द सिन्धो शुद्ध बुद्धि दीजिए॥
विश्व के तम लोक म हम घूमते सब लोग हैं।
हम सबो को डस रहे यह मोह माया रोग हैं॥
दीन बन्धु! दीन रक्षक! नाम तव दु ख मे ग्रहा।
याद निशि दिन आ रहा जब मन फसा आधिमहा॥
पर त्राण इसका किस विधि हो बुद्धि मे आता नही।
मन मगा है मोह म प्रभु नाम भी भाता नही॥
देश सेवा भावना उत्थान हो सुविचार का।

माता पिता गुरु भक्ति का मधु वाणीर सदाचार का ॥
लवलीन हो मन सत्पथो मे आत्म बलसे युक्त हो।
दूर हो कुमति हमारी दुष्टता से मुक्त हो॥
मन स्वय निशिदिन से फसता आ रहा इस जाल म।
परिणाम विषमय है परन्तु लेख ऐसा भाल मे॥
सब सोच के भी ना समझ ह यह बडा आश्चय है।
नमति सब की इन्द्रिया नित धीर वीर जे आय है॥
मन खीचना अपनी तरफ कल्याणकारी हे प्रभो।
सफल जन्म मनुष्य का तव भक्ति स है ह विभो॥
गजराज नग अजामील गणिका को भी तुमने तार दी।
अब उबारो भव उदधि से वासना मे मार दी॥
आनन्द कन्द कृपालु भगवन जीभ नित रटती रहे।
ससार का यह सार है श्री कृष्ण कृष्ण सदा कहे॥
कल्याणकारी ताप हारी ब्रजबिहारी स्वरूप का।
दर्शन का ईच्छुक हे प्रभो अर्जुन के देखे रूप का॥
यश गान कर प्रभु आपका आनन्द छाया आज है।
तव रूप माधुरी दे दिखा यह चिर प्रतीक्ष समाज है॥
भगवान जाने अन्य मन की "हरि" हृदय आनन्द है।
धर ध्यान राधा कृष्ण का जो चहतु सुख सानन्द है॥

आज है आनन्द कृष्ण जन्म प्रसन्नता कवित

आज है आनन्द क बधावे घर सजनी।
कृष्ण जन्म श्री नन्दबाबा के भया है री॥
गोकुल मे छाई शोभा कोटि रति मदन की।
जसुमति नन्द महामोद औ दया है री॥
श्याम का मुखार विन्द नील कमल सा है।
नाम भी धरा है जा का कृष्ण कन्हैया है री॥
'हरि" भी मोहित छटा ऐसी शोभा धाम की पे।
हर्षित नर नारी लेत बलय्या है री॥

सुनी जब उस मुरली (कृष्ण मुरली प्रेम)

सुनी जब उस मुरली की तान। टेर
देह गेह की सब चिन्ता त्यज मधुर स्वरो का गान॥
प्रेम [illegible]

नीरस इंधन पाय सरसता बुझी अनल मन जान ॥
यह मुरली मनमोहकता की सदा उपजतो खान ।
अय ! आली तू करौं कुहर में सुन होवे हैरान ॥
ऐसी शक्ति पगी उसरव में पड़ी सुनन की बान ।
"हरि" इसमें संदेह नहीं है बजैया कृपानिधान ॥

आज सखि मानस (घनश्याम प्रेम)

आज सखि मानस में घनश्याम । टेर
स्वप्ने आली आय बिराजे कर मंदी मुस्कान ॥
गदगद कंठ प्रेम भरो वाणी से स्तुतिया को गान ।
चरण कमल प लोटन लागी हिये भक्ति रस ठान ॥
"हरि" प्रभु अंतर ध्यान हुए वह जप नित मेरा नाम ।

बड़ा है इन नयनन् का काम राम कृष्ण प्रेम

बड़ा है इन नयन का काम । टेर
राज तिलक प्रिय देख राम का सदा रही अबिराम ॥
दुःखी जिन्हों के नहीं सुराज में—वसुधा हुई सकाम ।
सुन्दर राम श्याम मृदु हसी लख शासक सब धाम ॥
कृष्ण प्रेम की वह शिशु लीला निरखी आठो याम ।
श्याम सलोने अम्बुज मुख के जब राधा थी वाम ॥
कुंजबिहारी मुरलीधारी रास बिहारी श्याम ।
"हरि" की अंखियन ने जब देखा पूर्ण हुई शतकाम ॥

रहो मोरे हृदय थली (गोपाल निवास प्रेम)

रहो मोरे हृदय थली गोपाल । टेर
केकी पक्ष मुकुट शिर अटनि तिलक छबि बनी भाल ॥
आकृति मकर किरीट कर्ण मे मंद हास्य नंदलाल ।
नील कमल मुख कोटिमदन छवि देखत मन है निहाल ॥
दामिनी वरण भगुला झलकत कर पहुंची मणिलाल
करि किंकिणी बनी जात रूप की गंथितमुक्त जाल ॥
पाय पैंजिनी नील हरित मनी गलगज मुक्ता माल ।
जसुमति नन्द परम धन सजरो मैं देखी छबि काल ॥
"हरि" छबि मानसरोवर मुक्ता मन बन चुगे मराल ॥

मन मंदिर (नन्दलाल प्रेम)

मनमंदिर मांय बिराजे री गलि जसुमति के नन्दलाल ।
कानन कुंडल नील वसन मुख मोर पंख को भाल ॥
मन मोहक आनपन था छवि मन्द हास्य मग जाल ।
नयन कमल भृकुटि अनग की अधरामृत में लाल ॥
चरण कमल मृदु नूपुर बाजत बंशी गल जयमाल ।
गा गा वंशी बजावत थारो नाचत सुन्दर लाल ॥
प्रेमनाप जा मारती रोही बाज उठे करताल ।
"हरि" न्योछावर श्याम छवि प गई कदम्ब की डाल ॥

मन फूल उठे (गोपाल मोद)

मन फूल उठे गोपाल ।
उदित चन्द्र के ग्रहण करन को भाग उठे ततकाल ।
कजरी के माखन खाने को मचल पडे नन्दलाल ॥
सखा सहित मां नाचे कूदे जसुमति मन खुश हाल ।
तू मां कहती-मूछ बढेंगे दूध पिये तेरे लाल ॥
प्रेम भरी सुन वाणी सुन-सुन माता हुई निहाल ।
"हरि" ऐसी गिरधर की शोभा हृदय धरी मैं हाल ॥

सखि मै गई श्याम दर्शन

सखि मैं गई श्याम अवलोकन । टेर
बाल झुंड में रजित थे वे श्याम मदन मन मोचन ॥
बाबानन्द के अंग उछल के चढते थे भव मोचन ।
देख ठगी सुन्दर भ्रू नासा कजरारे वे लोचन ॥
"हरि" प्रतिमा हिय शोभा धाम की नित सुरम्य दे सोचन ।

मोहे कुंजबिहारी (कृष्ण स्मृति प्रेम)

मोंहे कुंजबिहारी कृष्ण की नित याद हिये आवे । टेर
सदुपदेश जो भरे भागवत नर नित उठ ज्यों गावे ॥
कर कल्याण स्वदेश जानि का-गीता गान सुनावे ।
यही सार सब मानुष जन का भ्रम को दूर भगावे ॥
"हरि" [illegible]

मन रटु श्याम भजन

मन रटु सुन्दर श्याम किशोर । टेर
भवसागर की नौका को तट ले जाने का ठौर ॥
विषया की अंधियां मे फसा है तव चित यह कमजोर ।
आधि व्याधि से भरे जगत मे नहीं विपयन का छोर ॥
'हरि' अकुलाता अन्त जीव जब प्राण कठ की ओर ।

बनी है शोभा नन्दकिशोर

बनी है शोभा नन्दकिशोर । टेर
काली लटननि जटनि बधी है शीश पख छवि मोर ॥
चारु तिलक चिबुकनि लिलाट मुख कान्ति सजी है जोर ।
कु डल झलकें हास्य माधुरी बशी बजी चितचोर ॥
ग्रीवा मुक्ता माल कठ मे दिव्य मनी झकझोर ।
ठुमुक ठुमुक द्व चरणन नख शिख लख नाचत मनमोर ॥
पीतपटी कटि-दुपटी शोभिति पग नूपर रमझोर ।
कमल नयन अवलोकन प्यारी हिय आनन्द विभोर ॥
यह आनन्द अमर नित नूतन चव आली दिन घोर ।
'वैद्य हरि' जसुमति सुत शोभा निरख शाम और भोर ॥

मैं नाचत देखे श्याम भजन

मैं नाचत देखे श्याम । टेर
हस हस मुरली स्वर लहरी मे पडते हाथ ललाम ॥
उघन उघन तिरछे चरणन बजी पैंजनी ध्वनि अविराम ।
नाच करन तिरछी चितवन लख मोहित है जगधाम ॥
सप्ततालं स्वर मन्दगति छवि कहन जीभ सके काम ।
मोर कीरिट पीत पट माला तुलसी मोहती माम ॥
दन्त पक्ति दामिनी शीश बनी कारी रेख वृत वाम ।
धेनु चराय मुरली बजावें ठाढे कदम्ब की छाम ॥
कुंचित चरण कटि मुख ग्रीवावर बसी बजति अभिराम ।
सजनी कांति-मैं नाचनी मानस धारो प्रात और शाम ॥
मुख राकश नयन मट कारे भृकुटी प्रभासजें काम ।
'वैद्य हरि' सुनी बरनि रहनी ज्यो हरित भूमि पर धाम

मै तो सुन तोतरे कृष्ण की बाल क्रीडा

मै तो सुन के तोतर बोल । टेर
गद्गद हृदय होगया सुमुखी , लख घर श्याम कपोर ॥
घुटरनि धाय मयहि रिझावें बाल झांकी अनमोल ।
शीश लटनि कटि राटक घूंघर जातरूप मणि गोल ॥
अधर चरण कर अरुण कान्ति वत् झरबेरी के बोल ।
मन बन मधुप कमल मुख बैठा-पी मधु पगनि मोल ॥
पीत सुवास हेम रग लालित पहिने मजुल चोल ।
मगल साज खुशी नित नन्द के बजत रहत घर ढोल ॥
कृष्ण कान्ति मय सब जग देखा नयन तराजू तौल ।
मम हिय बिना श्याम शोभा के निशिदिन हू बिन मोल ॥
'वैद्य हरि' घनश्याम रूपरस नित पिब प्रातहि घोल ॥

प्रिय भारत पुरुषोत्तम (कृष्ण प्रार्थना

प्रियभारत पुरुषोत्तम हमको गीता ज्ञान सुना जारे ॥
गोभक्षक गोरागजनो को निष्कासित कर भारत ने ॥
आंचल फैला गोरक्षा की मागत भीख दिला जारे ॥
दूध आज्य सा भारत मानव जग के गुरु कहाते थे ॥
गुरुता से लघुता में पहुचे फिर उन्हें गुरु बना जारे ।
प्रण किया जिन्होने पहले था होगी गो रक्षा भारत मे ॥
वे गो वध कुमति करवाते सुमति उन हिये बसा जारे ।
धर्मों की मर्यादा से पुष्पित यह उर्वी प्रकृति हैं ॥
वे धन ज्ञान से शून्य जे है धार्मिक भक्ति सरसा जारे ॥
यह जग तेरा तू स्वामी भी सब दास कहाने वाले है ॥
दे दुष्टों को दण्ड 'वैद्य हरि' सुन विनती हर्षा जारे ॥

कमल नयन (श्याम शोभा)

कमल नयन मुख श्याम सखीरी । टेर
मात समुख वरणन छबि कोही हिय आनन्द में गई ठगीरी ॥
जसुमति निग सुस्तन पीन का भागे काह छबि कोटि द्युतिरी ॥
पीवत कुचतटी उफन परा पय छाडि गई माता जसुमति री ॥
रूठ मथानि को फोड लकुटि से दधि की बहती देखी नदीरी ।
धाय जसुमति गहि बाह सुत तड बिच कटि मट बाध रखी री ॥

जब घनश्याम उखर परे दोतरु यमलार्जुन से निकर परे री।
जसुमति शीघ्र बुलाय विप्र कू यन्त्र मन्त्र से पीर हरे री ॥
राग कटे सब नाम जिहोंने भव दुःख सरिता दूर बहेरी।
वैद्य हरि के हृदय पटन म छवि नन्दलाल की आन बसोरी ॥

बांके विहारी ध्यान कृष्ण

बांके विहारी को मन म बसाले। टेर
मोर मुकुट छवि मन को सुभावे हृदय मे कुडल ज्योति जगाले ॥
चारु चिबुक बनी रेख कजलकी मगमद गन्ध को नासा रमाले ॥
मजु कपोलनि मदु गण्डस्थल-देखत कान्ति को मनहि रिझाले।
मुक्तागभ कटि हेम किंकिणी-पजनि ठुमुक सदा हर्षाले ॥
नील कमल मुख अरुण नयन है-देख प्रकाश का दीप सजाले।
कम्बुग्रीव मणि दिव्य सुशोभा-हसत माधुरी मन मे बसाले ॥
भगुला झलकत नील गगन ज्यो-विद्युज्ज्योति मनुहिय उलझाले।
चन्द्र वदन मनसिज छवि लाजत-कभी हसत कभी रुठे मनाले ॥
गोकुल धन सतन के सवस-यशुमति नन्द परम सुख पाले।
वैद्य हरि के मानसरोवर-खिली फुलवारी प्रभुहि बिठाले ॥

पालने पोढ रहे श्याम शयनलीला

पालने पोढ रहे घनश्याम। टेर
इष्ट देव पूजन हित रचती जसुमति व्यजन काम।
रख नैवेद्य इष्ट यागेधरी करी प्रारथना ललाम।,
खाते देख श्याम भोजन को गई पालने अभिराम।
तह देखे सोवत सुत हा अचरज की भरवाम ॥
फिर देख्या नैवेद्य अशन कृत पावथली मे जाम।
कांपत तन भ्रम मे भरमागी सुधि न रही ते याम ॥
माता की असगति देखकर प्रेम की पूरण काम।
एक रूप होतहां विराजे "हरि" जसुमति हिय थाम ॥

नटवर नागर सवैया श्याम छवि

नटवर नागर नद उजागर शोभा सागर काल सगी।
यशुमति गाद देखि मन मोद हिय हर्षोद है हाल सगी ॥
और छवि तजि कृष्ण छवि भजि रति लजि सुन्दर गाय गगी
"हरि' देखी मन हरय विशेषी मज्जन रेनि सुभाय गगी ॥

शोभा जटनि केशन की मटनि लट वस मोहि रिझावत है ।।
मोर मुकुट ढिंग बनी मेढि समुचि नागिनसी रिसावत है ।।
रम्य तिलक हसि दतिया चमके कमन नयन मटकावत है ।
करनि खेलना अनुपम पावन 'हरि' घनश्याम हू भावत है ।।
तोतरी बोली सुन जसुमति मन भ्रमर पुष्प ज्यों हर्षित है ।
श्याम सलोने पकज मुख पर हाँसि जाति मार्वपित है ।।
नित बलिहारी नयन सुधारि मुख कपाल श्रम गर्वित है ।
ऐसे मृदु मोहन की 'हरि' छवि निरख हृदय मन दर्शित है ।।

सुन्दरता वश दोहा

सुन्दरता वश नयन हैं तो किन देखहु लेहि ।
शोभा की घनश्याम को निगमागम कह जेहि ।।
नीलाम्बु छवि मोहिनी जग की मोहन हार ।
कही सुनी देखी नहीं दखो नयन पसार ।।
वेणु वादन लग रहे नाचन की मटकान ।
नख शिख शोभा श्याम की आज बनी अघरान ।।

श्याम की सजी कृष्ण झांकी

श्याम की सजी सुघड झांकी टेर
दिव्यमणि रतनारे मुक्ता लटकन लट जाकी ।
जातरूपमणि भरे मुकुट धरे चितवन है बांकी ।।
मृदु मुस्कान भरी मोहिनी पै तरसी आय मा की ।
मजुतिलक भ्रू कपोल नासा बहती नदी सुधा की ।।
बशीधरी अधरान-पीत कटि दुपटि कंध वा की ।
पद पकज धुनि नूपुर सुन म हरषी का ह लता की ।।
मन्द हास्य जिमि कुसुम कमल के खिले है फिर मुरझा की ।
वैद्य हरि ने लुक छिप देखी युवती मध्य शरमा की ।।

सखि नन नीद नहीं आवे श्याम विनोद

सखि नन नीद नहीं आवे-झुट मुट खड़ा श्याम हसावे ।
मधु सूदन की छवि निराली-मोहित सब नर नारी आली ।
हिरदे म गुद गुदी छावे-झुरमुट खडा श्याम हसावे ।।
मेरे मन मदिर उजियारे-भक्तन दु ख टारन हारे ।
आखें प्रेम नीर भर जावे -झुर मुट खड़ा श्याम हसावे ।।
उपजा मन म हर्ष है भारी—दख के कज मजु वनवारी ।

वो तिरछे नयन मटकावे झुरमुट खड़ा श्याम हसावे ॥
रंजित मदु रक्त चरण में— 'हरि' आन पड़ा है शरण में ।
मोहे मृदु मुस्कान रिझावे—झुरमुट खड़ा श्याम हसावे ॥

नदलाल कृष्ण छवि गजल ताल दादरा

नदलाल आपनी छवि मन बसा गयो ।
शीश मोर पख की धर मुकुट कुडली ।
नयन बाण भ्रू धनु हिये चला गयो ॥
सुदर तिलक था मस्तके वाणी अधर मधुर ।
बंशी की लय को गाय के मन मद् फसा गयो ॥
लटकें लटी-रत्नावली गल-बीच सोहति ।
ठुमक चाल नाच कूद हम हसा गयो ॥
सोहनी बनी विद्युत कटि पट चमक रहे ।
'हरि' यश हृत मोद स ज्योति जगा गयो ॥

दोहा

गाय जीभ घनश्याम को जे हैं तारन हार ।
यदि चाहे कल्याण तू तो रट कृष्ण मुरार ॥
बिगड़ी माग्ये जन्म को प्रभु सुधारन हार ।
मन मधुकर बन पद कमल पी रस सुधा सुसार ॥
जो भव रत्ना कर तिरन चाहत चह ! सुजीव ।
तो करुणा निधि पद गहु अमृत रस को पीव ॥

मैंने लगी श्याम की जोरा श्याम शोभा युगल जोड़ी

मन कौमुदी श्याम शोभा गजल ताल

मन कौमुदी म चढा है नद का दुलारा ।
छवि शवरी के स्वामी जसुदा हिय का प्यारा ॥

सब लोक के धनी हैं हिर हार की मनो है ।
गुणिया म निरगुनी हैं घनश्याम का-सा-कारा ॥

नटशिर मुकुट की शोभा मन वन चकोर लोभा ।
तम पाप की सुशोभा हरी म करी ज्यो तारा ॥

मगमद सुगन्धि माये भक्तो कर मनाये ।
विवुधि मढे हैं साये अरजुन के दुख टारा ॥

दतिया की कान्ति दम के कटि घु घरु सुपट के ।
है रूप शाति शम के 'हरि' का सदा सहारा ॥

मैय्या मे मोटा कव होउ श्याम का बालपन क्रीडा

मैय्या मे मोटा कब होउ । टर
दूध दही माखन खा बेठेदिन रजनी नित सोउ ॥

सखा सग के हलधर भ्राता पूछत किस का कोउ ।
हमतो काम करावन हारे तुम सब काम को खोउ ॥

सोच रैन दिन काम बिनहिं मन मैं क्या कथा जोउ ।
धूलि धूसरित अ ग हाय तव स्नान बेला नित धाउ ॥

साच कहू म दुवलता हित छाडु क्या अपना रोउ ।
दूध दही माखन रोटी खा नित हस कहू नही तोउ ॥

देख भगीरी दुबलता तव पीन छवि हुई मोह ।
श्याम मनहिं सतोष वँध हरि जसुदा वाणी होउ ॥

सदा नद दात्री लक्ष्मी प्रार्थना छद शिख रणी

सदा न द दात्री समुद कमले ! हो अबतो मा ।
बडे पडित योगी तव सुपद मोहिन रति सदा ॥
कलीयुग मे पोषण भरण करती विष्णु प्रिया ।
तवाके लेकर के वसतु मम घर म नित मुदा ॥

कु ज विहारी । तजप निहारी कृष्ण शोभा

कु ज विहारी की चितवन प्यारी लागी मोहे देखहु सखिया।
मोर पख मन भावन श्याम की जी चाहे करन वतिया ॥

नन्दजी को छावो आनन्ददाता सजनी उस बिन न ही गतिया ।
कलभाषण जसुमति को भावे श्रवत पयस वा की छतिया ॥
ठुमक ठुमक वही चले मन्दगति हसी हसत चमके दतिया ।
ठगी रही शोभा कमन नयन की निरख प्रेम सनी मो मतिया ॥
कोटि काम छवि हारी श्याम घन लख स्वप्ने बीती रतिया ।
'वैद्य हरि' के सदा पियारे लिख लिख भेजी नित पतिया ॥

शोभा आजु (नन्दलाल शोभा)

शोभा आजु मनोहर बनी है जसुमति सुत नन्दलाल की ।
ले वगु तिरछे चरणन रख ठुमक चाल गोपाल की ॥
मद हास्य घु घराली वेणी चन्द्र रेख लख भाल की ।
कोटि काम शर्मावन हारे मजु माहिनी गाल की ॥
कु डल कण दिव्यमणि नासा चमकत धेनु पाल की ।
रास रग गोपी सग खेले चाल चलें ज्यो मराल की ॥
गाय चरावे वेणु बजावे नाची रागिनी ताल की ।
छवि कदम्ब तर वहु सखीरी ! देरा झुकी उस डाल की ॥
मोहित हुए महामुद मन म गाथा शिवजी दयाल की ।
'वैद्य हरि' अ ग अ ग बलिहारी वैय्या चरणन धाल की ॥

वेणु बाज उठी (गोपाल वेणु वादन)

वेगु बाज उठी मधुवन मे जसुमति नन्द गोपाल की ।
धेनु ग्वाल सभी उठ धाये सुन मुन मधुरी रसाल सी ॥
नाचत गावत वनहि कन्हैया पकडे डाल तमाल की ।
माथ छवि बिन्दु त्रय रेखा रोचन तिलकरु लाल की ॥
एक हाथ अ गुली रख वेणु दूजी गल मे ग्वाल की ।
शोभा कर्ण मणि पद घु घरु नासा बिच मलमाल की ॥
घनश्याम वदन म पीत दुपटिया उरभुज बाहु विशाल की ।
बलिहारी श्याम मनोहर पे 'हरि वैद्य' पितु और बाल की ॥

अबके दीजे (ईश प्रार्थना)

अब के दीजे वास वहा प्रभु चित जहा भी प्रसन्न रहे ।
इसी जन्म या गीत तुम्हारे नामावली मम अमर रहे ॥
घर के चाल न लायक प्रभु विधि की निशिदिन ही धार वहे ।
'वैद्य हरि' हिरदे उपजा के प्रभु आज्ञा स पद ये वहे ॥
सोरठा मन बुद्धि भ्रम मे पडे कि कर्तव्य विमूढ हो ।
सोचत भवसागर सडे ईश सत्य या भोग है ॥

देख युगल छवि (राधा कृष्ण युगल छवि)

देख युगल छवि राधेश्याम की हिय आनन्द समाया।
कामरति शत लाजन हारे वेद नति कह गाया ॥
महा महिमा शालिनी यह शोभा देखन का चित चाया।
नख शिख शोभा रोम रोम की मन्द हास्य मुख भाया ॥
कृष्ण गौर साकार रूप को एकाकी मैं पाया।
एक हाथ हृदयालम्बन है एक मुरली स्वर लाया ॥
दोउ हाथ राधे विनयावली मन हु आनन्द की छाया।
नील पीत पट धरे गुतन म ज्यां हिमकर घर आया ॥
पद नूपुर झनकार निराली चालत धीरे माया।
कण माथ गल हार विराजे बाजू बन्द चमकाया ॥
कम्बु ग्रीव नर कटि सिंह सी लकुटि दुपटि हिय भाया।
चिबुक कपोल भाल गण्डस्थल गोरोचन है लगाया ॥
कमल नयन सग चन्द्रमुखी तन केशर अगर रमाया।
अधराधर की मधुर माधुरी देखन को जग धाया ॥
मोर पख घु घराली लटकी अलकावली उलझाया।
मथन हृदय का मानसरोवर हस मन मोती खाया ॥
जग जननी माया की मो पर आज हुई है दाया।
हृदय बुद्धि मम मात भाव से छवि का भाव बहाया ॥
जग दगुरु और जगत मातु पितु चरण प्रेम हुलसाया।
हृदय कुसुमकी माल बनाके प्रभुजी को हार पहनाया ॥
राधा कृष्ण उर मन बुद्धि का हीरा मोती भराया।
'वैद्य हरि' का चरण कमल मे नित नित प्रेम समाया ॥

जसोदा प्यारे (श्याम की माधुरी)

जसोदा प्यारे नन्दकिशोर। टेर
देख माधुरी मुनि मन भावनी हू आनन्द विभोर ॥
जनवाणी सुनन म आती है वो निज चितचोर।
लटि लटकाये मुकुट सजाये फिरत चपल गति जोर ॥
कुंकुम रोचन माथ तिलक है मैं देखे कर गौर।
ग्वाल बाल सग दधि लपटाय खींचत है मन मोर।
तोतरी माधुरी रीस भरी हसी हसत-हसत चहु ओर।
रास सचारी कुजविहारी गिरवर धारा घोर ॥
धेनु पालक पूतना घालक दलन पाप घन घोर।

जग रखवारे नन्द दुलारे यशुदा देवकी हृदय किशोर ॥
'वैद्य हरि' मन मंदिर वासा करहु दिवस निशी भौर ।

मैने श्याम नाचते पाये (कृष्ण बाल क्रीडा)

मैने श्याम नाचते पाये । टेर
मोद भरे यशुदा रानी ढिग मुखहु दधि लपटाये ।
कर मोदक अंग अंग मनोहर कोटिक काम लजाये ॥
तिलक भाल गोरोचन केशर मातु पितु मन भाये ।
कण कुहर नासाग्रे मोती गजमुक्ता गल छाये ॥
तडित् प्रभावत् दतिया चमके मोर मुकुट हुलसाये ।
मन भावन देवकी नदन को हृत् आसन बैठाये ।
नैन पेटी मे मन ताले से बन्द किये मैं पाये ।
वैद्य हरि की उरभूमि मे सीचत सुधा सदा ये ॥

चाकरी करतहु घनश्याम (सेवा कवित)

चाकरी करतहू तोरी घनश्याम मैं ।
और नाही काम मेरी एक यही डयूटी है ॥
हाजिरी लगाना मोरी महिने की पूरी पूरी ।
एक तेरी आश मोहे और आश खटी है ॥
तकवान कटे दिन एक की मेरी हू स्वामी ।
कलि कालिमा भी मेरी नित जाय छूटी है ॥
तोरी कृपागारि से सेवक का बाना बना ।
देख जीऊ मुख बंशी गले मे दुपटटी है ॥
मुरली बजाने हारे गैय्या को चराने वारे।
ब्रह्मा को हराने हारे हाथ मे लकुटी है॥
शिर पे मुकुट मोर हाथ मे है पाचजन्य ।
अर्जुन धीर बाधा मनसा जो टूटी है ॥
चीर को बधाने वारे द्रुपद सुताहू के ।
भरी सभा कौरवो में लाज जब लूटी है ॥
हार थके नर नारी आसरा न रहे दूजा ।
वैद्य हरि तेरा नाम सजीवनी बूटी है ॥

कर कमल पद मुख कमल में प्रलय दृश्य प्रवेशित ।
वट पत्र पुट आसीन बाल मुकुन्द नौमि मित करम् ॥
वंद्य हरि हृदये सुदारुण दु:ख हर आनंद करम् ।
दीजिए वरदान पालक लोक रक्षक गिरिधरम ॥

जय राधा कृष्ण श्रीराधा कृष्ण प्रार्थना

जय राधा कृष्ण दयाल हरि—कुरु अनुकम्पा कलि तन नगरी ।
अनवर कलि कलुष सहारण मे—गुण ज्ञान खनि भवतारणम ॥
थापित सुकृत भू-भार हरा—रक्षित साधु मुनिजन सगरा ।
हो अभ्युत्थान धर्म भानु—वसुधा सुर इततम क'जानु ॥
अवलम्ब सदा प्राणी नागर—उपदेश कर्म का भर गागर ।
प्रिय भक्त पार्थ पय सागर हो—गीता के मंजु उजागर हो ।
अघतम रजनी क नाशक हो—रवि सन्मति पदम विकाशक हो ।
सुख सरिता की अमल धारा—भव भेषज हो अपरम्पारा ॥
लख चौरासी टारत दु:ख से—मोदित हो ज्ञानाम्बुज सुख से ।
आत्मा मन प्राण दिवाकर मे—व्यापक हो सदा चराचर मे ॥
वेदो मे सामऋचा सुन्दर—ज्योतिमय सबके तन मंदिर ।
रमणीय ऋतुषु कुसुमाकर—सर षु हो रूप महासागर ॥
नदियों में निर्मल गंगा हो—देवों में पूजित रंगा हो ।
छलछिद्र कपट नाशक दानव— आशा हो अमर सदा मानव ॥
द्रौपदी के चीर सभा वधन—दु:शासन कौरव मद मदन ।
शिशुपाल जरासंध हिय कदन—दु:ख काम लोभ वैरी मदन ॥
हरि वंद्य रति चरणे दाता—मुद सम्पति वधक सुरगाता ।
मुनिमानस रंजन मदुगाता—सोलाना पालक पितु माता ॥

कमनीय कोमल (श्री राधा कृष्ण छवि वर्णन)

कमनीय कोमल चारु तर छवि कृष्ण राधा की बनी ।
मुकुट कुंडल विश्व मोहनी पश्यतु शोभा घनी ।
सिर मृदु लटि रंग अलीसी वेणी शोभा पा रही ।
माथ मृगमद लेप रेखा बिन्दु सुमन वर्षा रही ॥
एक कर बंशी लगी मुख एक राधा के गले ।
भृकुटी नयन मुख माधुरी नाचत कदम्ब तरु तले ॥

तन पीत नीलछटा वसन की गल सुमाल बिराजती।
मजुपद नूपर ध्वनि की मधुरिमा हिय बाजती॥
एक कर राधा कुसुम हैं एक प्रभु हिय सोहता।
युगल मजुल जोटी राधा श्याम लख मन मोहता॥
नील अम्बुज कान्ति मुखकर नयन को हुलसावती।
निशिनाथमुखी राधा सुकोमल पद रति मन भावती॥
किंकिणी-केयूर कर कंकण करागुलि राजती।
दिव्यमणि नासा चिबुक मे-दीनता दु ख भाजती॥
मजु कचुकी उर दुकूल सुपट्टी पल्ली लटकती।
भजतु हिय प्रिय शुद्ध मनसा पाप तम रुज झटकती॥
युगल छवि मदाकिनी मे बहती अमृत धार है।
'वैद्य हरि' पीवे उदर भर तत्व सब का सार है॥
रत्न कण रजित सुस्नायु रोम हिय मन भार ही।
प्रेम प्रभु की सगुण गाथा मोद नित वर्षा रही॥

मजुल कोमल (श्री कृष्ण प्रेम कलभाषण)

मजुल कोमल गात सखि नयनो मे कजल रेख लगाये।
भाजत आगण मन मोहन मुख सतालिका रुचि की लपटाये॥

पाण्डु रग धूलितन मगरे मोर पख सिर मुकुट सजाये।
मागत माखन मधुर डली नित नूतन छबि मेरे मन भाये॥

ले गोद सखि मुख चुम्बन कर छाती मे मैने लपटाये।
विकसीकली हृदय कमल हीरा ! तन रोम रोम मम हुलसाये॥

कभी हसत कभी रुदन भाव से खीझ भृकुटी की टेढ चढाये।
श्याम करत कल्लोल रम्य नित 'वैद्य हरि' मन मन्दिर आये॥

शरणाई पद-श्यामलता-हिय कज कलेवर- ओठ लगाये।
मृग मद भाल दिव्यमणि कु डल गल गजमुक्ता की छवि छाये॥

मृदुकटि चरण घु घरू बाधे कनक रजत धातु के जाये।
कर पहुची तन झगुलो पहिरे हस कपोल मुखनि मुलकाये॥

भव दु ख मोचन श्याम सखि लख देव करत स्तुति मनभाये।
मिल नटनि बध प्रेम पाश म उपवन ध्यान अमर फल खाये॥

प्रेमानन्द विभोर भोर हो वैद्य हरि ने [illegible]पद गाये।
सखि लाभ लूटा जिन लोचन सफल जन्म

भजु बालमुकुन्द (श्री कृष्णप्रार्थना)

भजु बाल मुकुन्द यशुमति नन्द आनन्द कन्द ब्रह्म परम
शिर जटा विशाल मृगमद भाल क्रीडा ग्वाल सगवरम ॥
मस्तक मुकुटि सुंदर भमुटी ग्राम वधूटी चित्तहरम् ।
भजु बालमुकु ॥
कुन्तल कानन शोभित आनन शशिवर ध्यान नित्य वरम ।
शतदल मुख लोचन मान विमोचन मस्तक रोचन धेनु चरम ॥
रम्य गण्ड स्थली विलसी हृदयस्थली दर्शत मा अली दु,ख हरम ।
भजु बालमुकुन्द ॥
सुंदर श्याम लज्जित काम शोभाधाम क्लेशहरम ।
गल वनमाला नयन विशाला कालहृकाला दरपरम् ॥
मुख वंशीधर सुंदर पदकर तारत भव डर रटहु नरम् ।
भजु बालमुकुन्द ॥
श्यामलगाता बलि पितु माता जग के त्राता सदा डरम् ।
नयन प्रेम भरि देख 'वद्य हरि' दनुज दु ख टरी विश्वभरम् ॥
राधा कान्त कलि मध्यशान्त हरति नितान्त-लोभ भरम् ।
भगु बालमुकुन्द ॥
गिरवर धारी कुंजविहारी कृष्णमुरारी मोद करम ।
दीनदयाल परम कृपाल स्मर गोपाल मोक्षपरम् ॥
नित्यानंद परमानंद सच्चिदानन्द मधुर स्वरम ।
भजु बालमुकु ॥

गोविन्द मेरे मन (कृष्ण प्रेम)

गोविन्द मेरे मन भाय सखि हिय कमल मूल जल सींच गये ।
तेज पुंज प्रतिभा मनहारी भर गगरी वे उलीच गये ॥
छवि कहा कहूँ श्यामल मुख श्री गोपाल यशोदा नन्दन की ।
मोहन मन उर घर रोम रोम रस प्रेम सुधा से खीच गये ।।
दुपटि कंध पीत पट कटि में पद नूपुर की ध्वनि बाज ।
गल रत्नों की माल भाल म मृगमद मलय सुदीप्त गये ॥
नील पद्म कान्ति मुख-कर पद अरुणाई शोभा पाई ।
मुख सरिता की धार वहा मकरन्द मोद मधु नीप गये ॥
भृकुटि की तिरछी दृष्टि से हिय मंदिर स्थान लिया उनने ।
मृदुनाशा मंजु कपोल हरि लज्जित कर मन्मथ जीत गये ॥

बंशीधर माधुरी स्वर लहरी बाजत नाचत अरु गावत है ।
हरि वंद्य कलेवर चेतन मे ज्योति से अपनी जीत गये ॥
रम्य शिखा वद्धिन वेणी तन शोभित ग्रीवा शंख सदृश ।
दतिया चमकाय मृदु अधरन अखियां मटकाय घसीट गये ।
डालतले तरु ठाढे कदम्बरी धेनु चराव न दलाला ।
मुरली के वादन म गय्या कर सचय श्याम मद्दीप गये ॥
बोल चाल दृष्टि हसना सब गति निराली मन मोह ।
छिप कर कलेवर अत्र मुरली नैन छवि से पीच गये ॥

ब्रह्मविष्णुमहेश्वर प्रणायाम पूर्वक त्रिदेव प्रार्थना

ब्रह्म विष्णु महेश्वर जगकारण भरण हरम् (मान्यतीत्रय)
ब्रह्माण्ड कोटि रक्षक अखिलेश नामक भजु परम् ।
वन्दित अखिलोत्पति रचनापु ध्यान निरन्तरम् ॥
विश्व पथ प्रदर्शक निज शास्त्र दर्शन सुन्दरम ।
विविध भांति स्वयभ हो सर्पापि धाता विधि भवम ॥
सृष्टि रचने ऋषि सुदार कृत पितामह निज जवम् ।
मुख चतुर कमलासनस्थ वेद हस्ते धारणम् ॥
रक्त वर्ण हृदय धरु ससार सागर तारणम् ॥
विश्व पति लोकेश विष्णु पालन जग पोषणम् ।
अगम शक्ति तेजसा निजकारव अघशोषणम् ॥
शख चक्र गदा सुदर्शन धारिण पीताम्बरम् ।
भजतु शोभन श्याम कोमल मनहृदि कमला वरम् ॥
कुडल सकिरीट धारी पदमनाभ सुरेश्वरम् ॥
पदम लोचन पद्म मुखकर पद्मपद परमेश्वरम् ।
कोटि भानु सम प्रकाश विश्व मोहन पदरजम् ॥
शिरसि धारय ध्येय हरि तल्लीन नाभि रट अजम ।
श्वेतवर्ण शिव त्रिनयन कुरु ललाट नितस्थिरम् ॥
संहारक प्रलयांतक धरु शुद्ध मनसा अरु गिरम ॥
धाता विष्णु शिव सनातन स्तुति कुरु निजमंदिरम् ।
धार प्राणायाम मिस नाभि हृदयमस्तक चिरम् ॥
स्तान मान प्रकाशक स्मर भक्ति मुक्ति फलिप्रदम् ।
बुद्धिनेत्र हृदिमन एकाग्र कृत्वा त्यज छदम ॥

इन्द्रशची सुरलोक वासी (अमरेश्वर प्रार्थना

इन्द्रशची सुरलोक वासी स्वागत परमादरम् ।
धर्म गुण आदर्श नित नौमि सुरगण सादरम् ॥
नाश हर्ता दनुज बाधा ईश्वर पथ गामिनम ।
कल्याण कारण निज जगत के ध्यानगत श्री स्वामिनम् ॥
विश्वपति गरतार कारण भार भु युग प्रार्थिनम् ।
टारणे सानन्दचित्ता पूरण शरणार्थिनम ॥
अमल चरित ज्ञान युक्त ऋषि जनेषु सहायकम् ।
त्याग तप मूर्ति समुज्ज्वल शोभित नित कायकम ॥
नादन मरण्य सुचारिण शुभ काय नित चिन्तन परम ।
वैद्य हरि नौमिपद हे धन्य मान्य सुरवरम ॥
गन्धर्व किन्नर अप्सर मागध सुचारण वन्दितम् ।
मोद मुद आनद दान सर्व प्राणिषु चेष्टितम् ॥
सास्कृत शुभयज्ञभागादान सुन्दर कारणम् ॥
दुःख अघतम क्लेशभवभय व्याधि मूलज टारणम ॥
यन पुष्टित मानस शुभ अंग मंजु कलेवरम् ।
वर्षा सुभिक्ष सुकारण ईश्वर विभूतिषु सुन्दरम् ॥
कलिकल्मष संहारणे सब दोष कर्म विपाकनम् ॥
मंजुल हिय सुमति प्रदाता प्रभु गुणावली राचनम् ॥
क्रोध काम अहंकृति छल दरिद्र मोह विनाशकम् ।
जगत पोत सुदारुण काटत भवज भय पाशकम ॥

ज्यतिधन्वन्तरी (प्रार्थना)

जयतिधन्वन्तरि प्रभु सुस्वास्थ्य दायक सुन्दरम ।
दोष धातु मल समाग्नि कारक त्रय दुःख हरम ॥
मोद इन्द्रिय आत्ममन दाता सुखाशा अतिवरम ।
स्वास्थ्यलक्षण ऋषि प्रणीत आयु समासत सुखकरम ॥
विषय क्लेश हर सुदृष्ट्या भाग दश कलेवरम ।
हित विहार आहार पूरित शान्तिशम सुमनोहरम ॥
सत्य सुमति प्रकाशक धी शुद्ध मन धृति स्मृतिकरम ।
कलिज पाप विनाशक सुविकाशक धर्म परम ॥
धर्म अर्थ सुकाम मोक्ष प्रदायक सब मुनिवरम ॥

दोषजाग तुत हर श्री रोग राज महाज्वरम् ॥
सुधामन्थन समय प्रकटे अमृत कुम्भमृदुकरम् ॥
अमरता सुखदायक-त्यज त्वरित हाला हल डरम् ॥
गदहर मंगल प्रद औषधलतापु रसभरम् ।
अमृतपाणि सुकोमलांग हर तु रोग निशाचरम ॥
वैद्य हरि धन्वन्तरि स्तुति कथयति मधुरस्वरम् ॥
उभय लोक सुखावह आरोग्य दाता नितभरम् ॥

श्रीधन्वन्तरी प्रार्थना

श्रीधन्वन्तरि आदि देवने अखिल विश्व कल्याण किया ।
चक्रसुदर्शनसुधाकुम्भने रोग हरण अवतार लिया ॥
जो पाले उपदेश इन्हीं के वह प्राणीशतवर्ष जिया ।
जितेन्द्रियो को नहीं रोग हो चरक लिखास्मर शुद्ध धिया ।
इन्द्र देव पीडा जनमन की धन्वन्तरि से बोले राज ।
नरपति काशी के सुत होकर आयुर्वेद का करना काज ॥
दिवोदास आयुर्विद्या पढ हुए धरा में सबके ताज ।
अमर बना वैद्यक विद्या को अष्टांगों म रखदी आज ॥
श्रीधन्वन्तरि के आगे हम ले सुमनाजलि खडे हुए ॥
उन्नति पथ में द्रुततर गति में-आयुर्वेद मे अडे हुए ॥
दोषों को दो दूर भगा-और बुरी भावना पड़े हुए ।
छोड विचारा करें-सत्पथ मे दृढप्रतिज्ञ हो जडे हुए ॥

भिषग्वरों से

लोभ पिपासा वशीभूत हो स्वगुण छिपाना भारी भूल ॥
निधि ले कोई आया गया नहीं मिथ्या मन को कर निर्मूल ।
सन्मुख भिषग्वरों के गुण को रख ज्यों कमल नदी के कूल ।
साम जगत में प्राणि मात्र का हो तब बरसें तुम पर फूल ॥
सहन स नहीं काय चलेगा कर दिखलाना सब कुछ आज ।
ऋषि मुनि और आयुर्वेद थो पहले था सबका सिरताज ॥
समय विवशता वश पिछडा यह रखनी हाय तुम्हार लाज ।
धन्वन्तरि न सुधा मदद ले जीव दया का करदो काज ॥

सामकल्प की अमर जड़ी जो लिखी चरक में बचत आज ।
अधमवश नहीं दिखलाती है चकित हुआ सब वैद्य समाज ॥
कर्मवीर बन धर्मवीर खोज भिषग्वर । सब कुछ त्याज ।
अमर अक्षय नाम तुम्हारा हो जग में वैद्या का राज ॥
श्री धन्वन्तरि हम सुमति दो कुमति अविद्या कर दो दूर ।
भारत के सब भिषक सदा हों कर्मवीर श्रम से भरपूर ॥
जागृत कर आयुर्विद्या को स्वस्थ बना वसुधा की धूर ।
"हरि" गिरा दो सब स्थानन में जड़ी सजीवन के कण चूर ॥
राम कृष्ण शिव नाम की महिमा हिय में धार ।
रसना नित गाती रहो यही जन्म का सार ॥

एकादशी विश्राम

श्री धन्वन्तरि भगवान की जय

श्री धन्वन्तरि जय हो । आरती धन्वन्तरि भगवानकी

ॐ श्री धन्वन्तरि जय हो । टेर
भू भारत जन सबका सदा स्वास्थ्य चय हो ॥
सुधा कलश ले मृदु करनलि मे रत्नाकर निकसे ।
सौम्य रूप लख वैद्य के हृदय कमल विकसे । ॐ धन्व
श्री वत्साङ्क मणि उर शोभित आयुर्वेद प्रभा- ।
यज्ञ भाग ले प्रगटे अमरेश्वर की सभा ॥ ॐ धन्व
गद हर आयुर्वेद प्रवर्तक शल्य शास्त्र ध्याता ।
कर्म योग सत कीरति जग मे विख्याता ॥ „ „
पर उपकार सुमन बुद्धिमन मम नित नव फूले ।
अमृत रस गुरु सींचन सर्वोपधि मूल ॥ „
तव प्रसाद आरोग्य सुरसरि बहे सदा स्वामी ॥
हर दरिद्रतम व्याधि दुख अन्तर्यामी । „
शल्य शास्त्र की लुप्त पताका आकर लहराओ ॥
अमृत पाणे 'सुधाकर' की मानस आओ । „
स्वर्ण राशि त्यज मृत दया का हो मन मे सचार ॥
कर्माभ्यास शस्त्र का आओ करो प्रचार । „
क्षमा रूप अघतम के नाशक भिषक् हृदय के दिनेश ॥

अष्टांगायु सुकौमदी खिने स्वास्थ्य रावेन्ग ।
आत्मेन्द्रिय मन स्वस्थ चराचर जग मण्डल सारा ॥
सत्य सुमति सद्भावना चले सुधा धारा ।
धूप दीप कपूर अगर अरु पुष्पाञ्जली माला ॥
है नैवेद्य समर्पण सेवा सब काला ।
दो वरदान प्राणपति सब को व्यापे अखिलानन्द ॥
"वैद्य हरि" तव स्तुति (आरती) गाई मन स्वच्छन्द ।

जय मारुति हनुमानजी की प्रार्थना

जय मारुति बुद्धिमतांवर कार्यसाधक राम के ।
तप तेज मूर्ति ब्रह्मचर्य की हैं जितेन्द्रिय काम के ॥
राम पायक बाल लीला मेलिमुख मह दिन मणि ।
भरुण पीताभा समझ फलवद मुख भ्रम भाम के ॥
मारुत रुकी सब प्राण वायु जग अंधेरा छा गया ।
इन्द्र वज्राघात टेढी हनुभई बलधाम के ॥
राम वानर राज मैत्री कारक धीरज प्रदम् ।
बालि बध हतु हो-सीतान्वेषण-पुञ्ज भाम के ॥
मार अक्षय मुद्रिका दे मातु सीता सुख करम् ।
जार लंका मार दानव मृत्यु हर कपि ग्राम के ॥
राम लक्ष्मण भक्षिका देवि पठा पाताल में ।
मार अहिरावण हृय कर अमर शोभा धाम के ॥
शक्ति लक्ष्मण के लगी तब लायकर सजीवनी ।
बाधा लक्ष्मण की हरि रघुराज पूरण काम के ॥
सुग्रीव के सेनापति बन हप रघुवर विजय के ।
'वैद्यहरि' छाया करि शिर ओट अधतम धाम के ॥
अंजनी प्रिय सुत कृपा से मिलता ओजरु आत्म बल ।
बल मनीषा सुमति सम्पत्ति दाता यश शुभ नाम के ॥
उपकार मानो राम ने धनवाद कपि को देदिया ।
सुर नर मुनि नहीं कोई ऐसा प्रिय कपि सब याम के ॥

हनुमान पियारे —भजन लक्ष्मण शक्ति पर

हनुमान पियारे लिछमण के लाग्यो शक्ति बाण । टेर
राम दुःग हनुमत से बोले ल्यावो वैद्य सुषेन ॥

व्याकुल जी मेरा होता है भाई हृदय की देन। हनुमान
गढ लंका से घर समेत कपि लाय वैद्य सुजान ॥
प्राणों के स्वामी हे वैद्यवर ! कहे राम भगवान। हनुमा
वैधराज बोले पर्वत से बूटी संजीवन ल्यावो ॥
सूर्योदय से पहले घोटो श्री लिछमण को पिलावो। हनु
चन्द्रकान्ति सम बूटी चमकत यही सरल पहिचान ॥
कपि देखि चमकति बहु बूटी लाये द्रोण महान। हनु
गर्वो कुछ हनुमन्तमन में गिरि लाने से आया ॥
नभ से देख निशाचर भ्रम से भरत ने बाण चलाया। हनु
गिरि पर शर लगा पैर में गिरत कहत कपि राम ॥
भाग भरत आय हनुमत पह कथा सुनी दुःख धाम। हनु
बोले शर पर बैठ जाय प्रिय पर्वत सह हनुमान।
अभी पहुंचोगे पल भर में ढिंग रामचन्द्र भगवान ॥ हनु
कपिवर बोले राम कृपा-तव-बिना बाण में आज।
अरुणोदय से पहले पहुंचू राम लखन के काज ॥ हनु
घोट संजीवनी पाई लखन को उठ बैठे तत्काल।
मोदराम आनन्द सबन को धन्य 2 हनुमत लाल ॥ हनु
जो हरि गाथा गावे लखन की रामचन्द्र परताप।
मोदा "नन्द" रोग्यता पावे छूटे मन सन्ताप ॥ हनुमान

कवित्त-शांति कहा है खोज करन लगारी मन सर्वहि सुपथमध्य चक्कर लगाय के ऊंची नीची तह में सदा ही पैठकर के खोजी ना मिलीरी जब हि हरषाय के ॥
राम के दुलारे के स्वामी की शरण में हार कर बैठ गया मन ललचाय के प्रिये मैंने पाया वहा शांति सुराज शुभ 'हरि' यह गाती जिह्वा शक्ति सुनायके ॥

हनुमान वलि (मारुति प्रार्थना)

हनुमान बली अन्जना के नन्दन सुन लीजो विनती मेरी।
राम से सेवक केशरी नन्दन कृपा करहु नित नित केरी ॥
लक्ष्मण राम घूमत वन में खोजत थे सीता प्यारी।
तुम भायक मैत्री करा सुग्रीव से सुखी बना मुद तन हरी ॥
करधि लांघ गये लंका में सीता की सुधि लाने को।
मुद्रिका डार सिया धीरज दे लंक जार की नहीं देरी ॥

वानर दल क प्राण बचाय सुधिला सीता राणी की ।
चूड़ामणि मा दी सहनाणी राम के सोच मिटे ढेरी ॥
महावीरता दिखलाइ जब राक्षस दल को मार गिरा ।
काम किया मनापति का श्री राम कृपा थी नित तेरी ॥
लक्ष्मण को जब शक्ति लगी तब ला मजीवनी रात्रि मे ।
लखन उठे मन मोद राम-सिय सो कहति त्रिजटा चरी ॥
सकट टारे थे सब दल के सकट मोचन हार तुम्ही ।
वैद्य हरि सकट टारो पूज्य चरण कर नही दरी ॥

जग जननी (श्री महाकाली लक्ष्मी सरस्वती वन्दना)

जय जननी जय जगदम्बे श्री तुमको प्रणाम ।
विश्व भरणी जग तारण तरणी तुमको प्रणाम ॥
जग सुख कारणी सकट टारिणी तुमका प्रणाम ।
कलिमल हारिणी पाप विदारिणी तुमको प्रणाम ॥
बुद्धि विधाता सब दुख त्राता तुमको प्रणाम ।
धन प्रदाता तू जगमाता तुम को प्रणाम ॥
तू जगज्योति अखिल विभूति तुमको प्रणाम ।
मगल मूला जग अनुकूला तुम को प्रणाम ॥
कालि देह धरि दानव क्षय करि तुमको प्रणाम ।
आधित प हरत सुरेश तुमको प्रणाम ॥
रूप कराल लस तप भाल तुमको प्रणाम ।
पूज्य मुरेश्वरि अखिल विघ्न हरि तुमको प्रणाम ॥
लक्ष्मी रूपा मोद स्वरूपा तुम को प्रणाम ।
रम्या भरणा रजित चरणा तुम कोप्रणाम ॥
मुरहि क्रांति कर भक्त तिमिर हर तुमको प्रणाम ।
आनन शोभा लख मन लोभा तुमको प्रणाम ॥
शारद रूप धरि मन्द मति हरि तुमको प्रणाम ।
देव अभयदा नरपु सम्पदा तुमको प्रणाम ॥
दया सदा कर दे प्रसन्न वर तुमको प्रणाम ।
करत 'वैद्य हरि विनति जोर करि तुम को प्रणाम ॥

श्रीजगदम्बा महाकाली प्रार्थना

श्री जगदम्बा माता मा यह उत्सव आज बडा भारी ।
नये वर्ष के नवरात्रे म करत सब जग नर नारी ॥

ऋद्धि सिद्धि की दाता ग्रम्ब करती सबकी रखवारी।
धनदे ! हर दारिद्रय रोग को करती सब सुख महतारी ॥

विश्व विमोहिनी जगदम्बे मैं करता आज प्रणाम तुझे।
ग्रानदकारिणी भव भय हारिणी शङ्कर प्यारी सदा तुझे।
कलिमल हारिणी दुःख निवारिणी सुख कारिणी म सदा तुझे।
मोक्ष प्रदायिनी हरिमन भायिनी विश्वप्रसूता सदा तुझे ॥

मधुरदम दानव न जग मे त्रास महा फैलाया था।
कशाज मोद तपस्या से अदभुत उसन वर पाया था ॥

वर अनुरूप रूप धर देवी म परनाश पठाया था।
रक्षा की सब देवगणो की त्रलोकी यश छाया था ॥

फिर उत्पात रचा महिषासुर न देवो को दुःख भारी।
दिया रात दिन गये शरण म देवी की अनुकम्पारी ॥

हो प्रस न श्रीलक्ष्मी बोली करू दैत्य वध म भारी।
क्षण म नाश महिषासुर का कर देवो को सुखकारी ॥

अपने युग म शुभ निशुभ भी बल और मद म थे भरपूर।
दूत के द्वारा कहलाया मम रानी हो मैं सबका शूर ॥

उत्तर म श्री शारद बोली, रण म दप कर जो चूर।
मरे से बलवान लोक मे हो भर्ता मेरा वह शूर ॥

वह कर शुभ निशुभ का रण म मार गिराया जब तत्काल।
देव दनुज सब धार्मिक प्राणी उसी वक्त हो सुखी निहाल ॥

रूप प्रचण्ड देख शारद का गये मनावन सब बेहाल।
ब्रह्मा मुरारि शिव इन्द्रादि देव कर पसन गा स्तुति रसाल ॥

तब स सबके सबही मनोरथ करती देवी महारानी।
ऋद्धि सिद्धि र धन सम्पत द कहलाती है सुख दानी ॥
नवरात्रो के न्य वध म करे स्तुति मीठी वानी।
मन वाछित पाव नर नारी "वद्य हरि" अनुभव जानी ॥

एमन तू पापी बड़ा (ज्ञान दोहा)

एमन ! तू पापी बड़ा कभी न सूधा होय।
सदा एक रस मुग न ही ज्यो बहता वय शात ॥

तू मानन्दित है नही देता तू आनन्द तुझे समझन जो नही व पूरे मतिमत ॥
योगवाही हो काम का मिलके तद्नुरूप जैसी जिसकी भावना वैसा तेरा रूप।

कृष्णार्जुन संवाद में मन वशकर का ज्ञान–हो मृग लोचनि !
जब कभी तभी मिले भगवान ॥

दृढ मानव को बन सदा नेता मन महाराज-दृढ मानव ।
अदृढ करे दशेंद्रियन सि~ ताज ॥

जय महाकाली (श्रीमहाकाली प्रार्थना)

जय महाकाली मुसविन सर गण अमरेश्वरम् ।
दानवोत्थित क्लेश सब युग हरति दुख सुर मुनिवरम् ॥
जय महा विकराल तेरा रूप मारक होत है ।
देय व्याकुलता असुर हृदि नाशमति दृढता परम ॥
संहार शक्ति शिव स्वरूपा देह कज्जल कृष्ण सा ।
डाढ मुख फाड़े नयन जिह्वा मृतज भयकरम् ॥
सिर जटा बिखरी भयानक भृकुटी ओज सना रहा ।
नर मुण्डमाल गले लटकती कर कृपाण व खप्परम् ॥
काली सरस्वती लक्ष्मी हो शिर काट शुम्भनिशुम्भ का ।
रक्तबिन्दु खप्परे मधु कैटभ महिषासुरम ॥
दारादि सब धन सम्पदा ऋद्धि विभव और वित्तभी ।
भावी सुख वरदान अम्बा सुन्दर मव सुन्दरम् ॥
नाथ सनातन ब्रह्म शिव इन्द्रादि सब कर जोड कर ।
पूजित विनय सदा काली सुकोमल आदरम् ॥
जन अमर लोक स्वराज्य म जब फलती दारुण व्यथा ।
स्मपर प्रनोबय पावन करति नित क्षय आसुरम ॥
भजतु विश्व विनाशिनी "हरि वश" श्रद्धा प्रेम से ।
मंगल मगल दामिनी उद्धार करति चराचरम् ॥

जय जय दुर्गे (श्री दुर्गा जी की प्रार्थना)

जय जय दुर्गे दुर्गति नाशिनी मगन राशि माद महा ।
दुख निवारिणी संकट हारिणी सुख सचारिणी नित्य यहा ॥
जयति भवानी गौरा गिरिजा सुरगण मन्न मादप्रदा ।
दानव बाधा टारि णी अम्बा वर अभिनंदन सुखप्रदा ॥
जयतु उमा रुद्राणी काली दारुण दावानल चन कर ॥
भस्म कर मनोहर सुदरि नाग ~डे सुर नर सुभ कर ।
जय जय हैमवती कात्यायनी सुर श्रोता की मधुमय धार
मा~त क ~र सु न जन मन म रमा ब्रह्मा अपरम्पार ॥

शिवा ईश्वरी शर्वाणी हम सब तरा जय बार रहे।
जग जनाल ग्रथित बन्धन को तव अनुकम्पा ग्रार रहे॥
पावनी दुर्गा दाक्षायणी इन नामों को प्रणत्यार।
वर वनजर हम सबक मा सत्य माग मा मुख सार॥
अम्बा नन्दिनी आर्या मातु सब मगना नाम तर।
नित्य हर हिय कमल विराजत बुद्धि धृति स्मृति मन भर॥
गजमुख षटमुख मातु मृडानी शिव शकर की सदा प्रिया।
राम राम वस मानस मर जन जीभ मुख नाम शिवा॥
वैद्य हरि दुर्गा माता क नाम प्रेम मजुन गाय।
समा मुहन जय जय उच्चारो जगदम्बा क मन भाय॥
रनिया कलवर काल जनित दुख जाय सरोवर सद्भाई।
मातु प्रभाव दिनश उदय हो नूद नूद म विरमाई॥

महाकाली जय (महा काली प्राथना)

महाकाली जय असुर पराजय कृत निश्चय महिम्न धरम।
असुर विदारिणी सुर मुदकारिणी जन दुःखहारिणी मातु वरम्।
रूप भयकर मधु कैटभ उर छादत करशर प्रलय करम्।
महाकाली जय॥

कर धर खप्पर रक्त बीज उर भय महिषासुर प्राण हरम।
स्खलित कलाप जनित सताप दैत्य प्रलाप महा ज्वरम्॥
क्रोध नयन मुख हरति दैत्य सुख मुनि सुरनर दुःख सजा टरम।
महाकाली जय॥

अति विकराल भृकुटी रु भाल गल मुडमाल खडग धरम।
जघान शुभ शूल निशुभ निमल अम्भ नदी करम्॥
अमल दिवाकर उदित सुधाकर पाप शान्तिकर मोद भरम॥
महाकाली जय॥

अतुल तेज लख दत्य वश भय रक्त चूस चस नाश करम।
महाभयकर जनु प्रलयकर कोप वपधर रजनी चरम॥
दनुज कृतक्षय हर सुर नर भय वहत अमिय पय जगत तरम।
महाकाली जय॥

इ स्तव अमर देवी प्रवर मुद नित समर हरति डरम्।
हरि वद्य मन वादित हिय तन रक्ष दीन जन चराचरम॥

जय मा काली हरहु भवानी नित प्रति पाली आधि हरम् ।
महारानी जय ॥

श्री जगमुद कारिणी (लक्ष्मी स्तुति)

जग मुद कारिणी जय मा कमला–रूप माधुरी सदा निमला ।
रमापति राकेश विहारी–तुमहिं चन्द्रिका सदा पियारी ॥

मन पकज करनी सदा खिलावनी–हरि प्रिया सब जग मन भावनी ।
सिन्धु सुता पद्मासन राजति–जानरूप कटि किंकिणी बाजती ॥

मणिगण दिव्य माधुरा रूपा–कमल नयन वर पदम अनूपा ।
करनी कामधुक सुख की दाता–जग अलि मन तव चरण रमाता ॥

तोरी कृपा सुख पकज फूले–दल मुदित सब हिय दुख भूले ।
सुमुखी छवि लख तव जग मोहा–अतुला तव बिन नर नहीं सोहा ॥

तज पुंज वश तारी चमक म–हिय मन वश यामिनी वनक म ।
विनय भाव चाहत है वैद्य हरि–पद पकज दे जगह कृपा करि ॥

ॐ श्री लक्ष्मी प्राणपति (आरती सत्यनारायण जी की)

ॐ श्री लक्ष्मी प्राणपति स्वामी पद्मा प्राणपति टेर ।
सत्यनारायण स्वामी हरा पाप कुमति ॥

रत्न हीर सिंहासन शोभित सग कमला रानी ।
नारद वीणा स्तुति प्रभु महिमा जानी ॥ श्री

वृद्ध विप्र का रूप धरि निरखर द दर्शन द्विजराज ।
कंचन माया दा ही सन अन विधि के राज ॥ श्री

भील महिपति चन्द्रचूड़ न की पूजा धारी ।
विपति भय हरनी हो और कृपा टारी ॥ श्री

वैश्य प्रतिज्ञा करत धारी अन का छोड़ लिया ।
कर धनहान दण्ड द फिर स्तुति जान दिया ॥ श्री

प्रेम भक्ति श्रद्धा ... जन म ... ।
अपनी ... निभाई उनके काज सर ॥ श्री

ग्वाल ... मन ... भक्ति म प्रभु पद ... ।
दुःख दारिद्र ... मनसा पूर्ण करी ॥ श्री

... सदा ... ।
धूप दीप ... प्रभु ... ॥ श्री

... माया ... पार ।
उनकी कृपा ... सदा ... ॥ श्री

कदली फल मेवा सुप्रेम ले चरणन शीश नवाय।
घण्टा वीणा पखावज माधुरी वीनी बजाय ॥ श्री
सत्यनारायण मधुर आरती प्रेम भक्ति गाव।
सुत दारा धन सम्पति वैद्य हरि पाव ॥ श्री लक्ष्मी

जयति जयति पदमा (लक्ष्मी प्राथना)

जयति जयति जयति पद्मा विश्व में मानव मरें।
मोद पा तव आकृति स पद कमल म चित धरें ॥
इस कलि म सत मुनि गण दव मानव मनुज भी।
सब तुम्हारी कामना म लीन हो भव म लरें ॥
विश्व मोहिनी विश्व मोहन की प्रिया कहलाती हो।
महत मन मुदान धन पा द के गह सागर तरें ॥
सत्यता ससार म नित मान तेरी हो रही।
आश्रमों की रम्य सेवा हृय भर नर नित चरें ॥
सुलभ सब ससार कलियुग तवादान प्रदान म।
दृढ दया तेरी हो रहे यह सोच तव पद सब परें ॥
वैकुण्ठ अरु सुरलोक म भी छा रही तव रम्यता।
यह सोच बुद्धि कठिन तप श्रम व्रत सुकोमल स करें ॥
लक्ष्मी मय सब विश्व देखा इन नयन के रहते।
हो रति तव पद प्रभु म प्रेम युत जीवन गरें ॥
मृत्यु तक तब आश लतिका नर हिये लहरा रही।
नर फसा तव प्रेम माया बहु विवशता से मरें ॥
वैद्य हरि मन हो भ्रमर श्रीविष्णु प्रिया पद पूजता।
मानधन की प्रचलिति तव रूप सागर स भरे ॥

जगदीश्वरी विष्णु प्रिया (लक्ष्मी गीत)

जगदीश्वरी विष्णु प्रिया श्री इन्दिरा आनददा।
इह ज म नित्य सुभाग्य मे नर भजतु देवी सम्पदा ॥
सिर मुकुट कुडल मणि माथे मे माग सिन्दूर है।
माधुरी मुख नील पट तन मजु वपु है सुखदा ॥
पद्म हस्ता सौम्यता मुख तेज प्रतिभा मोहती।
गज युगल ले सू ड म मदु पद्म पूजित सवदा ॥
पदमालया श्री हरि प्रिया कमलादि सुन्दर नाम है।

लोक माता नित्य हरति मानवों की आपदा ॥
पद सरणता इन्द्र वधु भी छवि सुकोमल लाजती ।
मन अली पद कमल अमृत पिबनु सहविधि मुक्तिदा ॥
कमल नयन मुखी सुता जलधि श्री मंगल दायिनी ।
प्रेम से भज नम से रट मोद कामा नित्यदा ॥
पद सुकोमल धर हृदय में मोद हर्षित मान से ।
सब पदारथ को प्रदात्री लक्ष्मी माता है सदा ॥
पाताल सुर नर लोक अरु वैकुण्ठ वासी चाहते ।
वैद्य हरि स्मर प्रेम प्रमुदित तन्मय श्री पद मुदा ॥
तेज पुंज प्रभाव शक्ति विद्यमान जो जीव में ।
मन सुकामनता तेरी है मूर्ति की प्रत्यक्षदा ॥

लक्ष्मी जय जय
(श्री महालक्ष्मी स्तुति गान)

लक्ष्मी जय जय सदा सुमंगल हरति पराजय जग भारी ।
आनंद कन्दे नित पद वन्दे पावन छन्दे गुण भारी ॥
श्याम सुवश भव हर वप शिव सुर शेष बलिहारी । लक्ष्मी
पद आराम कय गुण ग्राम नर हिय धाम दुःख टारी ।
वैद्य हरि धर ध्यान भानु वर पदरति मनि वर मन दागी ।
नग रज शिरधर नर कलिमलहर पूजित मुनिवर पद धारी । लक्ष्मी —
मुकुट शीश धरि भीति भवज हरि तेज पुंज वरि सुखकारी ।
मृगमद रोरी माग बिन्दु धरि मस्ती नदृशि प्रभु [illegible] ॥
कनक बरण अधनम जरण नूपुर [illegible] पट धारी ॥ लक्ष्मी
मग [illegible] नयन भाभा अधन मधुर अधन महतारी ।
[illegible] धाष्ठ पद घ गुष्ठ नित नम मुकु छवि प्यारी ॥
[illegible] मुखे मी [illegible] त्रिजगा मनहारी । [illegible]
[illegible] जगदाधार [illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

जयति भवानी (प्रार्थना पार्वतीजी)

जयति भवानी सब सुख खानि अवटरानी शिव प्यारी।
जय मा गौरी मलिमन थारी विपदा मोरी अब टारी॥
रम्य सुवाल मगमद भाल विन्दु सुगात शिर धारी।
जयति भवानी॥

मुकुट सुसज्जित रति मुख लज्जित शम्भु विमज्जित मनहारी।
भृकुटी नयन शिव पद अयन भक्ति नयन सब सारी।
कर्णे कनक मणि गण भनक रदनि दमक पुज नारी॥
जयति भवानी॥

ओष्ठ अरुण नासा रमण हीरा भरण जय मा री।
गल हिय हार अनि गुरुभार किंकिणी भार कटि धारी॥
कराग छवि वर कचुकी उरधर माहिय पद चर त्रिपुरारि।
जयति भवानी॥

अगद शुभ भुज अनिल सार पुज हरनि क्लेश दज गजहारी।
शिर पीताम्बर कटि नीलाम्बर पदरव नूपुर भयहारी॥
सती शिरामणि सुभग नारी धनी परम मोद जनी भवतारी।
जयति भवानी॥

युग युग दानव भय हरी मानव धरहिं महाजब दु ख दारी।
वैद्य हरि मन नदित चरणन हिय मति नित तन पद चारी॥
जय हो माता बुद्धि विधाता सब सुखदाता गिरिधारी।
जयति भवानी॥

शिवजी दोहा

शिव जो करते विश्व का सदा सुमगल काम–
बसो हृदय गिरिजा सहित गणपति आठो याम॥

तुलसी सूर को नमत हूँ जिनकी कविता पुज–
शब्दावली व रनित पद सदा हरि हिय गुज॥

अय भक्त भगवान के उनसे पूरा नेह–
जाका सुदृढ सहाय से हो कविता युत देह॥

मधुकर गूंजत कुसुम म त्यो मन हर्षित आज–
ईश गुणन पुष्पावली म लवलीनन बाज॥

ज्योति ही सार श्री दुर्गा ज्योति वर्णन

ज्योति ही दस सार जगत म ज्योतिमय जग सारा है।

ज्योतिहीन मनुज का जग में कोई नहीं सहारा है ॥
लाख परस्पर बहुत मिलकर आज देह में शक्ति नहीं ।
दुर्बलता से युक्त सिंह का जग में कोई मूल्य नहीं ॥
उगल दिया श्री कृष्ण चन्द्र ने ज्योति गीता को गाया ।
उसी शक्ति के श्रवण पठन से मानव ने स्वभाग्य सराया ॥

जिसके अन्दर घुसन से नर ज्योतिमय बन जाता है ।
रात वही वैज्ञानिक है अभ्यास योग में पाना है ॥

इस युग जो ग्रन्थ जगत में ज्योति नाम से गाये हैं ।
यथा भागवत गीता दुर्गा रामायण मनभाये हैं ॥
इनका सार ग्रहण करने से अद्भुत ज्योति आती है ।
इसी लोक और अन्य लोक में उभयात्मक बन जाती है ॥
ज्योतिमयी जगदम्बा ने भी दुर्गा का अवतार धरा ।
काली रूप मधुकैटभ भंजिनी बन वसुधा का भार हरा ॥
लक्ष्मी रूप श्री जगदम्बा ने महिषासुर संहारा था ।
शक्ति रूप श्री शारद बनकर शुंभ निशुंभ पछारा था ॥
बड़े बड़े असुरों को विधि ने तप से बल वरदान दिया ।
अभिमानी दैत्य बल से सब जग को हैरान किया ॥
और चारा नहीं ऋषि देवों का भक्ति से प्रार्थना की ।
यथा रूप श्री महेश्वरी ने अवतरलन की निश्चय की ॥
इसका जग में लक्ष्मी माया और शक्ति भी कहते हैं ।
अपार सुर प-प्रतिमा-शक्ति-तन ॥ इसको कहते हैं ॥
उस प्रभाव का पुंज जगत में सब से यही निराला है ।
इसका स्वाभिमानी नररत्न भी अद्भुत ज्योति वाला है ॥
ईश्वर से प्रार्थना मेरी सबको ज्योतिवान करे ।
और सत्य और सद्विचार से सबका मन परिपूर्ण करे ॥
इस भाव सब जग में पाप माया मय पहचान है ।
'हृदय' अद्भुत ज्योति से सब आनन्दित हो जाते हैं ।

जय मां सीता (सीता प्रार्थना

कच मृदु वर्णी पतिव्रत श्रेणी दीप्त मुकुट मणि व्याधि हरम् ।
कुंडल कान्ति हर मम भाति दात्री शान्ति आश वरम् ॥
मन्मथ विधु शाभा सिंधु मुख-मम-इन्दु—राशि-भरम् ।
जय मा सीता ॥
भाले देया मृगमद रेखा मारम वपा मातुवरम् ।
मजुल भकुटी शीश पीत पटी नील वसन कटि शोभा परम ॥
मृग शिशु लोचनि भव भय मोचिनि पाप सकोचिनी मतिहिंडरम ।
जय मा सीता ॥
सुन्दर नाशा मणि प्रकाशा मुख मृदु हासा अधर धरम् ।
मुक्ता हार कायोभार वक्षमाकार कनक भरम् ॥
कर शुभ कमरण केयूर मुक्तक नपुर पद क्वणा अमृत स्वरम् ।
जय मा सीता ॥
नख शिख सौम्य गुण गण रम्य प्रमाद गम्य सदा करम् ।
नयन 'वैद्य हरि' मातु चरण धरि मानति हृय भरि नित्य चरम् ॥
सब सुख कामा सम्पति धामा रामहि रामा सदा करम् ।
जय मा सीता ॥

जय जय राधा (श्री राधा प्रार्थना

जय जय राधा हर मम बाधा भक्ति अगाधा तेज अति ।
कोमल अंग मंजुल वप हरति अशेष कलि कुमति ॥
मुकुट कान्ति हरति भ्रान्ति स्दनि शान्ति पद्म रति ।
जय जय राधा ॥
कर्णाभूषण दुःख अघ चुषण जगमल दूषण करत क्षति ।
बिन्दु सिंदूर मृग मद पूर भुज केयूर भजहु सती ॥
भ्राजित आनन अरविन्दासन सदा हास्य तन करहु रति।
जय जय राधा ॥
अरुण अधर वाणी मधुर पद न्पुर नुपुर मन्द गति ।
शुकवत नाशा तेज प्रकाशा सदा सुवाशा चन्द्र द्युति ॥
अमर गुणावली मृदु भाषावनी नाम पन्नावली वस-सुमति ।
जय जय राधा ॥
पान हित हार अतिसुकुमार मन सुखकार कृष्ण पति ।
नयन कपोल सुन्दर लोल करति कलाल ईश प्रति ॥

रम्य माधुरी सब सुख आगरि शोभा सागरि प्रेम नति ।
जय जय राधा
चकपा बनक बसन सुवास मति जनक मदा यति ।
वैद हरि मन हुलसित गा गुन तन मन धर बनि-घहहति ॥
नग गिर भाज अनुगत तज विम्तत सेज दु ग्र पचति ।
जय जय राधा ॥

जाह्नवी समार तारिणी श्री गगा प्रार्थना

जाह्नवी ममार तारिणी जननि जय जय मुख करो ।
मुरसरि भागीरथी मय विश्व मानव अघ हरो ॥
सरिता त्रैलोक्य चले पद कमल आधा ह मैं ।
शिव जटा सचारिणी विमलाम्बु मधुर हिय धरो ॥
पवित्र जीव कृपा हरो निजवारि मजुल न्हाइ स ।
विल यी धुनि उर स्मृति म अतुल भाज सदा भरो ॥
निग मागमे महिमा गुभापित नित्य सुपूठतरगिणी ।
भगवत सुपाद विहारिणी गात रम्य सागर-गुरा तरो ॥
मसार मे सब जीव भस्मीभूत हो तव नीर म ।
लीन हो पाते सुगति मत इद्रवन नन्दन गरो ॥
तीर मति मल्लातु प्राणी मम पामर जीव ज ।
प श्याल वनचर लाज गुमान मुर या धरा ॥
सुन मुनि नर गुरन्दा मन मजु मोक्ष प्रदायिनी ।
मजनु नित्य भगाणुवे मन दु न बरण र तम जगी ।
दिव्य रूपा वदिता गुर मम्पनि गुमति प्रग ।
वैद हरि घर गीग पाद नयन गु मग् रो ॥
काम क्रोध न माभ ईर्ष्या मा्ह दर पाग गे- ।
दिव्य म भँन गिग मय मान क्षमना भव टरो ॥
जनि मगे भगवति श्री मकर वाहिनी जानर ।
कर कृपा मा पार जग न विपद पवनि म दलो ॥
निन्दना विष्णु पनी मुर त्रिपथगा भा ।
भीष्मसू म व मुराशा नमन वदिन नर ॥

भगवान—दहानो मे एडहा ग इ न — द

मस्यान दया मन बद रग न — ए
वानी मदुरा हरिद्वार मन म न

उचित नियम तन पालन करना यही धर्म का मत मेरा।
नेह हरि भगवान लक्ष्मी का वास वह नितनित नेरा॥
मन चाहत मट्र निवामन ना मति कहति हैं रजा रजा।
इन विषयन म कछुसार नहीं पिय ! सोचहिय हटजा हटजा॥
यह धार सन्तोष भरी दूषन री पीन को हटजा डटजा।
रसी बाहर गाय म वद्य हरि मन सागर है घटजा घटजा॥

(कवित्त)

बाहर री चमर देख विषया का नग्न नाच मन पगहरि अन्तकाल पछतायगा
ईश के गुणा गो गा जीव को टिकाने प्यार सदाथिर हरि नाम उच्च पद पायगा
सुर तुलसी का गुण देख देख चलचल वचन न पाव सबराज मिल जायगा
बड़े बड़े राजा सेठ हुए रम जग मे सूर तुलसी का नाम अमर कहायगा

जयति शालिग्रामप्यारी (श्री तुलसी महारानी की प्रार्थना)

जयति शालिग्रामप्यारी तुलसी महारानी तारी।
मजरी मधु हरित पत्र पी-मधुकरी हो मति मोरी॥
सौभाग्य हित नारी करें पूजा मुकार्तिक मास म।
व्याहकर आनन्द मनावें शीश नमनि कर जोरी॥
पद ईशरत हो विष्णुप्यारी चरण अमृत धारिनी।
विष्णु पादोदकसदा लो नारा नर कट अघ डारी॥
दुष्काल मृत्यु हारिणी अरु सब व्याधि विनाशिनी।
आयु ज्ञान सुबुद्धि दात्री माग की रखता-दोरी॥
भोजनातर शाधितीमुख रुचिर अग्नि प्रदायिनी।
सन्निपात रजाहरी गुण गरिमा महिमा नहीं थोरी॥
लम्भाराथ कितने तुम नाशिनी भवभय रुजा।
आयुपति गह दण्डपाश तुम बहू कहा मति भोरी॥
जगज्जा रजनी की चादनी तेज पुञ्ज प्रकाश स।
हरति व्याधि जनित कलिमल पाव पूजू मैं गोरी॥
उभय लोक सदा वही तव अतुल गुण गाथा सही।
वद्यहरि मा पद शरण म मैंभी आयो बन घोरी॥
कल्याणकारिणी दायिनी धन सम्पति अरु मोक्ष की।
अहिवाकी सदाचार की मन म गिने कलिया कारी॥
विश्वास है सब फल का दाता शास्त्र कहत हैं सदा।
तनमा तव गुण अमरधारा वहती है पत्ता पोरी॥

ज्ञान और माया (कवित्त)

ज्ञान और माया दोनो व्यापरहे तन तन,
कौन विजयी हो यह जाने भगवान है ।
कभी मन जाय देहली की राजधानी मे,
कभी जाय हरिद्वार काशी पुण्य थान है ।
कभी टिब्बे नेहानो के जंगली मैदान मे,
कभी सोच उभयत होवे हैरान है ।
अंत मे विचारे-गुण पम्वत गुणीजन,
'हरि" चलचित जहा गुणियां का मान है ।

रचना बनी है अद्भुत इस विश्व की, (विश्व की अद्भुत !!)
कोई रोवे कोई हसे देखत समाज का ।
कोई चाहे प्रेम रस शांति पीयूष धारा,
कोई चाहे रात दिन कलह के काज को ।
कोई चाहे दारा सुत प्रिय ! नये भोगो को,
कोई सत पा मुद मुट्ठी ही अनाज को ।
उथल पुथल यही रात दिन होवे जा में,
विश्व कहाये "हरि" ईशमहाराज को ।

आश्रम ऋषिकुल (ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम चूरू के उत्सव पर)

आश्रम ऋषिकुल ब्रह्मचर्य का उत्सव आज यहां पे है ।
सुस्वर स्वागत वेद ब्रह्म का मजुल स्थान जहां पे है ॥
अनुकम्पा यह कृष्णचन्द्र की है जिसका शुभ रूप बना ।
स्नेह भरी वद ध्वनि सुन सुन भक्त हृदय है प्रेमसना ॥
शताब्दियो का बंध छुडाकर भारत सब स्वतन्त्र हुआ ।
नव वसंत की ले सुमनांजलि आश्रम वटुक प्रसन्न हुआ ॥
पहना विश्वम्भर ग्रीवा मे आज प्रार्थना करता है ।
रक्षित रखना चतुराश्रम जो आज समय से टरता है ॥
नृप अशोक सा धर्म राज्य हो सुखी सदा ही सभी समाज ।
श्रुतिधुन सुन ब्रह्म चारिन की माता का हो ऊंचा ताज ॥
संस्कृत वेद सनातन हिन्दी भाषा इसकी अमर रहे ।
सदा सत्य हो जगदगुरु के वाक्य जो श्री गीता मे कहे ॥
हो स्म हरेभरे भारत मे उन ऋषियो का धर्म
सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य व्रत-से न डिगें नर यदा कदा

उचित नियम तक पालन करना यही धर्म का मत मेरा।
वैद्य हरि भगवान लक्ष्मी का वास यह नितनित तेरा॥
मन नाहक शहर निवामन ता मति बहुति हैं रुकजा रुकजा।
इन विषयन में कछुसार नहीं प्रिय! मोचहिय हटजा हटजा॥
यह धार सन्ताप भरी दूषन की पीन का उटजा हटजा।
यत्ता बाहर गाथ में वैद्य हरि मन सागर है घटजा घटजा॥

(कवित्त)

शहर री धमर त्व विषया का लग्न नाव मन फगहरि अन्तकाल पछतायगा।
ईश के गुणां को गा जीव को दिखावे प्यार सदाचिर हार नाम उच्च पद पायगा॥
गुर तुलसी का गुण देख नैन चलचल वचन न पाव सवराज मिल जायगा।
बड़े बड़े राजा मठ हुए रम जग में सूर तुलसी का नाम अमर कहायगा॥

जयति शालिग्रामप्यारी (श्री तुलसी महारानी की प्रार्थना)

जयति शालिग्रामप्यारी तुलसी महारानी तारी।
मजरी मधु हरित पद पी मधुकरी हो मति मारी॥
सौभाग्य हित नारी करें पूजा मुरालिश मास में।
ब्याहकर आनन्द मनावें शीश नमति कर जारी॥
पद ईशरत हो विष्णुप्यारी चरण अमृत पावनी।
विष्णु पार्षद सदा ला नारी नर कट भय डोरी॥
दुष्काल मृत्यु हारिणी अरु सब व्याधि विनाशिनी।
आयु मान सुबुद्धि दात्री माग की रगता-रोरी॥
भाजनान्तर शाविनीमुख रचिर अग्नि प्रदायिनी।
सन्निपात रुजाहरी गुण गरिमा महिमा नहीं थारी॥
लक्ष्मानाथ निकतने तुम नाशिनी भवभय रुजा।
आयुपति गह स्हदाया-गुण बहू कहा मति भारी॥
जगज्जा रजनी की चांदनी तेज पुंज प्रकाश सं।
हरति व्याधि जनित रजमिल पाव पूजू मैं गोरी॥
उभय लोक सदा वही तव अतुल गुण गाथा सही।
वद्यहरि मा पद शरण में मैभी आयो बन घोरी॥
कल्याणकारिणी दायिनी धन सम्पति अरु मोक्ष की।
अहिंसा-श्री-सदाचार की मन में खिल कलिया कोरी॥
विश्वास है सब फल का दाता शास्त्र कहते हैं सदा।
तुलसी तव गुण अमरधारा बहनी है पता पारी॥

ज्ञान और माया (कवित्त)

ज्ञान और माया दोनो व्यापरहे तन तन,
कौन विजयी हो यह जाने भगवान है ।
कभी मन जावे देहली को राजधानी मे,
कभी जावे हरिद्वार काशी पुण्य थान है ।
कभी टिके देहातो के जगली मैदान मे,
कभी सोच उभयत होवे हैरान है ।
अत मे विचारे-गुण परखत गुणीजन,
"हरि" चलचित जहा गुणियो का मान है ।

रचना बनी है अदभुत इस विश्व की, (विश्व की अदभुत ॥)
कोई रोवे कोई हसे देखत समाज को ।

कोई चाहे प्रेम रस शाति पीयूप धारा,
कोई चाह रात दिन कलह के काज को ।
कोई चाहे दारा सुत प्रिये । नये भोगो को,
कोई सत पा मुद मुटठी ही अनाज का ।
उथल पुथल यही रात दिन होव जा मे
विश्व कहलाये "हरि ' ईशमहाराज को ।

।श्रम ऋपिकुल (ऋपिकुल ब्रह्मचर्याश्रम चूरू के उत्सव पर)

आश्रम ऋपिकुल ब्रह्मचय का उत्सव आज यहा प है ।
सुस्वर स्वागन वद ब्रह्म का मजुल स्थान जहा पे है ॥
अनुकम्पा यह कृष्णचन्द्र की है जिसका शुभ रूप बना ।
स्नेह भरी वेद ध्वनि सुन सुन भक्त हृदय है प्रेमनना ॥
शताब्दिया का बध छुटा र भारत सब स्वतन्त्र हुआ ।
नव वसत की ल सुमनाजलि आश्रम वटुक प्रसन्न हुआ ॥
पहना विश्वम्भर ग्रीवा म आज प्राथना करता है ।
रक्षित रखना चतुराश्रम जो आज समय स टरता है ॥

नप अशोक सा धम राज्य हो सुखी सदा ही सभी समाज ।
श्रुतिधुन सुन ब्रह्म चारिन की माता का हो ऊचा ताज ॥
सस्कृत वेद सनातन हिन्दी भाषा इसकी अमर रहे ।
सदा सत्य हो जगदगुरु क वाक्य जो थी गीता म कहे ॥
हो न्म हरेभरे भारत म उन ऋपियो का धम सदा ।
सत्य अहिंसा ब्रह्मचय व्रत-से न डिगें नर यदा कदा ॥

मातृपिता गुरु सेवक बनके वासुदेव का ध्यान धरें।
सत्शिक्षा धर्मोपदेश से अखिल विश्व कल्याण करें॥
शस्य श्यामला भारत भू हो दीर्घायु नर नारी हो।
जन्मभूमि की उन्नति करके अमिट कीर्ति अधिकारी हो॥
वसें विश्व में वैररहित हो जसे सिंह भरत के संग।
वैद्य हरि की विनय ईश से भारत में हो नई उमंग॥

श्री गणपति—दोहा

श्री गणपति के ध्यान से जग में हो आनन्द।
सुमिरहु नित्य हरिमुदा प्रेम मना स्वच्छन्द॥
नयन मार्ग में ले चलो हृदय सिंहासन राम।
नेह ध्यान से ले बिठा उन्हें न शोभाधाम॥
रामकृष्ण को हृत्पटल बैठा के निज देव॥
स्नेह सुधा से ओत प्रोत हो सुभाग्य निज पव।
जिह्वास्मर री राम जो जो में अमृत धार।
जन्म मनुज के वश में हो—या बेड़ा पार॥
तुलसी के जो इष्ट हैं अमर कीर्ति कर नाम।
निजभक्तन को दे सुधा मुद होवें श्रीराम॥
लकड़ी में दीमक लगी ज्यों शरीर में काल।
ईश्वर के गुण गाईये साच समझ के चाल॥
सब दिन चुन तृण खण्ड के चटरा रचनी गेह।
गृहपति गृह शोभा रचे नाश काल ना नेह॥
तैसे ही संसार में मानव की री देह।
कालदेव शोभाय निज नाशकरत यह गेह॥
धवले पर केशर गिरी लगा रगड का दोय।
चन्दन का—जब नान तन क्या न हिय में होय॥
संध्या करते विप्र की दशत हमें कुलाग।
अब तुए कुमार्ग में लगा विषय का रोग॥
धूप सुगंधि देय के फिर हो जावे राख।
तस साधु जन प्रिय ! परमारथ में भाख॥

भारत के जन (ईश भजन)

भारत के जन इस में लग जा।
शान्ति नहीं दुनिया में तुझ को उठे झंझट से दिन रात।
तरह तरह के जाल रचाकर खोता क्या जीवन धन गात॥

ईश ध्यान धर शांति में मगजा। (भारत के जन)
कहता हूँ उन मानव वृन्द को नई धार टो रचना आज।
सफल मशीना पहली श्रेणी क्या करना अनरथ के काज॥
समय देख तू सोत म जगजा। (भारत के जन)
स्वतन्त्र भारत की जो नीति चलती है पहले से आज।
मन वापर वन मन्द भाग्यनर समता में नहीं चलाना राज॥
पावित्र उर्वी को मत ठग जा। (भारत के जन)
नीति मशीकरण धर्म विषय की राज इन्द्र वत चलने दे।
मान कूँडे पथा के मन रांडे डाल तू पलने द॥
माया बनके ऊचा बगजा। (भारत के जन)
एक पिता के पाँच पुत्र हैं कोई अभागा कोई भाग।
कोई गोरा कोई काला कोई पडित का सिर पाग॥
चलो विषमता प्रकृति की ढग जा,। (भारत के जन)
भारत का परिणाम सुखारर हागा धीरज हिरदे धार।
बद-म्यान म अपनी करल भ्रामक वाणी की तलवार॥
बनी बनाई में तू दगजा। (भारत के जन)
काम नही दुनिया म तुझको बहुत पढाई से बेकार।
पार हेतु "हरि" जग अगन म तत्वमसिरा का पकड सुधार॥
मिले अमरता हरि मे पगजा। (भारत के जन)

उपरि देख—दोहा

उपरि देख सुरम्यता अन्तर मे विषधार।
मत फस मानव सोच के अन्त है हाहा कार॥

दर्पण मुख देख के प्रतिभा से आनन्द।
अभीमनाया ए प्रिया! हिय सच्चिदानन्द॥

सुन्दरता के रग म मतलल चाव चित्त।
क्षण भगुर यौवन प्रिया आयु दिन निज वित्त॥

मृग नयनी के नयनशर वेधत हृदय नरन्त।
जा के यह शर ना लगे उच्च कोटि ̄ सन्त॥

नगर गाव मे वासकर अनुभव किये अनेक।
बहु खोज-पर ना मिले-जा आनन्द विवेक॥

कही नगरों म दुःख स याकुलता बढ जाय।
कही देहाती दुख से शांतिमन ना भाय॥
राम बडा माया बडी इसका कर सुविचार।
दृढ निश्चय कर हृदय को तब हो बडा पार॥
कमलनयन मुख सावरे की मदो मुस्कान।
देखत सजनी ग्राज मैं प्रम विवश ग्रजान।

भरा नही पेट (भजन खाली पेट पर)

भरा नही ग्रनादर से पट। (टेर)
रिक्तादर को रामामृत से भरते हिय समट।
तप्तज्ञानद पर रम्यपयसरी टूटी भरी है ठेट॥
तब भी प्यास बुझी नही नर हे! ग्रब तो हृदय सचट।
ग्रन्न भरा है ग्रसनाप का सब खटपट ग्रौर सेट॥
नही नष्ट है गया ग्या र भी क्या हा मटिया मट।
ग्रजित करन राजा रक "हरि' गया सब राल खपट॥
ग्रबतो हरिगुण स भर पद हाजर प्रभु की भेट।

ज्ञानामृत की दाता (बुद्धिमती प्रिया महत्व)

ज्ञानामृत की दाता तुम प्रिय! माग दर्शिका सुमति हो।
तव ध्यान सुमति से विहरे ता तुम उच्चकाटि वतरणी हो॥
जब तुलसी राग ग्रनग से था तब तुमने माग दिखाया था।
बभक्त बन प्रिय राम के क्षण म प्रेरक तुमसो सुमति हा॥
उदभट प्रेम देह मरे स ऐसा नह राम से हा।
भवसागर पार लगी नौका को बतान वाली तुम्ही तो हा॥
चिन्तामणि न भक्त सूर को ज्ञानामृत का प्याला था।
किया दूर हृदय बुद्धि का तम दे ज्ञान-पुराणी तुम्ही तो हा॥
सूर तुलसी का ज्ञान नयन जब खोल दिया इम सुबुध्विने।
हरि कहन म क्या ग्रत्युक्ति ग्रयि! ज्ञान माधुरा तुम्ही तो हो॥

नर तू कर ल (भजन)

नर तू करले गुन विचार।
क्या ग्रच्छा क्या बुरा जगत म मोवमति गई हार।
पचतत्व की सूक्ष्मता को कहत जीव हजार॥
पालन करते एक न देखे फस मोह मझधार।
बहुत सोचत इसी तथ्य का मिला हरि' ग्राधार॥
धम नीति गह पाला करत भजो इश बहबार॥

परम चतुर (ज्ञान दोहा)

परम चतुर श्रीराम हैं परख भक्त की लेत ।
गलती सब मुधराय के करते सदा सचेत ॥

विरसमति श्रीराम में-अन्य काम आनन्द ।
शिवकह गिरिजा सुन-हरि-ते नर अतिमतिमन्द ॥

रामौषधि की घूट ले मरण रोग को खोय ।
कीर्ति जिनकी जीवती अमर कहाय सोय ॥

मान धनत को प्राप्त कर अन्य द्रव्य का त्याग ।
करने मन से जो सदा नर नारी बड़ भाग ॥

तन म व्याधि अनेक है मन मे बहुत विकार ।
सोच समझ क नर मरे बहुत इसी ससार ॥

करना शीघ्र सुवामनर जल्दी जल्दी सोच ।
समय एक पछतायगा क्या न समझ तू पोच ॥

अमर कीर्ति जिस काम से वही कमाई कर ।
धरा द्रव्य सब यही रह त्रिया मित्र और घर ॥

बहुत सुरक्षित वस्तु भी होती नाश सदा ।
वही मनुज पर जाचिये चलती काल गदा ॥

श्याम बिहारी रूप के देखत उप जे सुक्ख ।
घ खिपा पलक कपाट म धरा-जाय सब दु ख ॥

श्याम रूप शोभा धनी सुख उपजावन हार ।
हृत त्री म ने बिठा क्या ढोता जग भार ॥

बहुत मरा के चित्त म बहुत बार सुविचार ।
आते जाते है सदा स्वप्ने की भरमार ॥

जब मन म आव प्रिया ! सुप्ठुधाम की रेल ।
तबही टिकट कटाय के चढजा ठेम ठेल ॥

मीठी वानी बोलने जग मे पुण्य अनक । (वाल्मीकी रामायण)
कडवी पथ वानी कह-सुन महसा एक ॥

रात दिवस के दु ख का सुमिरण करता रह ।
सभी ज्ञान हो जायगा मुख स विष्णु कह ॥

मोहमाया गर्दन पकड मलती है नितस,
यचजा सकट स सभी इस खड गले

मन को ईश टिकाय के जो मानन आनन्द।
उनकी तृष्णा नाश है मान जे परमानन्द॥

श्वासगति जब जीव में तब तक शुद्ध शरीर।
त्रिया मीत गुन त्याग दें निकसे प्राण समीर॥

मानव मत भूले सदा अपना लव सम्मान।
स्वार्थ के वश सब जगत काम रहित अपमान॥

(अवमहृत नहीं रहे)

हरिहर रसामत गात

धन की ममता बहु जग पाई।
बड़े-बड़े धनवान लोग भी रुपया खरच सकुचाई। (टेर)
घट बटाव नही घटत धन जिनके नित्य बढाई॥
फिर मन हिय हुई शान चेतना तब भी भरम न जाई।
स्वर्णमयी रावण की लका साथ न गई निबाई॥
तब तुम बाटत क्या सकुचाम्रो यह अचरज मम भाई।
पूर्व जन्म के पाप पुण्य की बुद्धि ही ता में समाई॥
जानत भी अज्ञान मनुज की मति सदा भरमाई।
सोचत है सुत वनिता बन्धु निन धन कष्ट उठाई॥
अन्तकाल तेरी सेवा को करन सबहि हरपाई।
हरिभरोसो करो नारी नर जीव ईशमय पाई॥
विधि ललाट के लिखे लेख जा कर्मगति न नशाई।
सब साधन के रहते देखे जीव सदा अकुलाई॥
महाभयकर व्याधि व्यापीतन द्रव्य काम नही आई।
प्रभु की माया प्रभु ही रक्षक प्रभुहि देवत पाई॥
वैद्यहरि प्रत्यक्ष देख के करता ईश बडाई।
मानुप जन्म पाय प्रभु कृपया करहु जीव भलाई।
तुझे मिलेगी पूर्व जन्म की दी हई दूध मलाई॥
एक श्वान को मिलत न रोटी दूजा पेट भराई।
प्रभु पत्थर में बैठे कीट्को भेजत दाना माई॥

वाणी गुणगा ज्ञान दोहावली

वाणी गुण गा राम के उपजे सत्य मिठास ।
मार अमर इस जन्म का देह का होय विनाश ॥

मृत्यु विभागी दु:ख से जब अकुलाते प्राण ।
धन परजन सुत प्रिय सुहृद नहीं कर सकते त्राण ॥

प्राणों का भय जब बने रोगी की आवाज ।
प्राण द्रव्य के स्वामी हो प्राणनाथ महाराज ॥

राम राज्य जानो उसे जिसमें हो यह ज्ञान ।
प्राणि जात जो आत्मवत् देखे परम सुजान ॥

दुखी तन में नित बसे प्रेम मृत्यु एक संग ।
अधिक प्रेम से मृत्यु है-स्वल्प प्रेम रस भंग ॥

स्वल्पावस्था की वृद्ध विधवा को हरि देख ।
दया न हिय जिनके हुई ते पामर नर भेख ॥

ज्यों सूखे जल भूमि का घट जीव का श्वास ।
चैन चैन किसी मिली-हुआ न पर विश्वास ॥

सदा सत्य वष्टिता ज्यों घ घट का मुख ।
बिन दर्शे गुण ध्यान हो दर्शत उपजे दुख ॥

तन ही संसार का बाना वेष्टित देख ।
बिन देखे प्रभु सुन्दर का दुःख की बनी है रेख ॥

सुन्दर नारी देख के चित्त में हुआ विचार ।
कफ पूरित मुख नासिका दुर्गन्धित आगार ॥

प्रेम स्वपन सजन के सब चलते हैं गैल ।
पार न आदि पाईया ज्यों पाणी का बैर ॥

[illegible] बौद्ध किर पहने दुग्ध फिर सुगन्ध ।
कहाँ स्वाग तप आनित्य [illegible] का [illegible] ॥

मानव में [illegible] हुई सब पंचेन्द्रिय ज्ञान ।
हरि देह को जान कर क्यों न कर कल्याण ॥

[illegible] दूर दुःख हार है आदि की सुन्दर मान ।
[illegible] हो है सब दुःख [illegible] ॥

[illegible] हरिद्वार ।
[illegible] ॥

मानव प्रकृति स्वभाव से दौडत विपरीत संग ।
धीरज व अभ्यास से तरनर इस को भग ॥
फिरत चक्कर दर वे गाडी व में आज ।
मन म यो सोचन लगा इस जीवन के काज ॥
यात निरन्तर याद रग जीवन की यह ग्रास ।
याल पत्र वे घूमन-पहिय देख उदास ॥

जगत म मिथ्या का यह खेल (ज्ञान भजन)

जगत म मिथ्या का यह गल । टर
न्यायालय म हमने दखी झूठ की बढ़ती बेल ॥
हर नर हर बालक स्वदोष को ढकत मिथ्या भेल ।
बड़े माधु व्यापारी पडित इससे करत मेल ।
नीघ दाप अपराधी दखे वच निकले इस हल ।
अस्फुट बोल युधिष्टिर ने दी द्रोण गुरु को सल ।।
अभिमन्यु विश्वास घात से मरा-महारथी ठेल ।
'हरि' आखिर म इनको मिलती यमराज की जेल ॥

पहले मन को (ज्ञान दोहावली)

पहले थी मन की दशा चाहू जग मे मान ।
अब ईश्वर के रूप की मगन भया पहचान ॥
ए मन ! हर्षित दख ज्या सुदर युवती गात ।
त्या देखह छवि राम की भव स छटे तात ॥
जानत मन सब ज्ञान को फिर विचर अज्ञान ।
काम लाभ की प्रबलता स बुद्धि हैरान ॥
वश म होत अनग के जो मन सदा सचत ।
जीतो योगाभ्यास म कर भ-गीता लेत ॥
मदनानन्द समाप्ति पर जब होना है ज्ञान ।
देहात्मा की ग्लानि से-स्थिर मन तरे पयान ॥
रम्याकृति सुलोचनी सुमुखी सुस्तनी नार ।
रखहु मन वश होत नर सुषमा के आगार ॥
वाणा मुन लोचन सदा आकृति बनी कुरूप ।
एसी नारी न्ानर मौन रहत अनुरूप ॥

सुदरता बहुमुखी बनी परख करत मन माहि ।
भिन्न भिन्न रुचिनर प्रिय ! पारहि पाया नाही ॥

गूढ मति से सोच तू ईश्वर का ससार ।
माया यवनिका नन के आगे दई पसार ॥

भिन्नाकृति सबकी बनी माया का ससार ।
हेर फेर सूच्याग्रसम देखत सब नर नार ॥

ज्ञानी पडित होत है वेही रतन सुजान ।
जो अनन्य मन ईश पद सदा भक्ति हिय ठान ॥

विप्र जे विद्या विनययुक्त श्वपच हाथी श्वा गाय ।
समदर्शी पडित लखे सब को एक सी काय ॥

ऐसे समदर्शी प्रिये ! कबहु न मानत भेद ।
रम्य असुदर एक से जानत माया छेद ॥

हर प्राणी (ज्ञान दोहावली)

हर प्राणी के स्वार्थ को जो देखत मन माहि ।
गूढ मति विचरे सदा तो भय बाधा नाहि ॥

रहित स्वार्थ जो प्यार है वह ईश्वर मे जान ।
तू भी वैसा होय के कर मन मे अनुमान ॥

राम–कृष्ण गुण गान से नित हिय होत उजास ।
सत्य सफल जन होहि हैं अज्ञाना वता नाश ॥

हृदय महल की सुखकरी कोमल शय्या माहि ।
लक्ष्मीपति कमला सहित रहहु निरन्तर आहि ॥

गहे बन्धन की रस्सी ने चिन्ता दई लगाय ।
जो निधि का छीटा लगे तो कुछ कुछ बुझ जाय ॥

नारी केशनि एक कर रस्सी दई बटाय ।
जीवित नर बाधे कई-मृत बनी पशु बधाय ॥

मैं पूछू है वद्ध जन ईश प्रेम म बाध ।
रस्सी म जा श्रम किया वही प्रभु मे साध ॥

बूढे न रस्सी बटी एक मास के यत्न ।
ईस ध्यान म एक पल लागन मे अशक्त ॥

नाना नान परिस्थिति रही रहती दिन रन ।
मन नचानव है सदा कबहु दुराव है चैन ॥

सुधरे मन महाराज से सव पथ मगल मूल ।
मव डगरी का आसरा डूबते को नदी कूल ॥

क्षमा मातृ माया लखे मन नित विधि अनेक ।
भिन्न प्रेम की विधि तह रहता मान विवेक ॥

मृग नैनी के नयन शर वधे हृदय न जाहि ।
योगी तापस जानिये उच्च कोटि के ताहि ॥

मृग मद मृग नैनी लगा कुचविच और लिलार ।
सुध सुगंधि सवश हुए ते डूबे मझधार ॥

दुबलता दिन दिन बढ़े योषित के सहवास ।
आज ओज प्रतिभा घटे निशिदिन आयु विनास ॥

माधुरी वाक् सुलाजनी सुमुखी गुस्तनी नार ।
सुमति संयम पालिका वह घर स्वर्गागार ॥

मधुर भाषिणी योषिता प्यारी प्रकृति देन ।
ताके दिन सुख से कटे निशिदिन रहती चैन ॥

गुण की पूजा होत है नारी हो या नर ॥
मल भक्षण करता सदा शकुन वाम शुभ खर ॥

नारी गुण की खान है जो कोई बरत जान ।
उदर ताहि के ऊपजे जगगुरु शंकर मान ॥

मन विषयन भजन

मन विषयन अगनि जरो है । टेर
बहुरि मान से स्वय बुझावे पर नहीं जात टरो है ॥
सोचत हु परिणाम भयंकर तो भी हृदय अपरा है ।
हाथ कछु नहीं आवे—कल्पना झूठी मे विगरो है ॥
सत्सगति से होत विजय वहू तापस मुनि करो है ।
विषयासक्ती मति रहती थिर हू जह तह जीवन सुधरो है ॥
परदारा परधन कुसगति पर फल फलनि गरो है ।
नही अघात सेवन ते प्राणी काल डरनि न डरो है ॥
जात रूप जारित खान—वय कान्ति ओज निखरो है ।
विषय तपनि जर मन सुवरण सा कोई न हरो भरो है ॥
विषय कीट जग राज रोग मे नित नर जात मरो है ।
भवद्द 'वैद्य हरि' सजग सुमानसबल प्रभु गुण सू खरो ॥

सखा मोहे आश्चय क्या है

सखा मोह अचरज है भारी । टेर
काल गाल मे जाते देखे निशिदिन नर नारी ॥
अचरज मोहे शेष जीव का रहनिथिर जो विचारी ।
त्रिया मित्र सुत द्रव्य जनित दु ख देखत रहत अनारी ॥
तदपि समझ मन माहि सुखी है टरे न विधि गति टारी ।
मास वसा की शोभा से मुख चमकत कोमल नारी ॥
मुख कुरूप पिडिका से होकर जब विकृत छवि धारी ।
देखत नर नित नही सोचता डूब रहा मझधारी ॥
'वद्य हरि मन हिय विचार कर प्रभु गल बहिया डारी ॥

बैठा जग मुख फाडे काल भजन

बैठा जग मुख फाडे काल ।
पडती जब कभी मोह यवनिका ढाक देती तत्काल ॥
कबहु हटति तब दर्शन होते रूप भयज विकराल ।
एक करनि मासास्थि भक्षण दूजे मे मुडमाल ॥
पापी नर विषयासक्तन को मेलत देखा गाल ।
नभ उर्वी की चक्की चलाता पीस देही की खाल ॥
सुकृत धर्म की कल्पलता टकराती बनके ढाल ।
मोह नीद म क्यो सोता नर जो कुछ करना हाल ॥
करदे अपरण ईश पदनि निज रम्य कलेवर भाल ।
काल जनित दु ख पाचन को जडी ईश चूर्ण कर डाल ॥
एक दिवस 'हरि' निकल जायगा जीवन मजु मराल ।

ज्ञान दोहा

सत्र कामा मे नारी की नीची रहती जान ।
तप फल-मानु पदहु का पितु से बना महान ॥
नारी प्रेम में अटपटे तुलसी सूर विशेष ।
रमणी न सब कुछ दिया और ज्ञान का वेष ॥
रमणी न कुमती करी तुलसी सूर की दूर ।
राम कृष्ण गुण प्रेम मे तब से रहते चूर ॥
मन को राकू म सदा वश नही पाया जान ।
अन्तर्मति गहरी गई हेतु सग पहिचान ॥

पशु पक्षी सब कीट भी विषयन मे लपटान ।
मदन राज की अधिकता कलियुग व्यापी आन ॥
स त शास्त्र के सग स सुमन सुसगत मूल ।
सीच ज्ञान वारी सदा काम रति प्रति कूल ॥
कामरति की नाव से डूबा सब जग जीव ।
ईश तिरन का पोत है चढो जोड के सीव ॥
जग मे नित नर बहु तरे सिन्धु नदी पाखान ।
कांचन कामिनी जो तरे तेहि तरे भवयान ॥
कामिनी नित मनहु वसे कचन जाके द्वार ।
किंचित हरि चरचा करे सच्चो तो हो पार ॥
हरि को कभी न भूलिय सब म रह विराज ।
भूलत तम छाव हिय मृत्यु व्यापरहो आज ॥
हरि चरचा नियमित करे त बड भागी लोग ।
किसी दिन चर्चा पुण्य से छूटत यम के भोग ॥
मायावी ससार का क्या है सच्चा सार ।
पार न पाया नाहि का गये काल आगार ॥
कहा जाऊ और क्या करू क्या चाहू करता ।
मति कीर्ति को चाहती और पाप डरता ॥
सुख सब घटते जात है नही मान सुख नाश ।
मानाश्रित जीवन मुदा नित नूतन उल्लास ॥

भजन मनपर

मन निजन मे नही लागा । टेर
कोलाहल मे नही ठहरता फिरत है सदा अभागा ॥
इसको चाहिए समय-समय के सबहि साज समाजा ।
नही एक रस एक रग म थिर नही रहता भागा ॥
इसका ममता मोह हतु है जा हिरदे नित जागा ।
ऋषि मुनि सब जाल छोडकर पालत जीव सुभागा ॥
समय समय की नित नवीनता म बन मन वा घागा ।
हरि पिग्न यह चक्कर डोरी देखत पीछा न आगा ॥

प्रियाया सगणावस्था वणन (ज्ञान) कपिल क्षेत्रे

आज प्रिय ! मन मदिर म मोरे तोरी स्थिति समाई ।
ज्वर का वग भयकर आकर तुम का ग्रान दवाया ॥

सनिपात और वात प्रकोप ने बहुत प्रलाप बढाया ।
मेरी बुद्धि कु ठित होकर सदन करन को धाई ॥
मोह उमडा छोट बच्चो का देख अवस्था तारी ।
मृत्युभय उपजा मन मेरे रोटी करे को मोरी ॥
चौतरफी स्वारथ दृष्टि मे मन म छाई धाई ।
दामादर (रमेश) को शीघ्र पढावे शारद का ब्याह कर स्यू ॥
मन मे झूठी उठे कल्पना सुदर वर से बरस्यू ।
सुत पुत्री के मात प्रेम की हिय कनक भनकाई ॥
करकर होरी मृत्यु कल्पना जग विराग है छाया ।
प्रौढावस्था की नैय्या को तुमने पार लगाया ॥
जब न रही तुम-साधु वनक फिर हू भस्म रमाई ।
नर नारी के जोड बिन जग गह आश्रम है झूठा ॥
सब सुख सब साधन है स्मम सबसे यही अनूठा ।
ईश्वर भजन साधु सेवा से कर कल्याण हताई ।
वैद्य हरि अनुभव अपने की मनहि दशा लिख दीन्ही ।
कर्माधीन जगत सब प्राणी यही ईश ने कीन्ही ॥
भजुमन जगदीश्वर नित हिय से उसने लाज रखाई ।

गृह मनोरथ वणन (ज्ञान) देहात निवास

खेवन को गह की नैय्या मैं बधा फास मे आज ।
विद्या पढते मन मे आया खूब कमाऊ रुपय्या ॥
चि ता पास परीक्षा की थी और नाहि कोउ मैय्या ।
पढ वर्षो बेकार फिरा–कही लगी नौकरी आज ॥

धन ने स्वप्ने रपफूचक्कर हो गये मन के मेरे ।
बिन ईच्छा कुग्राम वास मे रहते दिवस घनेरे ॥
बीते–सकल मनोरथ मेरे हो अनरथ के काज ।
रुपया लेकर जीवन बेचा करता निष्क्रिय वास ॥
विद्या जितनी नाही उन्नति की ही मैंने खास ।
भाग्य चक्र का नही भरोसा देव गति का साज ॥
ईश्वर जो कुछ अच्छा करता धीरज मन मे धार ।
परमानन्द मगन चरणो म करता ईश विचार ॥
वद्य हरि ने इसी जन्म की मिट गई सारी खाज ।

मिले मरतता मनिमाराम था-क्या पति के यागे,
छाड़ तमागुण—सतागुण का सार शास्त्र न गाया।
तम ग्रान छाड़ु—कुर पान सतो गुणी सब पाया,
ईश कृपा की सदा निडरता पाई मत जो जागे।
व्यापार मत रंग सब ही जहा म यह ही एक अंधेरा,
ईश नाम का नर प्रकाश हिय जो हो सदा सवेरा।
"वैद्य हरि" ग्रन्थाता कन्त है निशिदिन प्रमिल रागे,

ज्ञान थी कोलायत मेले का दिग्दर्शन

कोलायत पूनम के मन स्नान करन को ग्राय,
भिन्न-2 मति वाले यात्री इतउत फिरत भ्रमाय।
मोडा ने डेरा डाला है जो साधु कहलाते,
नगा भस्मतन मृग तृष्णा म मागन को ह धाते।
ग्रपमान भरी ग्रावाज गृहस्थी करत सदा सजाये,
ग्रसली स्नान ध्यान करन को ग्राये कछु नर नारी।
बाकी सभी तमाशा देखन फिरते नयन उघारी,
दस मनहिं मन अचरज उपजा भक्ति कए नही छाये।
व्यापारी व्यापार करन को-रूप माधुरी वाले,
दादू पथी की सजी मदिरिया देखे फन मैं काले।
विलासिता व्यापीजह रग रग मुनियन मन जिलसाये,
राजस्थान क मन्त्रीगण न ग्रपना जाल बिछाया।
वशीभूत भाली जनता को भाषण स भरमाया,
रही विषमता राम राज्य म टलती नही टलाये।
सब ही तरह के ठग मेले म फिरते आठो याम,
चतुर नार नर इनसे बचते धर ईश्वर का नाम।
दृश्य नील का देख तपस्या करने को मन धाये,
मन का पाप कलि म नाहि होता तुलसी गाई।
ऐसा नत्र सतोष चित्तकर मै हिरदे हुलसाई,
कपिल देव लक्ष्मीपति मेरी रक्षा करने धाये।
लोप हुग्रा श्रद्धाभक्ति का केवल रहा दिखावा,
मिट मर्याद धर्म की साधो! समझ हिय पछतावा।
कलिधर्म की महिमा ऐसी जिसको दोष लगाये,
सब मेलो म सब ही तरह क दृश्य नजर जो ग्राते।

अच्छे बुरे यम जो करते फल भी वैसे पाते,
वैद्य हरि प्रत्यक्ष देखकर पद्य पठन को गाये ।
तीर्थ थान मे किया पाप जो वज्रलेप हो जाता,
ऐसा समझ 2 मन अपार ! ईश प्रेम जो न्हाता ।
उसकी नैय्या जगदीश्वर भी नित उठ पार लगाये,

ज्ञान लेखक को अनिच्छा से एकान्त वासानुभव

भय मोह ममता का छाया,
मृत्यु आज चाह सौ वर्षो मे होती शास्त्र म गाया ।
प्राणी को यह आश वधी ह रक्षक घर के मेरे,
देहज द्ग म आयु नही वटती भोग कर्मह केरे ।
अतकाल जब होय भान तब दीखे ईश्वर माया,
नही मानत मन मम समझाये फसा मोह ममता म ।
धीरे स अभ्यास करहु–रख ध्यान ईश समता म,
टूटत धीरे फास यही अनुभव ये मेरे आया ।
दो घण्ट एकात वासकर नही किसी से बोलो,
ईश्वर भजन ज्ञान सरणी से इस ग्रथ को खोलो ।
वैद्य हरि जीवन अपने मे कइ बार अकुलाया,

ज्ञान जयपुर दर्शन वणन

जयपुर के बाजार म मै देख स्वग की छाया,
धम भूमि यह रामराज्य की है रहत कुछ लोग ।
मैंने भी फिर-2 कुछ देखा भक्तिभाव का जोग,
कुछ कुछ रेखा ईश भजन की हिय बिच खीची राया ।
गोविंद देव का मदिर भारी बहुजन दे न आते,
राधा गोविंद हरिगुण गाके सफल मनोरथ पाते ।
राज्य व्यवस्था बहुत श्रेष्ठ है नित रहन मन भाया ।
बडे बडे मदिर रहतो विच भगवत मूर्ति विराजी,
धर्म मनाता यश लहरी की पहने गती वाजी ।
अब ना पुजक और देव को एकाकी मै पाया,
सब ही तरह की सुलभ वस्तुये सोना माती हीरा ।
वणिया हाट सजाये बैठे देखडिगे मन धीरा,
सीमित वही रुप रोशनी की झिल मिल करती काया,
अन्य शहर मे धम अधिकता इस युग मे भी पाई ।
नही कही है पापराशि के ढेर ढेर ह भाई,

नरकयातना यम भगवन् की करे नाच है चाया।
मन ललचाया रहन को लख शोभा छणी वहा की,
अन्दर से देखी नाली म यातना नरक तहा की।
उपर की अजाल यवनिका दग हिय भरमाया,
ग धमभरती गली गली बिच मूत्र पुरीष की धारा।
गन्धेन्द्रिय का नाश पाव दिन म हो अनुभव म्हारा।
स्वग नरक प्रत्यक्ष दग में इन पद्या म गाया॥
स्वग नरक क भोग यहा भी हैं दग्न को भात।
रूप विराट प्रभु नगरी म धर्माधीन सब पात॥
'डीग हरि" न सब विध दखी विश्वम्भर की माया।

राधा कृष्ण की जय

पद्मादशो विश्रा

श्री पूरण काम रामाय नम

ज्ञान भजन

कामना मन मे जागी मान।
विक्त विभव धन त्यज के भी मैं चाह ईश महान्॥
जीव मुक्त होत जब हसा तव छूटत अभिमान।
बिन मानन के इश सुपथ म आलस नरतन जान॥
मरे तो मन प्रथमारभे मान भया सम्मान।
इस भव भेषज साथ 2 म किया प्रभु गुण गान॥
मान अश्वरथ उपर चढ मैं पाई हरि गुण खान।
अब तो मानमयी प्रभु स्तुति मर मन बन तान॥
वंद्य हरि युत विनय प्रेम स नित नव होती भान।

ज्ञान भजन

है सब के मन मे ज्ञान।
गाते गीत भरे गुण गौरव मन की नही पहिचान॥
मधुर गिरा से मन मुद करने दूजा मोदा कान।
दृढ तम त्रिपणा सत्य दय से वृद्ध हृक्षण सोच सुजान॥

जा नोकन कल्याणकारी है उनका कर स मान।
कुछ फल मिलता चित्त टिकाये ऐसा मन मे जान ।।

नौका भव की पार भजु त्यज मोह माया अभिमान।
कथनी मीठी खाड सी लागे करणी विष की खान ।।

एसा तम हिय छाडु बावरे जो चाहत जगमान।
तो कुछ क्षण 'हरि वैद्य' याद कर सत मन से भगवान ।।

ज्ञान दोहा

राम नाम गुण मजरी विकसी नर तन हाल।
पाया जन्म अमोल तू अब तो सीखन चाल ।।

खा रोटी कपडा पहर फिर तो हरि गुण गाय।
रोटी वसतर जब मिला तब क्यो पाप कमाय ।।

इन्द्रिय विषयन दौडती इनकी रीति स्वभाव।
भव जग म नर दु ख घरणे अन हरि गुण गाय ।।

आदि मध्य अरु अन्त मे गर्भावस्था काल।
हरि की महिमा जानते तो भी फसे जजाल ।।

काम लोभ ममता घिरा ना सोचा तू सार।
अन्तकाल पछतायगा सुख दु ख मय ससार ।।

आत्मा मन के ज्ञान की नोका भजु बनाय।
बैठ कलेवर समुद नर भव सागर तर जाय ।।

शिशु मन गया कलोल मे बाल बाल सग खेल।
यौवन युवती सग मे बूढा पन दु ख जेल ।।

दूर दृष्टि से सोच नर जग जीवन का काल।
क्या करना है किस समय निमल बुद्धि सभाल ।।

ज्ञान भजन

हे प्रभु नही मान मन नीच।
विषय मोह माया के क्षण सुख पडा लोभ भव कीच ।।

क्रोध बैर पाखण्ड आधिडिग निन जाता है खीच।
प्राण कठ आकर घबरावे जब दु ख सरिता बीच ।।

तब पछताया वैद्य हरि हो प्रभु पद पहले सीच।
शुद्ध हृदय निमल मन भजले नयन खोल मन मीच ।।

कुछ क्षण जग जजाल छाडकर ममता मोह उलीच।

नित नियमित अभ्यास योग से चेतन हिय से पीच ॥
क्षण एकान्त वास प्रभु सेवा त्यजो नामा ढीच ।

कवित्त (ज्ञान)

काल की सी बात लागेबीत गया बाल पन ।
आई जो जवानी प्यारे त्रिया संग बीत गई ॥
काम लोभ मोह ममता की यवनिका पडी ।
मूल्यवान नर तन तेरी आयु जान गई ॥
अचरज दुःख नाव होता हिय पछतावा
तेज पुंज ओज शक्ति आज मेरी रीत गई ॥
आनन्द उमंग विषया म लागे बहुकाल ।
भान हान भोडा "हरि" ईश बुद्धि चीत गई ॥

जोश जो जवानी भर लाभ का आता है तन ।
देखता नहीं है प्राणी वृद्धत्व छा जायगा ॥
पाला नही ब्रह्मचर्य त्यागी नही ममता ।
बात फिर कोई नही पूछे पछतायगा ॥
दिवसो गई हुई पीछे की प्रभाव शक्ति ।
पाछी नाही आवे जब मन दुःख भायगा ॥
अब तो सहारा एक विश्वपति प्रभु का ।
बँध हरि प्रेम से परम पद पायगा ॥

ज्ञान (दोहावलि)

इस कलियुग में कठिन है वानप्रस्थ संयास ।
ईश्वर का नित ध्यान धर कर कटती यम पास ॥
मेरे मन मे यह जचा लोभ काम को त्याग ।
भोजन घर से पाय के गाया प्रभुवर राग ॥
यह शरीर विन अन्न जल कलियुग म नही काम ।
देता निश्चय जानिए भज ईश्वर श्री राम ॥
राग त्याग अभ्यास से घर को तप वन जान ।
अलग कुटय्या पास म नियमित प्रभु का ध्यान ॥

(दोहावलि)

हरिद्वार काशी वसो जो मन पूर्णानन्द ।
तो निश्चय ही जानिए मुद है अम्लानन्द ॥

विन मानहिं जीता नही नर इस कलि ससार ।
ईश्वर का धन मान धन सोच सोच भव पार ॥

दारा सुन जब योग्य हो ईश्वर का अभ्यास- ।
आरभ निश्चय कीजिए त्यज जग झूठी आस ॥

बूढे भिक्षुक वेष मे ना सुमिरण हो ईश ।
हेतु इन्द्रिय शिथिलता से उपजे मन रीस ॥

यदि भिक्षुक के सग म होनी है पहिचान ।
विद्वत्ता साधु गुण माया रत तू जान ॥

सत्र म अच्छा माग यह घर मे कर तप ध्यान ।
क्यो ना स्थिरता से करे सब व्यापक भगवान ॥

(दोहा)

सब से उत्तम अमर धनमिलता है कर त्याग ।
तुलसी सूर को इह कभी मिला प्रभु अनुराग ॥

(दोहा)

मान द्रव्य सब जीव नर । चाहत इस ससार ।
कम झझट मे यह मिले प्रभु गुण के आधार ॥

ईच्छा मत्र हो जीत ली नही कामना मान ।
मोक्ष साधना करत जो हिय बनी यह आन ॥

परम हस का ध्यान भी मोक्ष कामना माय ।
आत्मा जीव सुनार म ईश्वर के ढिग जाय ॥

ईश्वर के गुण गान स अपने आप मिली- ।
मान निधि की पटिका हर्षित हृदय कली ॥

अहकार युत सत्व गुण करा प्रभु गुण गान ।
इसके विन नहीं तरत है दृढ अनुभव म जान ॥

गुरुवर कोई ना मिला भ्रम म सभी समाय ।
सच्चा गुण परमन का सत्य हृदय से गाय ॥

रोटी कपडे का नहीं घाटा साच सुजान ।
विश्वम्भर सबकी भरे उदर गुहा बलवान ॥

चेत चेत नर ध्यान से बुद्धि अमन विवेक ।
जो सच्चे हिरदे जचे वही माग है नेक ॥

विश्वपति विराट् भगवान की आरती

प्रभु विराट् की कर नित सेवा-मिलत मगल मोदरु मेवा ।
गीता मे अजु न ने देखा-प्रभु विराट् का लखा जोखा ।।

वही देव दशन कलि जानो- जनता प्रभु को सदा पिछानो ।
भूधर पृथ्वी सागर भारी प्रभु विराट की शक्ति प्यारी ।।

विश्वगभ मैं थिर है चराचल अदभुत तेज ओज गगा जल ।
यही विराट् का मजु रूप है । धम सनातन स्तभ स्तूप है ।।

जो वृद्ध नभ उर्वी म छाया-हैं विराट जग विशाल काया ।
इनकी सवा सत्य हृदय कर धूप दीप नैवेद्य फूलधर ।।

सब साधन सुख सम्पत्ति दाता चतुर युगो के यही विधाता ।
नेद्य हरि नित विनय जोर कर-नत मस्तक है चरण शीश धर ।।

सोलवा विश्राम समाप्तम्

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव त्वमेव सब मम देव देव ।।



ग्रन्थकर्त्ता का सविनय परिचय

सवैया

पावन मंजुल गोत्र वशिष्ठ में विप्र जू चन्द्र किशोर कहायो ।
जात चुलेट-शाख-माध्यंदिनी-प्रवर यजुर्वेद जी मन भायो ।।

सात्विक बुद्धि निश्छल ब्राह्मण डूंगरराम तिंक सुत जायो ।
पौत्र सुधी हो रामलाल नित मनन भागवत जनम गमायो ।।

पूर्व कर्म तप फल में सुत हो ता के जन्म "वैद्य हरि" पायो ।
सत्शिक्षा पितु सदुपदेश से इश चरण में नित मन लायो ।।
जन्म भूमि श्री रतननगर है भारत बीकानेर में गायो ।

राज्याश्रय मे भज्झू आकर प्रभुवर पद में चित्त सवायो ।।
द्वि सहस्त्र दश अधिक वर्ष के नवग्रन्थारम्भ करायो ।
रुग्ण सुसेवा लेखन संचय साथ साथ में सदा सुहायो ।।
सम्वत दो हजार एकादश उपर भास्कर दिन जब आयो ।
ऋतु बसंत प्रिय मधु सुमास में प्यारी पूर्णिमा दिन छायो ।।
हरि रमामृत ईश प्रार्थना गाकर अरयानन्द समायो ।
मन वांछित सुख सम्पत्तिदाता लक्ष्मी वर्धक कलिसदा-यो ।।
सन्ध्या दिवस शान्त वेला में गाकर प्रभु पद शीश नवायो ।
मनुज जन्म का सार 'वैद्य हरि' समझ हृदय में अति हुलसायो ।।

टिप्पणी स्पष्टीकरण—लेखक के परदादा—पं किशोर चन्द्र शर्मा लेखक के दादा पं डूंगरराम शर्मा—लेखक के पूज्यचरणपिताजी पं श्री रामलालजी शास्त्री (श्री हरिहरानन्द सरस्वती श्री करपात्री जी महाराज वाराणसी द्वारा प्रदत्त भागवताचार्य उपाधि से विभूषित थे) लेखक वैद्य हरिप्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य की जन्म भूमि बीकानेर राज्यान्तगत रतन नगर है। राज्य सेवाकाल में (भज्झू) को नायत तीर्थ के पास एक ग्राम में वास करते हुए हरि गुण रचना की ओर लिखी। आत्म संतोष आनन्द-यश सभी अभीष्टों की उपलब्धि हुई। अतः पढकर आप सभी आत्मानन्द प्राप्त करते हुए तथा त्रुटियों को छोड़ते हुए अच्छे सन्मार्ग का सुझाव दें ताकि आगे के संस्करण में शुद्ध एवं वृद्धि की जाय।

शुभ भूयात्

ॐ शान्ति शान्ति शुभशान्तिर्भवतु ।

ॐ नमोभगवते वासुदेवाय

श्री हरिशरणम्

श्री राम-कृष्ण-रति-दाता–आरती माला

[उत्तरार्द्ध]

जय सीता राम जय सीता राम



जय सीता राम जय सीता राम

जय सीता राम जय सीता राम

—जय सीता राम।—

श्री करपात्री महाभाग द्वारा दी हुई भागवताचार्य उपाधि से विभूषित प रामलाल शर्मा के सुपुत्र वैद्य हरि प्रसाद शर्मा ने नई आरतीमाला की रचना की, जिसको उनके सुपुत्रो आचाय कृष्णदत्त शर्मा, रमेश चन्द्र शर्मा एम ए ने सम्पादन किया।

राम नाम मणि अमृत धारी
शिव कह गिरिजा सुनहु पियारी
राम-नाम की महिमा भारी
रटते अखिल जगत नर-नारी ॥१॥
श्री राम जय राम जय जय राम
जयति रमा पति राधेश्याम ॥
पार्वती शकर जप नित नाम
सीतापति सब पूरण काम ॥२॥

चैत सुदि १५
विक्रम स २०११

रचयिता —
वैद्य हरिप्रसाद शर्मा
रतन नगर (चूरू) राज

शुद्ध जलपान (आचमन विधि)

"माधवाय नम स्वाहा" मुख से उच्चारण करना ।
एक अंजली जल पीकर के ध्यान प्रभु का नित धरना ॥1॥

"केशवाय नम स्वाहा" द्वितीय बार वाणी बोलो ।
एक बार फिर मधुर वारि को पीओ ईश्वर यश घोलो ॥2॥

'नारायणाय नम स्वाहा' तीसरी बार निगमन धार ।
मधुर आचमन करो सुजल से शुद्ध होते हैं मन संसार ॥3॥

स्थिरता बलशक्ति की गरिमा आचमनहि से आती है ।
मस्तक हिय में पुष्टि शांति अरु शीतलता लहराती है ॥4॥

प्राणायाम से पहले करना शुद्ध आचमन मनुज महान ।
गुणगरिमा यह जल की जानो अखिलविश्व का जीवनदान ॥5॥

ईश्वर जल का महायोग यह नितनव शांति प्रदाता है ॥
आधि व्याधि को दूर भगाकर आयुष्मान बनाता है ॥6॥



प्राणायाम मन्त्र :

तीन बार जल का आचमन करके कीजिए—

ॐ भू ॐ भुव ॐ स्व ॐ मह ॐ जन
ॐ तप ॐ सत्य ॐ तत्सवितुवरण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि
धियो योन—प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योति रसोमृत
ब्रह्म भूभुव स्वरोम् ॥इति॥

विशेष—वेद का अभ्यास जिसे न हो वह केवल नाम से विष्णु ब्रह्मा शिव का ही ध्यान श्रद्धा भक्ति प्रेम पूर्वक करें ।



❋ शांतिदाता मंगल पाठ ❋

विश्वपति की मंगल स्मृति से सब सुख मंगल शांति अपार।
दिवस सुशांति रात्रि में शांति नभ पृथ्वी जल शांति हो सार॥
औषध वनस्पति में शांति अन्न वस्त्र में करुणा गार।
विश्वाङ्गण में सदा सुशांति मंगल मोद सदा विस्तार॥
जग विराट प्रभु के दर्शन में मंगल शांति हो सदा हजार।
सब देवों की सुप्रसन्नता विश्वेश्वर का प्रीति उदार॥
आनन्द मंगल सुख शान्ति धन-धान्य की वृद्धि सभी प्रकार।
'हरि' कृपा श्री जगदीश्वर की मंगलदाता तारन हार॥

संकल्प [दृढ़ निश्चय का स्मरण करना]

पूजा का संकल्प सुजल से-या-मन-से-जिसको करना।
सम्वत मास पक्ष तिथिवार की गोत्र सहित वाणी भरना॥
ईच्छा हो जिस काम की मन में ईष्ट निवेदन है करना।
दृढ़ता से होती सिद्धि 'हरि" हिय विचार अपने करना॥

षोडशोपचार पूजा विधि [सोलह तरह से पूजन]

पहले-आवाहन कर प्रभु का दूजा-कर आसन सत्कार।
तीजा-पादचरण धोकर के चौथा-अर्घ्य सुगन्धि अपार॥
पंचम-आचमनीय सुजल "हरि" छठा-सविधि स्नान सुधार।
सप्तम-सुन्दर कपड़े पहना। अष्टम-चन्दन गंध सुमार॥
नवमा-चावल फूल सुगंधित। दशवा-धूप करो हर बार॥
एकादश-में दीप समर्पण। द्वादश-में नैवद्य प्रकार॥
तेरह-में कर मधुर मंजुजल। चौदह-एला लोंग उदार॥
पन्द्रह-में कर स्वर्ण दक्षिणा। सोलह-आरती तारन हार॥

(विस्तृत षोडशोपचार शिव पूजा विधि)

विस्तृत शिव पूजा विधि हितकर सवलोक मगलकारी।
विष्णु ध्यान म हो पवित्र कर आचमनीय-मधुरवारि ॥
प्राणायाम-न्‍यास फिर प्राण प्रतिष्ठा करो महान।
पाद्य अर्घ्य आचमन सहित-श्री शकर अविकारी का ध्यान ॥
दानदय मधुपर्क आचमन सुन्दर वारि-स्नान कराय।
दूध स्नान फिर उदक स्नान न भोले शभु वर सहाय ॥
दधिलपन कर-भाव भक्ति में सुन्दर जल में साफ करो।
घृत मालिश कर प्रेम सुमन स मजुल नीर सुग ध धरो ॥
सहत चढा शिव शकर को निर्झर जल स स्नान मदा।
मधुर शकरा अग रगड कर स्वच्छोदक से-स्नान सदा ॥
पचामृत धारा का लपन-कर गगाजल से-सुस्नान।
अभिषेचन-कर शिव भूलो का वस्त्रवमन-कापीन-सुदान ॥
मधुराचमन करा पशुपति को प्रिय आभरण-सदा पहराय।
यज्ञोपवीत मलयज चन्दन-चावल फूल-सुहार चढाय।
बिल्व पत्र प्रिय है शिव शभु अर्पण दूर्वा सहित करो।
धूप दीप नवद्य आचमन-उमापति के भेंट धरो ॥
मुखशुद्धिताम्बूल-दक्षिणा-महादव के सदा चढ़े।
ऋतुज फलो-अरु फूलमाल स-सुख समद्धि सदा बढ़े ॥
कपूर्रार्त्ति कर- पुष्पाञ्जली-प्रदक्षिणा-शिव की करनी।
क्षमा प्रार्थना-पादनमन-से-हृग्वेद्य-बाधा टरनी ॥

द्वितीय विस्तृत षोडशोपचार पूजा विधि

कुछ विस्तत विधि ऋषि दवो की पूजा की कहलाती है।
पहल आवाहन कर सबको-द्वितीय प्रतिष्ठा-भाती है ॥
ध्यान लगाओ जिसकी पूजा करनी-अरु आसन सम्मान।
पाद्य-देय फिर अर्घ्य-दान कर मधुराचमन-रु सुदर स्नान ॥
पचामृत-से स्नान करा फिर ग धोदक का-स्नान कराय।
रुचिर वस्त्र-यज्ञोपवीत से अमरो का दो अग सजाय ॥
चन्दन-चावल-पुष्प-धूप-सग करो दीप-का मजु प्रकाश।
नाना विधिन नैवेद्य-आचमन सुन्दर फल-ताम्बूल-सुवास ॥
हेम रजत की-सविधि दक्षिणा-सहित मत्र अर्पन करो।

कपूर रति करो सुमंगल-ध्यान श्री प्रभुवर का धरना ॥
पाप नाशिनी कर प्रदक्षिणा-पुष्पाञ्जली दो प्रेम बढ़ाय ।
करो प्रार्थना-मधुर रट में-नमस्कार "हरि" शीश नवाय ॥

(पञ्चोपचार पूजा विधि) संक्षिप्त

पहले स्नान करा ईश्वर को-दूजे में अक्षत दीजे ।
तीजे पुष्प सहित कर धूप सुगंधित अर्पण निज कीजे ॥
चौथे में कपूर दीप धर कर नीराजन जग कीजे ।
पांचवें में नैवेद्य पदार्थ धर हरि, अर्पण से रीझे ॥

(ध्यान शक्ति सहित प्रभु का)

जिस शक्ति का शुभ वर्णन सुन्दर मन्त्र वेद शास्त्र नित गाते हैं ।
जिस माया पति के मंजु रूप सब वेद शास्त्र बतलाते हैं ॥
जिस आदि अनन्त अनामय का रूप ध्यान सभी सुर पाते हैं ।
जिस रूप मनोहर को हिरदे धर आनंदित हो जाते हैं ॥
ऐसा सुन्दर ध्यान श्री प्रभु का स्थिर चित से मन हिय में धार ।
तन मन काया सुखमय होगी सुखमय होगा सब परिवार ॥
अपने संग उपकार सभी का करना ऐसा सदा विचार ।
"भेद हरि" प्रभु शक्ति-चरण में लगजा करदें बेड़ा पार ॥

(कपूर दीप की आरती विश्वपति की)

दीप कपूर कनक दल-पीतल-ताम्र रजत में पूज्य प्रभो ।
कदलीदल सज्जित मनसा वा नीराजन स्वीकृत करो विभो ॥
मन्त्र क्रिया विधि हीन विश्वपति पूजा पूर्ण सु आरती से ।
चरण कमल 'हरि' शीश झुकाकर मधुर चित्त प्रिय आरती से ॥

(कपूर दीप की आरती विश्वेश्वरी)

दीप-कपूर कनक दल पीतल ताम्र रजत में हे माता ।
रक्त कुसुम सज्जित मनसा वा नीराजन प्रिय सर्वमाता ॥
तेरे पद में शीश झुका विधि हीन क्रिया अर्पन करता ।
वरद हस्त रख मेरे सिर पर तेरा ध्यान "हरि" धरता ॥

(प्रदक्षिणा विधि)

जो कुछ पाप किये मैंने प्रभु पूर्वज जन्म-इस-जन्म सुधार ।
तेरे शरणागत हो फेरी देता हूं स्वीकृत कर-चार ॥
प्रदक्षिणा विश्वेश्वरी ईश्वर-की-कर मन में मान हजार ॥
जो फल तीर्थों के मिलता ,'हरि'' विश्वपति पद हाथ पसार ।

पुष्पाजली (सब देवताम्रो की)

कमल कुसुम-शतदल-सवती-मरु म्रक्षत चपक मजु सभार।
विल्व पत्र तुलसीदल-मजरी-म्रजली मधुर सुगन्ध मपार।
जाति-वकुल-प्रवाल पाटला म्राम्र पुष्प करवीर सुसार॥
विश्वम्भरी विश्वेश्वर म्रपण हो प्रसन्न 'हरि' सदा उदार॥

म्रारती पश्चात् विराट ईश्वर (की प्राथना) राग सोहिनी

उस विराट-म्रनन्त ईश्वर-ईश्वरी हू प्रणाम है॥
पद सिर हजार सुमूर्ति बाहु म्रारु पूरण काम है॥1॥
नित्य शाश्वत पुरुषनाम हजार जिनके गाइये॥
युग धारन वाले प्रभु के चरण "हरि" सिर लाईये॥1॥
शिव विष्णु ब्रह्मा नाम से जो विश्वपालत हू सदा॥
उत्पत्ति पोषण नाश से ससार चालक सवदा॥
उस दीनबन्धु दु ख विनाशक पूज्य करुणाधाम को।
नितपाद वदन है मेरा "हरि" तेज पुज ललाम को॥2॥

क्षमा प्रार्थना

जो पद भ्रष्ट हीन मात्रा स म्रक्षर रहित उपचारा है॥
हो प्रसन्न सब क्षमा करो प्रभु तेरा एक सहारा है॥
मन्त्र क्रिया विधिहीन महेश्वर म्रौर जनादन क्षमा करो॥
जय विश्वेश्वर जय विश्वेश्वरी पूजन पूर्ण सदा सुधरो॥
म्रनजाने जाने मने जो भक्ति हीन करी पूजा॥
देवी देव क्षमा म्रपराध करो रू! सहाय नही दूजा॥
म्रावाहन नही जानत हू पितु म्रौर विसजन नही माता॥
पूजा म्रौर गति तेरी को हे परमेश्वर जग त्राता॥
जगदीश्वर जगदीश्वरी स्वामी म्रपने सदा कहाये है॥
नाम लेत म्रपराध सैकडो क्षमा करन को धाये है॥
जयति सुरेश्वर! जय म्रग्निनेश्वर! जयति महेश्वर! मगलकाम॥
जय म्रखिलेश्वरी! जयतिमहेश्वरी! करता हू मैं म्रब विश्राम॥

(योगक्षेम) सब के हित के लिए

ब्राह्मण हो भूमण्डल म तेजस्वी तपसी व्रतधारी॥
शम दम शौच सरलता शाति सत्य म्रोज के म्रधिकारी॥

ब्रह्मचर्य युत वेदों के ज्ञाता हों जग के हितकारी ।।
दया क्षमा प्रिय नित्य अहिंसक उपदेशक हों सदाचारी ।।

क्षत्रिय वीर महारथी जग के रक्षक हों समरांगण धीर ।।
कृषि गोरक्षक वैश्य सदा व्यवसायी हों हरो पर की पीर ।।

शूद्र सुमंगल धेनु पयस्विनी तुरग वृषभ हों अति उत्कीर ।।
गुणयुक्ता सुन्दर नारी हों जन्मे भरत सदृश सुत हीर ।।

बादल वर्षे मन ईच्छा जन औषधियां फल वाली हों ।।
धान्य प्रसविनी रत्नमयी वसुधा पर नित हरियाली हों ।।

जलधि हिमालय सीमा में हों प्रकृति नहीं मतवाली हों ।
ज्वालामुखी की ज्वाला से जग रक्षक ये वनमाली हों ।।

आनन्द उमंग सदा पृथ्वी पर मंगलमय जगदीश करो ।।
सत्य सदाचारी प्राणी की हृदयथली में नित विचरो ।।
सत बुद्ध सत्संगति देवो विनती मेरी सदा सुनरो ।।
' वद्य हरि ' शुभ योगक्षेम यह विश्वेश्वर पद जाय परो ।।

आशीर्वाद (सबके लिए)

सुखी निरामय प्राणी हों देखहु जग में जगदाधार ।।
सबका नित कल्याण दर्तिहो दुःख न किसी का करुणागार ।

मानव आश्रम कर्म सुरत हों ईश्वर पर विश्वास करे ।।
कर्मयोग का पालन करता निज पापों का नाश करे ।।

जगदीश्वरमय सबको देखे आत्मा जैसा सब संसार ।।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष का होवे प्राप्त मनु फल चार ।।

फूले फले मिले सुत सम्पति सुतदारा वैभव परिवार ।।
आशीर्वाद ' हरि ' विश्वेश्वर का नित वन्दन करो हजार ।।

आशीर्वाद (यजमान के लिए) राग सोहिनी

तेजस्वी लक्ष्मीयुत सदा हो कामना यह ईश से ।।
आरोग्यता तेरी रहे स्थिर प्रार्थना जगदीश से ।।

आयु हो सौ वर्ष की कीर्ति बढ़े संसार में ।।
धान्य धन वृद्धि सदा हो मन लगे उपकार में ।।

दूध वाली गाय पशु हों नित्य सेवा के लिए ।।
प्राप्ति हो बहु पुत्र की हिय ईश सेवा के लिए ।।

...कार भाव हो इसी पद प्रेम हरिजन का ॥
मन्द घर में लिये हो भा... हरि भक्तिरंग का ॥

आरती प्रकार या (आरती विधि)

पाँच तरह करनी है आरती पहले शास्त्र की रीति ॥
दूजे करना जल से पुनि जल बुलाकर प्रभु स्तुति ॥
... पुष्प चन्दन से शोभा देव ईश्वरी नन्दन ॥
चौथी जीरज मानस चन्दरादिक से शुद्ध भावन ॥
पंचम पूजा म... हउवन अष्टांग नह...दर... ॥
... हरि प्रणाम आरती कर ... रहि हो जोनावान ॥
नान पुष्प नम्रति लिखनी है हरि की पूजा न्यास हजार ॥
मन मुस्तार अलौकिक सुख का लिये मना हो निज मयार ॥

चतुर्दश संख्या आरती उतारने की विधि

पहले चार बार पद तन में विष्णु आरती सदा उतार ॥
नाभि दरम्यान दोहरान फिर करनी है संख्या दो बार ॥
इसमें नयन के मुख मंडल पर एक आरती फिर करना ॥
सब अंगों पर सात बार 'हरि' मन्त्र प्रभु चाव हरनी ॥
सात बार मुख मन्डल तक फिर सात बार सब अंगों पर ॥
सब संख्या है चतुर्दश करनी प्रेम आरती तन मन भर ॥
मानकार सदा सुखवान रमापति पर हो बलिहारी ॥
श्री लक्ष्मीनारायण पद न्योछावर साधु ने वारी ॥

आरती सम्बन्धी ज्ञान

(आरतियों की बत्ति संख्या)

दीपवर्तिका पाँच सात या एक प्रभु के करनी है ॥
धूप चन्दन कपूर अगर कुंकुम से सत्कृत करनी है ॥
अथवा केवल घृत पूरित हो म रुई की बत्ती बनाय ॥
नाराजन ईश्वर ईश्वरी का करना भक्ति प्रेम चढ़ाय ॥
विषमवर्ती से पूजा करनी सविधि यहाँ बतानी है ॥
महावाद्य जयघोष से यह सब के मन को भाती है ॥
शंख नगाड़ा झाँझ टालिया मधुर ध्वनि के वाद्य बजाय ॥
उच्च शब्द का घंटा झालर झाँझ मजीर सभी हर्षाय ॥

समय समय न सुलभ वाद्य स प्रभु को हम रिझाना है ॥
'वद्य हरि' सगीन कला स नृत्य मनोहर माना है ॥

आरती फल (उपसहार)

जगदीश की यह आरती जो प्रेम से गाते सदा ॥
धन धान्य सुतदारा विभव की नित्य बढ़ती सम्पदा ॥
भाव हिय मन भक्ति का हा और श्रद्धा चाहिए ॥
आरोग्यता चारा पदारथ विश्वपति स पाइय ॥
आदर सदा हा जगत म विश्वास कर के मानिए ॥
निज आत्म म नित एक घडा भर ईश को पहचानिए ॥
लाकमाता लाकपितु करते सदा कल्याण है ॥
इह लाक म सुख भोगकर परलोक पावत मान है ॥
इच्छा सभी परिपूर्ण होती धर्म गाथा गाईये ॥
जब वक्त शाति का मिले परमेश को हिय ध्याइए ॥
सुलभ जितनी वस्तु हो शुभ आरती उससे करो ॥
अथवा सुमन से सुमनसा गायन मधुरता पद धरो ॥
मानसिक या सविधि आरती नित्य आनन्द जग करे ॥
सब लोक रूप विराट प्रभु का भावना मन म धरे ॥
ह भाग्यशाली नारी नर करत प्रभु गुण गान हैं ॥
उनका सदा होता "हरिमत" सवविध कल्याण है ॥

गजानन भूत गणादि सेवित कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्
उमासुत शाक विनाश कारक नमामि विघ्नेश्वर पादपकजम्

शान्ताकार भुजगशयन पद्मनाभ सुरेश ॥
विश्वाधार गगन सदृश मेघवर्ण शुभागम् ॥
लक्ष्मीकात कमलनयन योगिभिर्ध्यानगम्य ॥
वन्दविष्णु भवभय हर सवलोकैक नाथम ॥

नीलाम्बुज श्यामल कोमलाग सीता समारोपित वामभागम ॥
पाणौ महाशायक चारु चाप नमामि राम रघुवश नाथम ॥
(रामायण)

नाम सकीतन यस्य सर्वपाप प्रणाशनम् ॥
प्रणामो दुःख शमन स्तनमामि हरि परम् ॥ (भागवत)

आत्मारामस्यकृष्णस्य ध्रुवमात्मास्ति राधिका ॥
तस्य दास्य प्रभावेण विरहोऽस्मान् न बाधते ॥
(भागवते कालिन्दी)

आरती सामग्री

संक्षिप्त पंचोपचार सामग्री—

जल, चन्दन, चावल, धूप, दीप, नैवेद्य (प्रसाद), सब देवताओं के लिए संक्षिप्त षोडशोपचार सामग्री, जल, दूर्वा, चावल, मौली (वस्त्र) चन्दन (केशर), रोली, फल, धूप, दीप, नवेद्य (मिश्री) पेडा हविष्यान्न, इलायची, लोंग, सुपारी, कपूर, दक्षिणा, संक्षिप्त षोडशोपचार सामग्री, जल, चावल, मधुरक, दूध, दही घृत, सहत खाड (चीनी), पंचामृत, गंगाजल, श्वेत वस्त्र, आक फल, यज्ञोपवीत, मलय-चन्दन, बिल्वपत्र, दूर्वा, धूप, दीप, रूई, दियासलाई, नैवेद्य, एला, लौंग, सुपारी, दक्षिणा, ऋतु फल, फूलमाला, कपूर।

यह सब देवताओं की पूजा सामग्री है। पूजा में पहले संकल्प करें जिस देवता से जो कामना इच्छा रहती है उसी का ध्यान संकल्प में करना चाहिये जिससे देवता प्रसन्न होकर उसी कामना को पूरी करते हैं जो पूरी भक्ति श्रद्धा से करता है उसे फल जल्दी मिलता है जो सामान्य करता है उसे सामान्य फल मिलता है। यह पूजा सर्वविधि कल्याणकारी एवं शुभ मंगल करने वाली है। सबको अपने-अपने ईष्टदेव की करनी चाहिए।

विष्णु के तुलसी, शिव के बिल्वपत्र, सूर्य के आक फल, देवी के लाल कनेर चढ़ाना चाहिए।

उदये ब्रह्मणो रूप मध्याह्ने तु महेश्वर ॥
अस्तमाने स्वयं विष्णु स्त्रिमूर्तिश्च दिवाकर ॥
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥
शरण्ये त्र्यम्बके गौरिनारायणी नमोस्तुते ॥

—रमापतिभवन पहला विश्राम—



जय राम

श्रीराम

जय जय राम



जय राम

श्रीराम

जय जय राम

जय राम श्रीराम जय जय राम

समर्पण

विश्वपति के चरण कमलो मे यह तुच्छ भेंट

प्रार्थना

हे विश्वम्भर ! कमला-वर ! प्रभु ! पद पंकज तव बलिहारी
अर्पण शब्द रचित सुमनों की यह माला है गिरधारी ।।

प्रेम सुगन्ध सदा सज्जित है कर लेना स्वामी स्वीकार ।
पद नतमस्तक सदा चढाऊ चिर सेवक हो करुणागार ।।

जो गावे नारीनर इसको सुख सम्पत्ति उनको देना ।
भव सागर की नौका के बन नाविक प्रभु कर तुम लेना ।।

दीन दयालु नाम आपका प्रार्थना स्वीकृत कीजे ।
"हरि" गद गद प्रेमाश्रु नयन से पादपदमतव नित भीजे ।।

-- सादर सप्रेम --

सदानत मस्तक हो प्रफुल्लित मन से

चढाता हू

स्वीकार कीजिए

सेवक पदारविन्दानुरागी

वैद्य हरिप्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य

पो० रतननगर जिला बीकानेर,

(राजस्थान)

• मिति ज्येष्ठ कृष्णा 13 बुधवार, स वि 2033

श्री परमात्मने नम

गणपति स्तुति मगलाचरणम्

रिद्धि सिद्धि सदापार्श्वे स्थितोचामर सयुते ।
पाद पद्मद्द्वन्दे गणेश विघ्ननाशकम् ॥

शिव स्तुति

शम्भु कल्याण कर्त्तार देवो दाक्षायणी युतम ।
नमामि मे मनो युज्यात् हरिपाद निषेवणे ॥

सरस्वती स्तुति

सरस्वती जगदवन्द्या बुद्धि सिद्धि प्रदायिनी ।
निर्मल कुरु मे चित्त तद हरिगुण भाजनम् ॥

राम स्तुति

सिद्धि भक्ति सदा दाता करुणारूप मोदम ।
मेघवर्ण शुभाम च हरि पादौ मतिमम ॥

हनुमत् स्तुति

विद्या बुद्धि निधान च हनुमत् अजनि सुतम् ।
कशरी प्रिय रामस्य कुरु चरणयोमति ।

मानस प्रसन्नता

कवीना गुण बद्धाना दृष्टा कीर्तिर्मयाहृदि ।
अमरत्व प्रदातार रामाकुर प्रजायते ॥

सज्जन से विनय

श्री हरि पद पुष्पेभ्य कवित्व न प्रधानता ।
मनोहारी सुगंधि च सदा गह्नतु सज्जना ॥

सूरतुलसी स्तुति

सूर तुलसी गुरु नत्वा रचामि भक्त वत्सलम् ।
राम कृष्ण गुण हृद्य सबबाधा निवारणम ॥
तुलसीश पद चित कृत्वा नित्य निरन्तरम् ।
शिव हरि गणेशच गुण गाथा प्रगीयते ॥

परमात्मा महिमा

यस्य स्मरण मात्रेण इह पर लोक मगलम् ।
प्राप्नोति नर नारीच रामाना सत्य जानतु ॥
राम कृष्ण शिव दुर्गा विनतो नित्य मानवो ।
सीता राधामपर्णा च सदा सिद्धि प्रदायिनी ॥

तम संकट के तुम भानु हो विघ्न निशा चंदा।
मम मन कमल खिला है कुमुदिनी सुखकन्दा ॥ जय

सभी देव सम्मान युक्त हैं कर पूजा थारो।
पाया सकल मनोरथ सम्पति सचारी ॥ जय

धूपदीप कपूर आरती ले आयो आगे।
अब तो करो मोद मन नूतन नवरागे ॥ जय

श्री गणपति महाराज आरती जो गावे मन ना।
"नैध हरि" सुख पावे घर सम्पति विरसे ॥ जय

आरती नव ग्रहो की

जयति जयति जय नव ग्रह देवा-सब संकट कटते तव सेवा।
जय मंगल शनि राहु केतु निजमुख सागर के सेतु ॥
जय बुध चन्द्र शुक्र गुरु राजा जय सुखकर रवि सकल समाजा।
दया तुम्हारा सब सुख फूले मन शोभित बहुरंग दुकूले ॥
सब वस्तु सब विधि अर्पणकर देते दान सदा जो मन भर।
सुख सम्पति घर उनके आती दुख दरिद्रता रोगनशाती ॥
धूप दीप नैवेद्य फलानि रजत स्वर्ण सब धान्य जलानि।
ले पुष्पाञ्जली पादप द्रुमम धरे नैध हरि रहित छद्मम ॥
जगजीवन सुख इच्छा भरती शक्ति ग्रहा की रक्षा करती।
पूजा उभयलोक सुखकारी प्रेम आरती भवभय हारी ॥

आरती पोडश मातृकाकी

षोडशमातृका मंगल रूपा सर्व अर्थ सायक है अनूपा।
लाल वस्त्र मे सदा विराजे नित्य प्रार्थना दारिद भाजे ॥
देवी रूप य सब कहलाती पूजा से आनन्द ददाति।
सावित्री गौरी मेधादिक देत सदा सुख अरु अणिमादिक ॥
शरणागत दीनो की रक्षक आर्ति दु ख अमंगल भक्षक।
जय नारायणी जय नारायनी लक्ष्मीरूप सुमंगल दायिनी ॥
धप दीप नैवेद्य आरती नित्य सुमंगल जग सचारती।
'नैध हरि" तव चरण सरोवर-हावे नित आनंदित होकर ॥

—श्री राममवन द्वितीय विश्राम

आरती वरुण देव की

जय जय वरुण देव जग पालक-सुजलामृत प्राणि सब चालक ।
लोको के जीवन कहलाते सप्त लोक वय स्थापन पाते ॥
सब सृष्टि के मजु प्राण हो-चतुर्विधा योनि के त्राण हो ।
गगा जमुना वारिघितेरे है प्रत्यक्ष रु रूप ¹ घनेरे ॥

पूजा विधिजो तुझे मनाते नर नारी मगल व पाते ।
काम विश्व के सब करते है हिय तव नाम सदा धरते है ॥
प्रलय काल मे रूप तुम्हारा होत भयकर अपरम्पारा ।
पृथ्वी नभ म व्याप्त होकर सोते हो युग कलमष धोकर ॥

जय प्राणेश अखिल जग स्वामी सदा सनातन अन्तर्यामी ।
बीज रूप जय अन्नदाता हरित वर्ण सब विश्व सजाता ॥
धूप दीप कपूर आरती फल नवैद्य अखिल जग तारती ।
रोम रोम म रमत, हरि है जय जीवशध्यान नित धरि है ॥

सरस्वती वदना

जय जय शारद बुद्धि विधाता जग की तुम महतारी हो ॥
सुमतिदायिनी हस वाहिनी जन रक्षक कर तारी हो ॥
शुल्क वस्त्र धारण करके तुम आद्य जगत की स्रष्टा हो ।
वीराधारिणी कुमति विदारिणी सब शास्त्रन की द्रष्टा हो ॥

अभयदान दे हरति अघ को करती हो जडता को दूर ॥
विमल कृपा तव जा पर होती वह प्राणी सब गुणभरपूर ॥
हाथ स्फटिक पद्मासन राजति ऋषि मुनि देव मनाते है ।
ब्रह्मध्यान मे तत्पर हो वे निशिदिन तव गुण गाते है ॥

उर मे ध्यान प्रेम से तेरा उन्हे अमरता मिलती है ।
मन उपवन मे बुद्धि मजरी हरित नाल हो हिलती है ॥
ब्रह्माच्युत शकर भी तेरा निशिदिन वन्दन करते हैं ।
हरि कुटुम्बगन सुमनाजलिने पाद पदम मे धरते है ॥

आरती श्री सरस्वती जी

ॐ जय शारद जननी ।
कुमति निशा की नाशक हो तुम दिव्य मनी । टर '14
रुद्र पियारी सब सुख कारी रूप धरा गोरी ॥
सुर नर पाश क्लेश की काट दई डोरी ॥—

ॐ

॥ श्री गणेशायनम ॥

श्री राम-कृष्ण-रति-दाता आरती माला

मंगलाचरणम्

गणपति शारद शिव शिवा रमाकांत लोमश ।
रोम रोम हिय में बसो मंगल रूप सुरेश ॥
गुरुवर तुलसी सूर को बारम्बार प्रणाम ।
अनुकम्पा जिनकी रचूं हरि गुण सुलभ ललाम ॥
विश्वेश्वर के रूप की विविध कल्पना धार ।
विश्वेश्वरि गुण संग में गूंथी नाम पसार ॥
राम-कृष्ण-रति पूरिता भाषा स्तुति बनाय ।
आरती नीराजन कहो हिय नित्य हर्षाय ॥
छंदज्ञान की उच्चता-ईश्वर का गुण जान ।
रहित ज्ञान नाहीं कही प्रभु गुण वश कविमान ॥
विश्वपति गुण जानकर पूर्ण मानिय आज ।
शब्द सुमन है भक्ति के ईश्वर अर्पण काज ॥
विनय सहित पुष्पाञ्जली ग्रहण कीजिए ईश ।
विकसित टूटे शब्द के फूल यही जगदीश ॥

श्री यजुर्वेदोक्त कर्पूरार्ति मंत्र ॐ इदं ठ० हविः (० प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीरं ठ० सवगणं १७ स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि—

लोकसन्यभयसनि अग्निः (० प्रजाम्बहुलां म्मे करोत्वन्नम्पयो रेतो ऽ—अस्मासु धत्त ॥ ऋषि पूजन प्रकरणे नित्य प्रयोग मालाया लिखितम्

पुराणे

सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ।
सबाह्याभ्यन्तर ज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यताम ॥
घृतवर्ति समायुक्तं महातेजोमयोद्भवम् ।
अज्ञानमंधकारञ्च निवारयतु मे सदा ॥

श्रीगणपति प्रार्थना

जय जय गिरिजा सुतलम्बोदर गणपति विघ्न विनाशन हारे ।
शीश काट शंकर ने जोड़ा गजमुख का तब भये सुखारे ॥

परम कृपा बैकुंठाधिप की हुए पूज्य जग कारज सारे ।
ऋद्धि सिद्धि खड़ी चमर डोलावतीं कर त्रिशूल मुद मोदक धारे ॥
शंकर सुत सब जगवंदन है मूषक वाहन परम पियारे ।
एक दंत लम्बोदर सोहे चंद्रभाल कर परशु सुधारे ॥
मंगल दाता–बुद्धि विधाता–महाभारत के हुए लिखारे ।
विद्यादाता–सुमतिनदाता–संकटत्राता–सुख दु:ख जारे ॥
कलियुग सिद्धि सबहिं के दाता सुख सम्पत्ति जग के रखवारे ।
"वैद्य हरि" की सुनहु प्रार्थना निशिदिन करत खड़ा तव द्वारे ॥

गणेश स्तुति व आरती

गज मुख विघ्न हरण तुम देवा–मुद मन करे तुम्हारी सेवा ।
उनके कारज पंकज फूले–तुमहिं दिवाकर पा अनुकूले ॥
भेंट चढ़ावे मोदक मीठे–उनके सफल मनोरथ दीठे ।
सिद्धि सिद्धि खड़ी चमर डोलाती–भक्त हृदय नित नह उपजाती ॥
कर मोदक परशु तिरशूला–दास शरण–लख–संकट भूला ।
मंगल कौमुदी के तुम चन्दा–मन अलिगनके तुम मकरंदा ॥
कलियुग सब सुख देन हारे–गिरिजाशंकर विष्णु पियारे ।
कर जोड़े कपूर आरती–करे वैद्य हरि मधुर भारती ॥

श्री गणपति जी की आरती

ॐ जय गणपति देवा ।
कटत दारिद संकट करते जो सेवा ॥ ॐ जय ॥

हाथ विराजे फरसा और मोदक शोभा ।
मम मन मधुकर बनकर दर्शन को लोभा ॥ जय

एक दंत–गज मूंड–भाल में बाल चन्द्र चमके ।
रिद्धि सिद्धि चमर डोला वें मुक्तामणि दमके ॥ जय

सुन्दर ग्रीव कंठ में शोभित जय माला ।
दूर करत भक्तन के संकट तत्काला ॥ जय

लम्बोदर मूषक वाहन है चालें मन्दगति ।
गाने को गुण हुलसी मम मन अरु सुमति ॥ जय

गौरी शंकर सदा पियारे किये काज जनके ।
प्रथम मनावे तुमको विघ्न नहीं जनके ॥ जय

मंगलदाता सब प्राणी के तुम हो बुद्धिपति ।
विद्या के रत्नाकर हो तव चरण रति ॥ जय

"वद्य हरि पद पाइ गा रति
हिय नरनारी दिव्य छटा सी ॥ जय जय

शिवजी की आरती

ॐ जय शिव जगत पिता ।
गौरीवर गगाधर प्रिय पति दक्षसुता ॥
शभु ईश पशुपति शिव शूली शकर ईश्वर नाम ।
महादव मृत्यु जय हर पूरण काम ॥ जय
वामदव भव भीम त्रिलोचन शेखर चन्द्र सटा ॥
भाग्यवान तुम जाना गाव नित्य मुदा ॥ जय
राम भक्ति परिपूरण सरोवर रहन नित्य प्रति ।
अमल विवेवान द स्मर नर धार धति ॥ जय
पचानन बठे वपभानस प्रिय गिरिजा धीशा ॥
सूत्र चतुदश निकस डमरु, वागीशा ॥
भाल चन्द्र रिपु मकरध्वज के हस्त महेश त्रिशूल ॥
पाप पु ज तम पूरण कानन कर निमू ल ॥
ले घनसार ज्वलित नीराजन धूप दीप के सग ॥
मुद हो शीश चढाव कनक अय फल भग ॥
शक्तिमान हो सब सुखदाता वसन वाघवर का ॥
भूषण अहिगण मडल रूप दिगबर का ॥
रत्नाकर मथन वेला म सुरहित कर विषपान ॥
हालाहल से रक्षित है त्रलोकी की महान ॥
नीलकठ विषभक्षण काल महामोद मन धार ॥
हृदयकमल म प्रभु का किया ध्यान साचार ॥
जगत पिता कामारि ईश की आरती हरि गाई ॥
मानस सुमन चरण मे बलिहारी जाई ॥

विश्वनाथ शकर की आरती

शीशजटा नित सुरसरि बहती विश्वनाथजे अविनाशी ॥
मुक्ति परम पद देत प्राणी बसत रहत जो नित काशी ॥
वामभाग श्रीगिरिजा बठी दक्षिण षडमुख और गणेश ॥
वाहन नन्दी सिंह मोर है मूषक फणीधर गले महेश ॥
हाथ त्रिशूल और डमरू है भाल चन्द्रमा राज रहे ॥
तीन नयन भृकुटी सुतेज स प्रभा रवि शशि लाज रहे ॥

कामारि रति वर प्रदाता मुण्डमाल हितकारी ॥
तारकासुर से अमर सुखा को शंकर भव भयहारी ॥

रामभक्ति लवलीन सदाशिव सीता वेष सती त्यागे ॥
दक्षयज्ञ योगाग्नि भस्म हो उमा हिमालय अनुरागी ॥

कठिन तपस्या करी अपरना हित अपने शिव मनमें जान ॥
अवढरदानी आशुतोष प्रभु किया उमा का शुभ कल्यान ॥

वयावर घर शम्भु उमापति अवगुन मेरे क्षमा करो ॥
सुख सम्पत्ति धन मगल दाता पदरज मस्तक सदा वरा ॥

निज कैलाश वास सौम्यानन दर्शन को नितचित चाहा ॥
मन मधुकर मरकन्द पानकर शिव गुन गाथा अवगाहा ॥

सुर किन्नर गधर्व अप्सरा मोद भरे स्वच्छन्द निवास ॥
हरित भूमि नव कुसुम निर्झरा करते गौरी शंकर रास ॥

भाग धतूरा हालाहल पी अमृत रक्षा मन्थनकाल ॥
नीलकठ हो सदा महेश्वर करो कृपा जी दीनदयाल ॥

धपदीप मलयाचल चन्दन धिम नैवेद्य कपूर सफूल ॥
वँद्य हरि शंकर की सेवा त्रिविध ताप हरती सब शल ॥

शिव प्रार्थना (तज राम चन्द्र कृपालु भजुमन)

शिव दयाल उमापति कर याद मन नित सादरम ।
पशुपति शंकर जगत क सुख निधान रु आगरम् ।

चन्द्रशेखर शम्भु शूला ध्यान नित हृदये धरम् ॥
शीश गगाधर महेश्वर भक्तजन अभयं [illegible] ।

त्रय नेत्र भृकुटी पचसर कर भस्म रतिशुभ [illegible] ॥
ऋषि मडली स्तुत हास्य गिरिजा [illegible] ।

मस्ली विबुधो की धरती ध्यान [illegible]
अरि तारकासुर नाश हित गुन [illegible]

चन्द्रभाल त्रिशूल धारी ईर्ष्यामिर [illegible] ॥
नाल फणी कर डमरु, शोभित [illegible]

राम भक्ति प्रदायक [illegible]
गोकुल श्री कृष्ण [illegible]
ध्यान धरु कलाशपति [illegible]
सम्पति सुखद [illegible]

सर्व बाधा व्याधि नाशक मन धी हिय गा लवरम।
रट मोक्षद मुखरानन ' हर काम क्रोध निाटरन् ॥
कलिकलष दु ग भवभर घन दीनता रि हरम्।
निज चाप मुक्ता सघुरी टरिराम जनगुना भयम् ॥
"भैव हरि ' हिय जन पटन वनदु निज छवि गुगकरम्।
मन हरा बन पद नमन मुता निरय तह भय ु ग हरम् ॥

(आरती भरव को) दिनाप

जय भरव सब सिद्धि प्रदाता भक्तजना क दु ख छुटाना।
तीन नयन अष्टादश भुज हैं नाशक त्रिविध ताप ज्वर पज है ॥
शुभ्र वण पच्चानन सोहा सिद्धि सुवश म सुर नर मोहा।
सुन्दर भेषज मग आप है साधक नित पद करत जाप है ॥
गान मुमुद्राशस्त्र विराजे दमन से नित दारिद भाज।
अमत विष सोहत डमरु मसि मस्त र पर शोभित द्वितीया शशी ॥
मूलधारा षट्चाङ्ग हाथ म भृकुटि तेज सोहत सुमाय म।
गदावह्नि माराग्य सुभाला श्री भरव काल हु क काला ॥
सुख सम्पति मन वाञ्छित दन "भैव हरि ' सक्ट हर लेत।
धूप दीप नैवेद्य आरती ल पुष्पाञ्जली गावो आरती ॥
--शिव पार्वती भवन तृतीय विभा।

उमा शकरायनम

आरती पार्वती शकर की

जयति जयति जय पार्वती शकर।
शशिशिर तीन नयन डमरु कर ॥ (टर)

सुग सौभाग्य ददाति गोरी।
सती हिम मना परम किशोरी ॥
नन्दी वाहन शकर घोरी।
मगल दाता नित त्रिशूल घर ॥ जयति

मस्तक विन्दु इन्दु सम देहा।
गिरिजा करती शिव पद नेहा ॥
कैलाशी वासी नित गेहा।
योग समाधि अनग दहन कर ॥ जयति

उमा जगत जननी कहलावे।
महादेव जग पितु सब गावे ॥
गल अहिगंगा शीश सजावे।
छवि अर्धांग सुता प्रिय भूधर ॥ जयति

सिंहवाहिनी पूज्य भवानी।
हरति रुजा कलि कल्मष प्रानी ॥
सुख सम्पत्ति दाता शिव दानी।
सुर रक्षा कंत कंठ में विष धर ॥ जयति

धूप दीप कर्पूर आरती।
विजयाफल नैवेद्य भारती ॥
'हरि' उमा शिव नाम-गा-रति।
नित पद वन्दन करता किंकर ॥ जयति

गौरी स्तुति

जय गिरिजा जय सती भवानी।
मेटहु क्लेश भक्त जिय जानी ॥

जय शंकर मानस मरालिनी।
दक्ष यज्ञ वनी महा करालिनी ॥

गणपति षडानन हु प्रिय माता।
शिव सरोज पद मनहि सुहाता ॥

वाम अंग शिव सदा सुहाती।
भव-मन अलि मकरन्द सजाती ॥

सिंह वाहिनी आनंद दाता।
सुमति मंजरी सदा विभाता ॥

शैल सुता मैना की प्यारी।
त्रिविध ताप भय नाशनहारी ॥

मोह ममता वन दहन कृशानु।
हिय पंकज सुरञ्जित तुम भानु ॥

शिवहित महा तपस्या कीन्ही।
कामजार अर्धांग में लीन्ही ॥

अवढर दानी शिव दिनेश की।
वन पंकज कली खिली सुरेश की ॥

"वैद्य हरि" तव चरण कमल मे ।
अलिवन मुद मकरन्द विमल म ।।

(आरती गौरी माता की)

ऊ जय गौरी माता ।
सति शिरामणि देती नारी अहिवाता ।। टेर

चत्र मास म गौरी पूजा करतीं सब कन्या ।
स्यानी अयानी प्रेम मे कर होती धन्या ।। जय

सीता पूजन चली राम-वर इप्सित को पाने ।
मन वांछित वर दीन्हा प्रेम को पहिचाने ।। जय

अचल सुहाग तेरी सेवा मे जग नारी पाया ।
सब सुख सद्दर दती और कंचन काया ।। जय

शिव प्यारी गजमुख षडमुख की अरु जग की माता ।
सफल मनोरथ सुर की रक्षक मदु गाता ।। जय

मना गिरिवर राज सुता तुम नारद की शिक्षा
कठिन तपस्या पाई शिव वर की भिक्षा ।। जय

ध्यान मग्न शिव शंकर के जब छोड़ा जल पानी ।
गिरिजा हुई अपरना सुर ऋषि सब जानी ।।

तुम शिव मुख मुद चन्द्र चकोरी पति इच्छा से प्रान ।
दक्षपिता घर छोडे मख मे पति अपमान ।।

मम हृत्कमल खिलावन हारी हो पावन धारा ।
गति रति तव पद मेरी नित इस ससारा ।।

धूप दीप कपूर आरती वेला नित गावे ।
शुभ सुहाग धन सम्पति नारी प्रेम पावे ।।

सौभाग्यश्वरी पार्वती की आरती "हरि' गाई ।
सुमन माल हिय प्रेम की डालो गल माई ।।

(आरती मगला गौरी को)

जयति मगला गौरी माता ।
सुख सौभाग्य पुत्र की दाता ।।

नारी तव पद पूजा पावें ।
उभय लोक पति सुख हरषाव ।।

जयति शिवा जय गौरी भवानी।
जय शिव शकर की प्रिय रानी॥

तेरी दया सिया वर पाया।
प्रिय मन रामचन्द्र हिय भाया।

नारी जगत की तुमही कल्पतरु।
माता भव बाधा मेरी हरु॥

मैं मागती जननी सुन्दर वर।
तव पद भक्ति सुहाग सदा कर॥

धूप दीप कपूर व रोरी।
फल नवैद्य सप्रेम भरोरी॥
करू आरती "हरि" हर गौरी।
जय हिम मना प्राण किशारी॥

(आरती विष्णु की)

ऊ जय विश्वेश हरि।
कलिमल सकट हारी नरतन रूप धरी।

शान्ताकृति प्रभु पदम नाभ हैं रहत कमला सग।
स्वामी सुरेश्वर पाढे शय्या कृष्ण भुजग॥ जय

लोको के आधार-गगन-से-मेघवर्ण शुभ अग।
लक्ष्मी कान्त कमल से-नयन-योगी मन रग॥ जय

भव भय हारी पाप तमारि दाता सुख आनन्द।
सब लोको के स्वामी वन्दी मन मुद चन्द॥ जय

मरुत् रुद्र वरुणेन्द्र ब्रह्मानित दिव्यस्तवन कारी।
साम वेदी वेदो स गाते असुरारि॥ जय

प्रभुरति मन स ध्यान मग्न हैं योगीराज सारे।
देखत अन्तन पाव सब सुरगण हारे॥ जय

करुणा सागर सब सुख आगर धन सम्पति दाता।
मन! रख शीश चरण मे है जग के त्राता॥

सनकादिक ध्रुव शेष शारदा तव गुण नित गाते।
नारी नर बडभागी गा नित हरषाते॥

धप दीप कपूर आरती ले नवैद्य खडा।
मम मन चातक बनके तव पद स्वाती अडा।

रिद्धि सिद्धि आरोग्य रमा-सुत-दारा-मोक्ष सदा।
"हरि" दयालु हो देते पूर्णानन्द मुदा ॥ जय

(विश्वपति विराट् प्रभु की आरती)

प्रभु विराट् कर नित सेवा।
मिलत मगल मोदरु मेवा ॥
गीतो म अर्जुन ने देखा।
प्रभु विराट् का लेखा जोखा ॥

वही देव दर्शन कलि जानो।
जनता प्रभु को सदा पिछानो ॥
भूधर पृथ्वी सागर भारी।
प्रभु बिराट् की शक्ति न्यारी ॥

विश्वगभ म थिर जे चला चल।
अदभुत तेज श्रोज गगाजल ॥
यही विराट् का मञ्जु रूप है।
धम सनातन सुद्ध स्तूप है ॥

जो कुछ नभ उर्वी म छाया।
है विराट् जग विशाल काया ॥
इनकी सेवा सत्य हृदय कर।
धूप दीप नवेदय फूल धर ॥

सब साधन सुख सम्पत्ति दाता।
चतुर युगो के यही विधाता ॥
वैद्य हरि नित विनय जोर कर।
नत मस्तक हैं चरण शीश धर ॥

(आरती सब देवताओं की राग सोहनी)

गणपति-शारद शिवा शिव चरण नित मम वन्दना।
लक्ष्मी नारायण दिवाकर वद पद रज वन्दना ॥
श्रीमहाकाली सरस्वती हरिप्रिया श्री गार्ईय।
दुर्गा अम्बा गगा जमुना राधिका सिय ध्या२य ॥
रुक्मणि गोमात गौरी मगला तुलसी सदा।
सत्यनारायण सहित सुम कारणी अरु हृपदा ॥

बद्रीनारायण नवगृह वरुण भैरव गान से।
धन्वन्तरि रु दशावतार की प्राथना करु मान से॥
चौवीस रुप प्रभुसनातन आदि देव नमोनम।
राम कृष्ण प्रभु पवन सुत पाद पद्म नमोनम॥
श्री राम सीता कृष्ण राधा विश्व प्राणाधार है।
कर प्रार्थना 'हरि' नमन गायन नृत्य सब सुख सार है॥

आरती लक्ष्मीकात की

आरती लक्ष्मीकान की कीज। टेर
तन मन धन सब अपरण कीजे॥
गदा पद्म शुभ शम्ब धरे है। चक्र मुकुट कुडल निखरे है।
पदरज कुसुम कमल बिखरे है-गदगद कठ नयन हो भीज॥ आ

वाम अग शोभित कमला है।
रुप सुशोभित ज्यो चपला है॥
गुणगरिमा प्रभुकी अमला है।
ईश जिवाये नित ही जीजै॥

गावत सुर नर अरु सनकादिक करतल सिद्धि सभी अणिमादिक।
शेप मुनि शिव मन महिमादिक अब पद रज का अमृत पीज॥ आ

नारदेन्द्र ध्रुव तुलसी गावे।
सूर सुधासम सुयश सुनावे॥
मीरा माधुरी भाझ बजावे।
सुन्दर अब भक्ति वर दीजै॥

भृगुपद हृदय गने बिन माला-रूप विराट कालहू काला।
कौशल्या देवकी के लाला-देख नयन भर, अब नामी ज॥ आ

धूप दीप कपूर आरती।
लेकर 'हरि' गाई सुआरती॥
मति हिय मन विच प्रेम आरती।
लख सुन प्रभुवर सदा पसीज॥ आ

प्रभु की मगल आरती

मगल आरती नित्य उतार । टर
मगल मुकुट प्रभु मुख मगल मगल जग क सर्वाधार।
मगर मस्तक मगल भृकुटि मगल नयन सदा हरवार ।।

मगल श्रवण नासिका मगल मगल गण्ड कपोल प्रकार।
मगर होठ चिबुर मगल है मगल भूषण सब सुख सार ।।

मगल ग्रीवा मगल माला मगल हाथ बने दातार।
मगल लकुटि मगल दुपटी मगल मुरली राग हजार ।।

मगल नख शिख मगल नूपुर नाचत मगल सदा उदार।
मगल श्याम पीत पट माल मगल दृष्टि प्रेम अपार ।।

मगल विष्णु चतुभु ज मगल मगलामय है जगदाधार।
मगल रूप विराट प्रभु का नगल की जाभ बौछार ।।
मगल शख वमन फल मगल धूप-दीप नवद्य रु हार ।
मगलमय प्रभु की आरती 'हरि' सब सुखदाता मगलचार ।।

आरती श्री सत्यनारायणजी की

ॐ जय लक्ष्मी स्वामी ।
सत्यनारायण देवा तुम अन्तर्यामी ।। टेर

लोकत्रास जन दु ख दीनता नारद मुनि जानी।
विष्णु लोक विधि पूछत मन म अनुमानी ।। जय

रमाकान्त श्री पति नारद को विधि सकट हारी।
लगे बतावन व्रत स जग सुख सचारी ।। जय

सत व्रत विधि आ मृत्यु लोक म नारद समझाई ।
धन सम्पति करन से सतानन्द पाई ।। जय

सतानन्द सुख सुन यह गाथा चन्द्रचूड रु निसाद।
लक्ष्मीकान्त के व्रत स पाया धन प्रासाद ।। जय

चन्द्रचूड स सुनी वश्यवर पाई धन सतान।
सत्य सुव्रत नही कीन्हा पाया कष्ट महान ।। जय

कलावती व्रत मुदित हुए प्रभु वश्य क्षमा का दान।
फिर मारग म परखा कलावती भगवान ।। जय
वश्य प्रतिज्ञा सत्यदव की पूजा हित ठानी।
ले परसाद कलावती पाया पति मानी ।। जय

शंख चक्र गदा पद्मधारी की करो प्रेम पूजा।
धूप दीप मेवा फल तुलसीदल दूजा ॥ जय
श्री सत्यनारायण प्रभाव से बैठे धाय सन्तान।
धन सौभाग्य विजय भी, मिटे दुःख बलवान ॥ जय
सुख सम्पत्ति दाता प्रभुवर की आरती नित गावे।
बद्य हरि घर ताके नित मंगल छावे ॥ जय

आरती दशावतार की

आरती सुख कर दश-अवतार की क्षय कारिणी वर्धित भू भार की। टर

प्रलयकाल धर मीन सदेहा।
वदोपधि रक्षित निज गेहा॥
अन्न सप्तऋषि नैय्या नेहा।
रक्षा की जग सब प्रकार की॥ आरती

कच्छपदेह पीठ धर धरती।
आपत म जब वसुधा परती॥
लोकेश्वर पद वन्दन करती।
करत वृद्धि तव सदा चार की॥ आरती

हिरण्याक्ष जब धरा रसातल।
ले मल-कीच गया जब खल-बल॥
सुअर रूप धर भू-दशन स्थल।
नाश किया निज शक्ति नार की॥ आरती

हिरण्यकशिपु हरिनाम विरोधी।
अत्याचारी पापी क्रोधी॥
नर हरि रूप निजाङ्कऽवरोधि।
रक्खी टेक प्रहलादकुमार की॥ आरती

वामन रूप लक्ष्मी सुर देकर।
छल वलि पृथ्वी तीन पग लेकर॥
डूबत सुर नर नैय्या खेकर।
पद रज पूजो विश्वाधार की॥ आरती

क्रोधी भृगुपति रूप अपारा।
बढा पाप क्षत्रिय कुल मारा॥
भव दुःख मेट सुधर्म प्रचारा।
तेज पुंज शोभा अपार की॥ आरती

रघुपति रूप हरा भू भारा।
कुंभ करण रावण को मारा॥
धर्म थाप सुर नर उद्धारा।
जय नित बोलो भय्या चार की॥ आरती

यज्ञ विधि वेदा की लख कर।
द्रवित हृदय पशुवध श्र सुनकर॥
बुद्ध रूप धर हिंसा हर कर।
जय हो बुद्ध श्री प्रभु उदार की॥ आरती

उपर भूमि म हल चालक।
अ नौषधि रस के सचालक॥
जग बलराम रूप सब पालक।
जय जय हो जीवन दातार की॥ आरती

कल्की रूप म म्लेच्छ सहारे।
सुर नर ऋषि मुनि जग रखवारे॥
अधम हर कर धम सकारे।
जय केशव दश विध साकार की॥ आरती

धूप दीप कपूर आरती।
शस्त्र वसन नैवेद्य सदा-रति॥
वैद्य हरि मन सुख सचारती।
मगल सम्पति सुखाकार की॥ आरतो

आरती ब्रह्मा विष्णु महेश की

ॐ जयति ब्रह्मा विष्णु महेश।
टारत जीव चराचर क्लेश॥ टर

प्रथम श्री विष्णु क मन स।
जगत सृष्टि रचने निकस॥
नाभि क कमल माहि विकस।
विधाता चतुरानन वदेश॥ जयति

विराजे हस कमल आसन।
वद रच किया जगत शासन॥
पितामह रक्तवर्ण भव जन।
मानसृष्टि रचना की, आदेश॥ जयति

सुदर्शन चक्र गदा धारी।
चतुर्भुज पद्महाथ चारी॥
सृष्टिका पोषणकर भारी।
भरत सब लोकन नित लोकेश॥ जयति

पियारी श्याम मेघसी देह।
करत सब प्राणी सदा सनेह॥
बसते घट घट वासी गेह।
विनत नत मस्तक सतत सुरेश॥ जयति

पति है कमला के सुंदर।
नयन मुख कमल सदा प्रियवर॥
ध्यान धरे योगी मन मंदिर।
तमोहर भव भय व्याधि दिनेश। जयति

मुकुट शिर कुंडल मन मोहा।
कटि मृदु पीताम्बर सोहा॥
विहग पति गरुड़हिं अवरोहा।
वक्ष धर कौस्तुभ हार सुदेश॥ जयति

सदा है शेष शायी प्रभुवर।
नाथ सब लोकों के ईश्वर॥
विश्व के रक्षक जगदीश्वर।
शीश से अभिवादन है दिनेश॥ जयति

बढ़त जब पृथ्वी भार सारा।
करत है दुष्टन संहारा॥
महेश्वर गुण अपरम्पारा।
महा कालेश्वर है प्रलयेश॥ जयति

है जटा नयन शिव शांत।
करत नित ध्यान प्रभु वेदांत॥
भस्म तन रमते गौरी कांत।
गले के भूषण फणी विशेष॥ जयति

हाथ में डमरु और त्रिशूल।
नयन है तीन दुःख निर्मूल॥
वसन बाघंबर दिशा दुकूल।
नंदीगण वाहन पूज्य महेश। जयति

करनिधर धूप दीप भाई।
फलनि पटरस नैंवध चढ़ाई॥
स्तुति 'हरि वैद्य' नह गाई।
ले नुगमद मनय त्रिवश॥ जयति

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता ।
दु ख दरिद्रता नाशक कलि म जो गाता ॥ टेर
विष्णु प्रिया तुम सदा सयानी नाम तेरा कमला।
पद्मालया श्री इन्दिरा हरि प्रिया चचला॥ जय
नोक मातु तुम सकट हारिणी देती मोक्ष सदा।
मा कहने से आती रिद्धि सिद्धि सुखदा ॥ जय
सुन्दर केश सिन्दर माग म शोभित मृगमद सग।
सुर नर मुनिजन मन है चरणकमल म भृङ्ग॥ जय
शीश मुकुट कु डल कानन है नासा म हीरा।
माल-गले कर ककण बाजू बन्द चीरा॥ जयति
पद्मासन स्थित पद्म हाथ म कमल नयन चौडे।
दिव्य रूप मणि सोह दशन चिन दौडे ॥ जयति
स्नापित हम कु भ अरु वाहिनी सिंह पीठ साहे।
रूप चतु भु ज श्यामा सब नर मन माहे॥ जय
कलि म देख प्रभाव आपका चरण शरण आया।
सिर कर धर मम आगण वठो कर दाया ॥ जय
सुर नर मुनि जन इस कलियुग म सब हैं वश तेरे।
मगल दात्री धात्री नित तुम को टेर॥ जय
सुख कचन की हो तुम राशि माया पति प्यारी।
मोहिनी बन असुरो की सब विपदा टारी ॥ जय
धूप दीप कपू र अगर स प्रेम हिये गाता।
सकल मनोरथ सिद्धि सुख सम्पति पाता ॥ जय
सु दर आरती मातु लक्ष्मी की प्रेम वाणी बोले।
वद्य हरि घर कमला धन पट नित खोले॥ जय

श्री लक्ष्मी स्तुति

विष्णु प्रिया जय लक्ष्मी माता-मगल खानि सब सुखदाता।
तव पद पङ्कज कुसुम खिले हैं-देख मधुप मन अ ग हिले है॥

लक्ष्मी पद्मा कमला नामा–लेहिं लोक पावहिं विश्रामा।
लोक मातु इन्दिरा मा रानी–सब सुख शोभा तोहि बखानी॥
चित्त मराल की हो तुम मोती–कलियुग सबकी जीवन ज्योति।
शख चक्र गल माल विराजे–गदा प लख दारिद भाजे॥
धूप दीप नैवेद्य आरती–गुण गाती रह सदा भारती।
शोभित हार हिय मद हसनि–ओढनि रेशम पट मृदु ग्र सनि॥
मुकुट शीश कुडल कानन मे–अरुण सुहाग बिन्दु भालन म।
कटि किंकणी कर ककण सोहा– केयूर नूपुर शिख नख मोहा॥
'वद्य हरि" तव ध्यान मगन है–चरण कमल म सदा लगन है।

श्री महाकाली की आरती

जय जय जय अम्बे विश्वश्वरी।
शारद लक्ष्मी काली रूप धरी॥
पाप पुज मधु कैटभ घातिनी।
देव सुखी–महिषासुर शातिनी॥

शुभनिशुभ शर्वरी हारिणी।
बनहि चन्द्रिका सुर दुख टारिणी॥
नाघ रूप आगे सब देवा।
विधि हरि हर कर जोरे सेवा॥

काल जनित बाधा जब होती।
तदनु रूप अवतरहि खोती॥
रिद्धि सिद्धि कौमदी प्रकाशी।
हा रकश करहि सुखराशी॥

मन वाछित पकज को पुष्पित।
करति दिवाकर हुलन सुस्मित॥
भव दुख मशक उडावन हारी।
हरि विरची हर की नित प्यारी॥

मातु शरण पद सरोज दीजै।
जननी कृपा कुपुत्र हु कीजै॥
भाग आरती लिय उपस्थित।
खड़ा "वैद्य हरि" नम्र सुमस्थित॥

श्री लक्ष्मी माता भवन पचम विश्राम

ममंमन पकज विकसित भानु भुज विशाल शोभित है जानु ।
शीश जटा मुनि वेष वनाय–कोटि काम रति छवि लजाय ॥
जय दशरथ के प्राण पियारे–तव वियोग सुरलोक सिधारे ।
मम मन मधुप चरण कमलनि मे–नित मुद जिमि शुक मन फलननि मे ।
होहु प्रेम मम पाद पदम मे–वासनिरन्तर छवि छदम मे ।
मानस ले हरि बैद्य आरती–गाव नित भव व्याधि टारती ॥

आरती चारो भय्या राम लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न की

राम लखन की प्रेम आरती–भरत शत्रुहन की सदारति ।
मञ्जुल रूप सुधाकर सम है–पावन चरण सदा नत हम हैं ॥
राम जगत के सदाधार है ।
करत सुरक्षा बल अपार है ॥
लखन सुलक्षण जग रख वारे ।
धीर वीर जति नित सुख कारे ॥
विश्वभरण से भरत राज हैं–करत पोषण सजग आज हैं ।
सियराम पद प्रेम अपारा–राज्य छोडकर सुयश प्रचारा ॥
धम धुरधर नीति निपुन हैं ।
रामचरण अरपन तन मन हैं ॥
बुद्धि विवक नान के सागर ।
भ्रातु प्रेम के परम उजागर ॥
वन में गये मातु सब लेकर—कैकयी अपयश कुछ धोकर ।
थाप पादु का शील निबाहा—रामाना मे नित अवगाहा ॥
पूज्य भरत के चरण कमल मे ।
नत मस्तक हू नेह विमल मे ॥
नाम शत्रुघ्न अरिदल नाशा ।
सदा होत धर मगल आशा ॥
धूप दीप नवैद्य चढाऊ—करू आरती नितगुण गाऊ ।
वैद्य हरि के राजत मन मे—सुत अवधेश हृदय मुख्तन मे ॥
—श्री सीताराम भवन छठा विश्राम

आरती सियाराम की

आरती कीजे सियाराम की ।
मुनिमन रंजन शोभा धामकी ॥ टेर

मणिमुकुट सिर तिलक लगाये ।
सीतापति सबके मन भाये ॥
हीरक कुंडल कानन छाये ।
लाजे शोभा कोटि काम की ॥ आरती-

शीश जटनि भ्रू नयन विशाला ।
समराङ गण काल हू के काला ॥
दशरथ कौशल्या के लाला ।
प्रेम से माला जपो नाम की ॥ आरती-

हास्य वदन मृदु ओठ कपोला
तडित कांति पीताम्बर चोला ॥
करत भक्तजन मन कल्लोला ।
गगन वर्ण शोभा है श्याम की ॥ आरती-

हाथ धनुष गलमाल विराजे ।
सुन्दर कंठ कटी हरि लाजे ॥
देख नयन दुख दारिद्र भाजे ।
धन्य धरा है अजुधाधाम की ॥ आरती-

राम वाम मिथिलेश किशोरी ।
बिन्दुललाट सिन्दूर की रोरी ॥
शीश मुकुट मुख रूप-भरोरी ।
वस्त्राभूषण पूज्य भाम की ॥ आरती-

अखिल लोकहु आनन्द दाता ।
धन सम्पत्ति के सदा प्रदाता ॥
चरण कमल में मैं बलि जाता ।
लीलाधारी वपु ललाम की ॥ आरती

मृग मद केशर अगर सुचन्दन ।
धूप दीप कपूर रु वन्दन ॥
करो आरती दशरथ नंदन ।
सुखी 'गेंद हरि आठो याम की ॥ आरती

सियाराम के पाद पदम में ।
है योछावर ...

प्रेमभक्ति युत, नहीं छद्म म।
वसो छवि हिय प्रात शाम की ॥ आरती

आरती सिंहासनासीन राम की

आरती सिंहासन स्थित राम की।
सुखदायक शोभा ललाम की ॥ टेर
गुरु वशिष्ठ मंगल पद गावें।
सादर बैठे वेद सुनावें ॥
जनक सुता वामाङ्ग सुहावे।
मंगल शोभा पूर्ण काम की ॥ आरती
चमर ढुलावें भरत शत्रुहन।
लखन सुमित्रा सुत आनन्दमन ॥
चरण दाब हनुमत है धन धन।
आरती गावे अंजुधा गाम की ॥ आरती
शीश मुकुट सित छत्र धरे है।
कानन कुंडल मणि निखरे हैं ॥
हीरक रत्नासन बिखरे हैं।
लज्जित शोभा इन्द्रधाम की ॥ आरती
मंगल तिलक लिये यव अंकुर।
सुन्दरी गावें मधुर मनोहर ॥
जय जय घोष भया सुर नर पुर।
त्रिभुवन टेरत गिरा राम की ॥ आरती
दुंदुभि नभ में देव बजाई।
सुर नर कुसुम चढ़ावत भाई ॥
चिर जीवो अविचल सुख दाई।
खुशी "हरि" हिय सभी याम की ॥ आरती
धूप दीप कपूर आरती।
फल नवद्य चढ़ाओ पा-रति ॥
आधि व्याधि कलि कलुष जारती।
दाता सुख सम्पत्ति सकाम की ॥ आरती

आरती मर्यादा पुरुषोत्तम राम की

ॐ जय पुरुषोत्तम राम।
पालक घर मर्यादा सब के पूरण काम ॥ टेर

कौशल्या दशरथ गृह जन्मे शिशु लीला चारी ।
विश्वा मित्र ऋषि संग की जग रख वारी ॥ जय

राक्षसी ताडका मारय मारी एक वाण मारीच ।
रावण के ढिगभेज्या जो था कपटी नीच ॥ जय

जनकपुरी पगुधार सबहि के नयन सफल कीन्हे ।
शंकर चाप चढाके दो खण्ड कर दीन्हे ॥ जय

वीरभूप रावण वाणासुर आदिक का अभिमान ।
जनक सभा में चूरण कीन्हा गये मलान ॥ जय

भेजी जनक पत्रिका दशरथ सीताराम विवाह ।
मुद मिथिला पुर अजुधा छाया अधिक उछाह ॥ जय

राज तिलक गुरु आज्ञा दशरथ करन राम चाया ।
विधि मुख कहा कैकेयी वन स्वराज्य पाया ॥ जय

वर्ष चतुर्दश वनमग चाले लक्ष्मण सीताराम ।
गंगातट ऋषि दर्शन पंचवटी में ठाम ॥ जय

काटे कान नास शूपनखा रावण सिया हरी ।
राम संग हनुमान के मित्त सुग्रीव करी ॥ जय

महावीर लंका को जारी सीता सुधिलाय ।
नलनील जलधिपुल बांध के हर्षाय ॥ जय

रावण कुंभकरण आदिक को मारे प्रभुवर राम ।
सीता लेकर अजुधा आये करुणा धाम ॥ जय

राम राज्य सुख शांति जग में खुशी घणी छाई ।
धूप दीप नैवेद्य से "हरि" आरती गाई ॥ जय

प्रेमपूर्ण प्रभुराम प्रार्थना जो जन नितगावे ।
सुख सम्पति घर मंगल यश नित लहरावे ॥ जय

हृदय कौमुदी गावत विकसी राम प्रभु राकेश ।
जय लीलाधर राम की जो सबके प्राणेश ॥ जय

आरती राधाकृष्ण की

प्रतिभा राधाकृष्ण अपार, जगनायक जय जगदाधार । टेर

राधामस्तक सिन्दुर रोरी, केशर चन्दन कृष्ण मुरारी ।
स्वर्ण मुकुट शोभित छबि जोरी, केशकान्ति पर जग बलिहार ॥ प्रति ०

मधुराकृति कुंडल आनन में, चमकत नासा मणि आनन में
गावत मुरली की तानन में, मंद हास्य दोउ परम उदार

आरती राधाजी आदि पटराणियो की आरती

जय जय रूक्मिणी जय जय राधा हरहु जगत भय दु ख अरु बाधा,
जय यदुनन्दन प्राण पियारी चरण कमल म वलिहारी ।
मजुकेश सिर मुकुट छबि है चमकत कान्ति किरण ज्यो रवि है ।
मस्तक रोरी सिन्दूर विराजे दर्शन से दुख दरिद्र भाजे ।
अलक भृकुटी मुस्कान अधर मे नासा मोती कमल सुकर मे,

कचुकी उर गल हीरक हारा कर्णा भूषण तेज अपारा ।
मजु नयन मुख प्रभा सुधाकर कर ककण कटि काची उजागर,
बाहु सुशोभित बाजू बद हैं कृष्ण रूप लख हसत म द हैं ।
चरणकमल मे पी मन मधुकर दर्शन रस नित प्रेम पेट भर,

धूप दीप कपूर थाल भर अरु नैवद्य कुसुम सज्जित कर ।
करो वेद्य हरि प्रेम आरती जो कलिकल्मष नित्य जारती,

आनद वधक सम्पत्ति दाता-भक्ति लक्ष्मी माता जो पाता ।
जय कालिन्दी ज सतभामा जावबती सह सबहि प्रणामा,
करत कलोल कृष्ण नितसगा सदा बहती मुद मोद तरगा ।
मानवी मानव मानस फूले ज्यो दूर्वा गगा जल कूले,
नमो रुक्मिणी राधा चरणे महहु कमल पद जा नितशरणे ।

श्री मद्भागवत रसायन की

श्री मदभागवत कृष्ण रसायन,
भक्ति मुक्ति देती अतिपावन । टेर

नान विराग भक्ति की प्यारी, मृत जीवन नारद सचारी,
भक्त गोकर्ण से धु धकारी, पाई सदगति प्रिय मनभावन ।

वद व्यास शुक नारद गाई, निगम कल्पतरु का फल भाई ।
शुक मुख अमृत द्रव सरसाई नित पीवो कलि अमर स दावन ।

भूप परिक्षित सुन शुक बानी मृत्यु भय की मन नही आनी
नित्य अजर अमरात्मा जानी आत्मज्ञान की ज्योति जगावन

धम ज्ञान आनद दान की, औषध भव भय हर बखान की ।
ममता मृत्यु ज म अज्ञान की, त्रिविध ताप कलिकलुष नशावन ।

धूप दीप कपूर सजाकर, फल नैवेद्य सदादर लाकर
हरिपूजा सुख की रत्नाकर, करो आरती घोर बधावन ।

(आरती श्री गीता जी की)

श्री भगवद् गीता की आरती, श्रेष्ठज्ञान की मधुर भारती। टेर
प्रवृति ज्ञान अर्जुन का दी हा, निवृत्ति ज्ञान ऋषि मुनि सुख कीन्हा॥
अन्तदर्शी सुधारस चीन्हा, उभयलोक व्यवहार भारती।
दैव असुर सम्पत्ति की वानी, कृष्णचन्द्र ने सरस बखानी॥
व्यासदेव से सजय जानी, कही भूप धृतराष्ट्र पा-रति"
कर्मयोग का द्विविध ज्ञान है,रागि विरागी का निधान है।
पालत जिनका सदाज्ञान है कलिकल्मष का नित्य टारती॥
विजय विभूति मुक्ति ज्ञानकी, त्याग सत्य भक्ति सोपान की।
देती दया करुना निधान की, तम अघ क्लेश विश्व का जारती॥
धूपदीप कपूर अलंकृत, फल नैवद्य सभक्ति भकृत।
"वैद्य हरि" श्री कृष्ण सुर्मानित, नीराजन मनदोष गारती॥

(प्रार्थना आरती बजरंग बली की)

हनुमान बली मन मन्दिर में नित आय के ज्योति जगा देना।
तेरा ही एक सहारा है संकट को दूर भगा देना॥ टेर॥
घर झंझट की आधि व्याधि मे नित हम फसते जाते है।
सदशिक्षा विद्या ब्रह्मचर्य देकर के धीर बंधा देना॥ हनु
तेज ओज बल सुमति मुझे दो नेहराम में नित नूतन॥
सीय शक्ति समेत सदा नित हो यही ध्यान मे वीर बिठा देना। हनु
बलशाली आपका नाम बडा संकट शक्ति कलियुग की लगी॥
मृत्यु से पहले महावीर संजीवन राम पिला देना। हनु
किये दर्शन तुलसी साधु ने रामधनी के तेरी कृपा।
वैद्य हरि में अर्णचय बल सुमति स्वस्थ बना देना॥ हनु
यह धूप दीप आरती मोदक सेवा मे अर्पण है स्वामी।
सजीवन पर्वत महागदा प्रिय वेष वीर दिखला देना॥ हनु

(हनुमत् स्तुति)

जय जय अंजनि सुत हनुमाना हरहु मोह मद मम अभिमाना॥
केशरी नन्दन वायुपियारे गिरिमैना कहि प्रेम प्रचारे॥
राम हृदय धीरज सीता के लखन शक्ति हरि, शेष निशाके॥
कर्नि गदा गिरी दृढतर धारे यातु धन रण झटहु मारे॥

अतिबल धाम स्वर्णवत देहा रामलखन सिय चरण सनेहा ।
ज्ञानी गुणी प्रिय दूतराम के दहन अगम अघनीच वाम के ॥
साधक कपि सुग्रीव ईश के मित्र बना हर दुख भीश्वर ।
अहिरावण बलि रामलखन की, काली बनी तब दनुज भक्षन की ॥
रामलखन कंधहु ले काली मारे दनुज पठी पाताली ॥
मोदक ते नत मस्तक 'हरि' है अजनि सुत मम जन्म सुधारि है ॥

आरती श्री हनुमानजी की

ॐ अजनी सुत जय हनुमत वीरा-दुःख दरिद्र और हरत पीरा । टेर
केशरी वीर ऋषि की सेवा, सुत मांगा सम मारुत देवा ।
राम सुग्रीव की मना सेवा, असुर पछारे महारण धीरा ॥
राम लखन जब वन पग धारा सीता हरण दुखित भू भारा ।
वानर पति सह मैत्री चारा बाली पछारा एक ही तीरा ॥
वदही खोजन में लागे गिरिवर पग धर लका भागे ।
मुंदरी धर सीता के आगे लंक दहन कर कूदे नीरा ॥
सीता सुधि चूडामणि लाय-अगणित वानर प्राण बचाय ।
राम सुग्रीवहु धीर बधाये-उपवन हुए भरित ज्यो कीरा ॥
लक्ष्मण को जब शक्ति लागी, वाणी सुषेण सजीवन मांगी ।
लाये राम कृपा से सुभागी प्राण बचाय सुवन समीरा ॥
भूत पिशाच व दुष्ट दलन के हरने हार पाप खलन के ।
अतुलय गुण ज्ञान चलन के ओज तेज सुमति बल धीरा ॥
राम सियारे परम पियारे, अहिरावण पाताल पछारे ।
सुरसा लंकिनी अक्षय मारे, रावण कुंभकरण मन भीरा ॥
जहु राघव जय वानर पति की, बार बार कही लखण जती की ।
कृपा पाई जय सीता पति की हृदय दिवस निशि प्रेम अधीरा ॥
धूप दीप कपूर सजाया, मीठा मोदक सदा चढाया ।
ध्वजा जनेउ गल पहनाया, केशर लाल लंगोट का चीरा ॥
'वद्य हरि' हिय मानस फूले लख मारुति उर पीत दुकूल
राम भक्ति हिय लता सुमूल चरण कमल में प्रेम गभीरा ॥

पवन सुत मंदिर आठवां मि

आरती श्री धन्वन्तरि भगवान की

जय श्री धवन्तरि आयुपति ।
दाता विश्व स्वास्थ्य अरु सन्मति ॥ टेर

अमृत कुम्भ कर ले अवतरिहैं, जन कल्याण मनुज तनुधरी हैं ।
वेद आयु पावन सुरसरि है, बहो भारत धारा अविरल गति ॥

रत्ना कर मथन से निकसे, जीवन बूटी कर मे विकसे ।
श्री वत्साक मणि तन हुलसे सौम्यानन तव पद हो मम रति ॥

शल्य शास्त्र अरु आयु प्रवतक, गति क्रियात्मक सदा विवधक ।
फिर आओ जय वैद्य मुनतक, कभी न हो वैद्यक की अवनति ॥

जिस ही देश का जो हो प्राणी, औषध हित कर वही बखानी ।
ऋषि चरक सुश्रुत की वानी, सबको देवो प्रभु विमलमति ॥

विघ्न हमारे ईश हटाओ, कायशल्य सब हम सिखाओ ।
भारत जन मन हिय मे आओ, शीघ्र हरो भिषजो की विपति ॥

भूत दयामन पर उपकारा, और रसायन सद आचारा ।
सच्ची पूजा हो ससारा, दो वरदान कभी न करू क्षति ॥

धूप दीप कर्पूर आरती, घर नैवेद्य सुगाई भारती ।
भिषग् जगत के कलुष जारती, 'वैद्य हरि जग जीव दु ख हति ॥

आरती श्री गोमाता की

जय जग पालक जय गोमाता सेवा अमृत जीवन पाता ।
तणखा उपजाती पचामृत ईख मधु पय और दधि घृत ॥

इह लोक परलोक स्वाथ सब, पाते है हम कलियुग में अब ।
यन विवाह रसायन सबही, गोरस से बनते है अब ही ॥

धम अथ अरु मोक्ष काम की सिद्धि श्री देती सब धाम की ।
क्षुधातुरा भी पय मा देती रोगी की व्याधि हर लेती ॥

भोली सीधी मातु हमारी, सब जीवो की प्राण पियारी ।
बछड़े इसके खेती करते, धाय सुधन से जग को भरते ॥

धेनु दह सब देव विराजे आन कन्हु दशन दु ख भाजे ।
उभय लोक मो तारन हारी कल्पतरु सम करत रुखारी ॥

धेनु दान री महिमा भारी, विष्णु लोक मे मुख्य सचारी ।
गोपालक श्री कृष्ण कहाये, चतुर्विंशति कला धराये ॥
मुक्ति परम पद देती माता भव सागर तारती ।

आयु सुमति आरोग्य प्रदाता सुर मानव सौभाग्य विधाता ॥
ओज तेज सुख मंगलकारी, वासुदेव की प्रिय कपिला री ।
दु ख दन्य दारिद्रय नशावनी, अखिल लोकप्रिय तारनी पावनी ॥
हिंदु यवन सभी सुख दाई दुग्ध मधुर सब प्यारती माई ।
'वैद्य हरि' पूजहु नित जननी आधि व्याधि प्राणी की हननी ॥
धूप दीप नवेद्य सजाओ, गोमाता की आरती गाओ ।
यदि जगत म चाहो जीवन, दो गु बार भर पट रु सीवन ॥
सुख आयु जग म तुम पाओ । गोवध रोको यश फैलाओ ।
गो सेवा क फल स फूलो एक गाय रखना ना भूलो ॥
गोलोक भवन नवा विश्राम

आरती श्री बद्रीनारायण भगवान की

जय बद्रीनारायण प्रभुवर शंख चक्र शोभित सुन्दर कर ।
गदा पद्म मणि मुकुट विराजे दर्शन से नित दारिद्र भागे ॥
मृगमद केशर तिलक भाल है गल सोहे वजन्ती माल है ।
कु डल कर्ण भृकुटि सु दर है कमल नयन मुख छविपद कर है ॥
ब्रह्मा शेष महेश रु शारदा धरत ध्यान गणपति मुनि नारद ।
वरुण च द्र अमरादिक दवा धूप दीप से करते सेवा ॥
सिद्ध मुनि जय जयति उचारे कमलाराणी चमर प्रचारे ।
किन्नर अपसर अरु गधर्वा जयति ईश गावत है सर्वा ॥
शीतल मारुत गगाधारा बहती हृषदा नित्य अपारा ।
मदिर शोभा कनक छवि है । राजत हिम काति अरु रवि है ॥
धूप दीप नैवेद्य अखडा पजहु लोकेश्वर ब्रह्माण्डा ।
'वैद्य हरि' नित चरण कमल म धरत माथ प्रिय रूप विमल म ॥
सुख सम्पति आनन्द के दाता बद्रीनाथ प्रभु कोमल गाता ।
विश्वम्भर रक्षक है जग के दीनदयालु दशक मग के ॥

सूय प्राथना

जय दिनेश त्रयी मूर्ति दिवाकर गहन निशापु अखिल प्रभाकर ।
अघतम हारिणी रश्मि सोहती छवि सप्त हय रथ अवरोहति ॥

अण्डाकार सुतेज विराजे किरणोत्थित जल घन नभ गाजे।
तेरी कृपा सुवर्णा भवति वसुधा पुष्पित फलती रहती॥

विधि हरि हर के हो तुम रूपा अखिल लोक भूपनि के भूपा।
ईश भक्ति हिय कमल प्रकाशा सुमतिको की की पूरी आशा॥

विश्वारोग्य के हो धन्वतरि लोक नयन हरु दरिद कृपा करि।
जग दु ख नाशक भवहि कल्पतरु मन मराल मम मान सरोवरु॥

विश्वम्भर प्रत्यक्ष सुदेवा सब ब्रह्माण्ड करहि तव सेवा।
सध्या प्रात 'हरि' कर जोरे खडा एक पग दर्शन तोरे॥

भगवती गगा स्तुति

जय कलि कल्मष नाशिनी गगा जग पावन तव बहती तरगा।
मकर वाहिनी पाप टारिणी जीव सजीवनी मृत उद्धारिणी॥

शान्तनु प्रिया जय जयतु सुरसरि हरहि अघज दु ख जेहि मनुज करि।
शकर जटा मध्य तव धारा, अखिल लोक यम नास उबारा॥

वामन चरण सुपावन सलिल निविध ताप हर प्राणिषु अखिल।
षष्ठि सहस सुत भूप सगर के तर भागीरथ कृपा डगर के॥

तव सलिले मज्जन जे करि है जन्म जन्म भव बाधा जरि है।
विमल अनूपा तव महिमा है कलि गुण गौरव युत गरिमा है॥

मजु रूप राकेश उजारी कुमति निशा की रम्य प्रजागरी।
पावन पयसि 'वैद्य हरि' तोरे तारहु विनती करत कर जोरे॥

आरती श्री भगवती गगा जी की

ॐ जय गगा माता।
कलिमलकल्मषनाशिनी तू जग की माता॥ ॐ

मृत्यु लोक म भक्त भागीरथ गगा ना आगी।
पुत्र सगर के तारे भा महिमा भारी॥

अट्टहास भावन पद स निकसी शकर शाश।
भागीरथ नृप प्रार्थना थामी श्री गिर ईश॥

पावन तव जन गुण गुण गा पाप्हन तारे।
जीवनी गा सद्गति हाथ जन प्यारे॥

मन की यान मिट जन का ति हरि के द्वार।
जन महिमा जर कन्त नन्दन जन नव्तर॥

त्रिभुवन तारिणी पूज्य सुरेश्वरी महामोद कारी।
शान्तनु की महारानी भीष्म की महतारी॥

गिरि तनया तू विश्व विनादिनो विश्वभरी माता।
पालन पोषण जल स सुख मगलदाता॥

अमृत धारणि सब दु ख टारणी नाशिना मोहसदा।
वासिनो अमर लोक की देती मोक्ष मुदा॥

अन्तकाल जन भस्मीभूत हो गिरत तव धारा।
जीवित मृत उद्धरतो यश अपरम्पारा॥

ले घन सार ग घ दीपक स अरु फूलन माला।
भक्ति प्रेम नवेद्य से गल भषण डाला॥

मकर वाहिनी श्रीगगा की विनय स्तुति गाई।
'वद्य हरि' कर वाये नित हिय हर्षाई॥

आरती भगवती यमुनाजी की

जय रवि तनया यमुना माता पाप नाशिनी श्यामल गाता।
व्रज मडल देहली निवासनी पावन रूप द्वारिका भासिनी॥

कलिकल्मष मज्जन से टारिणी।
दु ख द य भव बाधा हारिणी॥
मजुल निमल तव जल भाता।
सुख समृद्धि आनन्द की दाता॥

जय कालिन्दी मोक्ष प्रदाता तव सवा प्रभु पद मन भाता।
भस्मीभूत गिरे तव धारा बडभागी पर लोक सुधारा॥

धूप दीप कपूर आरती।
दान सुफल नवद्य भारती॥
पुष्पाञ्जली तव पाद सरोवर।
'हरि' नमत नित सुभग मनोहर॥

कृष्ण जन्म थली भाग्यशालिनी जीवात्मा हस की मुक्तामनी।

भोग आरती (मानस या प्रत्यक्ष)

राधा गोविन्द (नित)भोग लगायो। राम रमापति म चित लायो।
माखन मिश्री द्राक्षा मेवा। मोदक षट रस करो क्लेवा॥
पचामृत प्रभु प्रेम से लायो। पीवो विश्वपति मम मन भायो।

नित प्रसन्न प्रभु भोजन कीजे। शेष प्रसाद दास को दीजे।
ले गंगाजल कूप मधुरी। प्याई हरि रस सदा हृप भरी॥
भोग आरती विश्वश्वरी की। सहित पूज्य श्री विश्वश्वर की।
भक्त वत्सल प्रभु सदा हमारे। नर नारी क सब दु ख टारे॥
मानस या प्रत्यक्ष भोग की। बाधाटारिनी सभी रोग की।
धूप दीप कपूर आरती। पुष्प फलिनी नवैद्य पा-रति।
प्रेम सहित 'हरि जो नित गाव। ताके घर सब मगल छावे॥

दोहा

राम-कृष्ण शिव नाम की महिमा हिय मन धार।
रमनर तू गाती रहे। यही जीव का सार॥

कीर्तन

श्री विष्णु-शिव-रमा-पार्वती, राम-कृष्ण सीता राधा रति।
विष्णु-लक्ष्मी-श्री शिव-पार्वती, सीता राम राधा कृष्ण पति॥

राम ही एक सहारा है

सुतमित दारा वैद्य-इन्दिरा'करते सदा भलाई हैं।
सब उपाय कर अफलित होत हिय मन काई छाई है॥
कर्म देह जनित जीवा की आधि व्याधि हुलसाई है।
निरा धार सब जग के प्राणी एक ही राम सहाई है॥

नख शिख श्याम मधुर दिखलात हैं।

मधुर नयन मुख-नासा-मधुरा वाणी मधुरा श्याम किशोर।
मधुर कपोल मधुर गडस्थल चिबुक मधुर है नित चितचोर॥
मस्तक मुकुट ललाट मधुर है भृकुटि मोहिनी प्रिय हित मोर।
ग्रीवा कठ मधुर वक्षस्थल स्कन्ध माधुरी लख कर जोर॥
मधुर हार नाभि स्तन सुष्ठु बनी उदर की सुन्दर रेख।
कटि पीताम्बर हसनि मधुर है चाल माधुरी रम्य सुभेख॥
चशी मधुरा टढी ठहरनिबाकी देखनि से रहे देख।
'हरि' न्याछावर श्याम माधुरी राधा कृष्ण सहित है लेख॥

आरती भगवती तुलसी महारानी की

विष्णु प्रिया तुलसी की आरती-रोग दुःख दारिद्रय ..
कार्तिक मास पूजने वाली, हरि प्रिया सब मिलके

श्री परमात्मने नम

पूज्य गणेशादि समस्त देवताओं की प्रार्थना आत्म कल्याण के लिए

गणेश प्राथना

ॐ गजानन भूत गणादि सेवित ।
कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम् ।
उमासुत शोक विनाश कारक ॥
नमामि विघ्नेश्वर पाद पकजम् ।

श्री विष्णु भगवान की प्रार्थना भगवत् गीता

शान्ताकार भुजग शयन पद्मनाभ सुरेश
विश्वाधार गगन सदृश मेघ वर्ण शुभागम् ॥
लक्ष्मीकान्त कमल नयन योगिभिर्ध्यानगम्य ॥
वन्द विष्णु भवभयहर सर्व लोकैकनाथम् ॥

श्रीशकर भगवान प्राथना तुलसी कृत रामायण

यस्याङ्के च विभाति भूधर सुता देवापगा मस्तके ।
भाले बाल विधुर्गले च गरल यस्योरसि व्यालराट ।
सोऽय भूति विभूषण सुरवर सर्वाधिप सर्वदा
शर्व सर्वगत शिव शशिनिभ श्रीशकर पातुमाम ॥

श्री जगदम्बा प्राथना दुर्गासप्तशती

सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥
शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे ॥
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥

श्री कृष्णप्राथना भगवद गीता–श्रीमद्भागवत

वसुदेव सुत देव कस चाणूर मर्दनम् देवकी परमान द कृष्ण व दे जगद्गुरुम्
त्वमादिदेव पुरुषपुराण स्त्वमस्य विश्वस्य पर निधानम ।
वेत्तासि वेद्य च पर च धाम त्वया तत विश्वमनन्त रूप ॥
यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ॥
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीति र्मतिमम ।
नमो भगवते तुभ्य वासुदेवाय विष्णव
पुरुषायादि बीजाय पूर्ण बोधाय ते नम ॥



श्री जगदम्बा करणी माता की जय

श्री बीकानेर राज्य के परम प्रतापी-यशस्वी महाराजा श्री गंगासिंह जी साहब बहादुर काल का वंश प्रशंसा परिचयएवं वर्णन

भारत बीकानेर राज्य में गंगासिंह भूपति कहलाये।
देवी के थे परम भक्त वे तेज शौर्य प्रतिभा मुखछाये ॥
वर्ष पचास राज्य कर उत्तम स्वर्ण जयंति उत्सव भाये।
इसी राज्य में रतन नगर के वैद्य हरि ने हरि गुण गाये ॥
बहुत शताधिक विप्रशामते जूनागढ़ शिववाडी आये।
शुद्ध वस्त्र भोजन व दक्षिणा लेकर सदा हिय हर्षाये ॥
आशीर्वाद ईश दुर्गा का करणी माता भक्त कहाये।
तुरत बुद्धि तेजस्वी प्रतिभा विप्र भक्त महामहिमा छाये ॥
अपने राज्य में गंगनहर ला साधक गंगासिंह कहाये।
सुखी राज्य सब प्रजाजनो से नितनित नयनन आदर पाये ॥
न्याय करन में प्रथम यशस्वी बड़े बड़े न्यायालय जाये।
न्याय धर्म दृढ शासन पटु थे गौर वर्ण आभा लपटाये ॥
शार्दूलसिंह हुए तिनके सुत स्वतन्त्र भारत में गुणगाये।
तिनके आत्मज करणी सिंह ने शाय शक्ति के गुणमनभाये।
गंगासिंह के शौर्य तेज में अमर यशस्वी यश फैलाये ॥
गंग नहर की सदा अमरता जन गुण युग युग गाने आये।
स्वतन्त्र भारत बीकानेर के करणीसिंह भूपति मन भाये ॥
शासन पटुता इश्यवचिता जन सेवा में चित्त लगाये।
सदा विजय की ध्वज फहराके निरत दम्म्यों जन ...
"वैद्य हरि" यह प्रजा प्रेम का हृदय निग्म निर्म ...

श्री शिवशरणम्

लखक परिचय

गौड वसिष्ठ के वश म ब्राह्मण चन्द्र किशोर चुलेट कहायो ।
डूगरराम हुए तिनके सुत सहित जनक शिव प्रेम सुहायो ।।
उनके सुत सुधी रामलाल न शकर अच्युत पद चित लायो ।
वद्य हरिता क आत्मज हो विश्वपति का प्रिय गुण गायो ।।
द्वि सहस्र उत्तर एकादश सम्वत-दिनकर वासर आयो ।
चत शुद्धि हनुमान जनम दिन प्यारी पूर्णिमा दिन भायो ।।
राम-कृष्ण-रति-दाता-आरती लिखक हप घणोमन भाया ।
हरि आनन्द अमर नित वधक हिय म नव नव सदा सवाया ।।
वैद्य हरि के रामलाल पितु प्रिय वादिनी भार्या-रति है ।
पुत्र सुशील श्री कृष्णदत्त है जिनकी स्तुति आज्ञा मति है ।।
सुत रमेश लघु पुत्री शारदा प्रेम चरण पद कमलापति है ।
औरहु की नही जानत हरि तो हम सबकी प्रभु चरण गति है ।।
राम-कृष्ण-रति-दाता-आरती-पिता पुत्र पत्नी स्मृति है ।
अनुराग सदा चरणन निशिदिन हि ईश्वर मूरति हिय विलसति है ।।
बडे भाग्य प्रभु कृपा घनेरी से ही मिलती परम प्रीति है ।
वैद्य हरि बलिहारी शिव पद रज वर दृग धन्य आकृति है ।।

भारत बीकानेर म गाव है रतन नगर !
शशव से हरि विप्रके पाद प्रेम हरि हर ।।
सर्वेऽपि सुखिन सन्तु सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु ख माप्नुयात ।।
शाति शाति शुभ शाति भवतु

मिति फाल्गुन कृष्ण 12
शनिवार स 2038

प-हरिप्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य
रतन नगर बीकानेर वास्तव्य
अधुना श्री गगानगर (राजस्थान)

श्री विश्वश्वरी भवन एकादश विश्राम
श्री कृष्णार्पण मस्तु

9680

सम्पूर्ण